विश्व विख्यात भविष्य वक्ता



कीरो-हस्तरेखाएँ



कीरो हस्तरेखाएं

अनुवादक
प्रकाश नगायच

डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2,
नयी दिल्ली-110 020

प्रकाशक :
डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा. लि.
X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया फेज़-2
नयी दिल्ली-110020
फोन: 6841033, फेक्स-4610574

वितरक :
पंजाबी पुस्तक भंडार
दरीबा कलां, दिल्ली-110006
फोन: 3266232, 3266317

मूल्य : बीस रुपये

संस्करण : 1994

मुद्रक : संजय प्रिंटर्स, दिल्ली

CHEIRO HAST REKHAYEN : CHEIRO : Rs.20/-

अनुक्रमणिका

दूसरा खंड

तीसरा खंड

चौथा खंड

पांचवां खंड

प्राक्कथन

किसी बात या वस्तु के सम्बन्ध में तभी विश्वास होता है जब उसे अन्र्तात्मा द्वारा देख या समझ लिया जाए। दो वर्ग हैं–आस्तिक और नास्तिक। दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। मानव समाज की वास्तविकता या सत्य की अथार्थता को प्रमाणित करने के लिए दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

अपनी इस पुस्तक को जनता के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अपने उत्तरदायित्व के साथ-साथ इस बात का भी पूरा-पूरा अहसास है कि इसके अध्ययन से पाठकों को लाभ होगा, समाज का हित होगा। मैंने किसी वर्ग विशेष को ध्यान में रख कर इस पुस्तक की रचना नहीं की बल्कि यह उन सभी लोगों के लिए है जो मानव जीवन के नियामक प्राकृतिक नियमों को मानते हैं। और जिनका दिशा निर्देशन हाथ के अध्ययन से होता है।

एक अणु भी अपने अस्तित्व के महत्व में पूर्ण होता है। इसलिए किसी भी वस्तु या विषय को छोटा समझकर अध्ययन के अयोग्य समझना उचित नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति यह धारणा बना ले कि हस्त विज्ञान विचरणीय विषय नहीं तो यह उसका कोरा भ्रम मात्र है। क्योंकि अनेक बड़ी-बड़ी अतयन्त महत्वपूर्ण सच्चाइयां और वास्तविकताएँ जिन्हें कभी नगण्य समझा जाता था वे अब असीमित शक्ति का साधन बन गई हैं। ऐसे लोगों से मेरा अनुरोध है कि हस्त विज्ञान रूपी अणु का विश्लेषण करके तो देखें। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि उनकी मेहनत बेकार नहीं जाएगी। अध्ययन स्वयं ही अपनी सच्चाई प्रमाणित कर देगा।

हस्त विज्ञान के पक्ष में मैंने आयु विज्ञान और विज्ञान से सम्बन्धित अनेक तत्यों को एकत्र करने का प्रयास किया है। जिन्हें मैं आगे चलकर पाठकों के सामने प्रस्तुत करुंगा। इन तथ्यों से स्पष्ट हो जाएगा कि मनुष्य के हाथ-एक विधान का अनुसरण करते हैं। इसलिए जो प्रभाव उस विधान पर पड़ता है वही हाथों में दिखाई देता है। इस विज्ञान से सम्बन्धित जिन ख्याति प्राप्त विद्वानों के दिमाग और हाथ के सम्बन्धित होने के बारे में जो धारणायें बनाई हैं और जो विचार व्यक्त किये हैं उन्हें मैंने स्वीकार किया है। जो लोग हस्त विज्ञान पर विश्वास नहीं करतें उन्हें मैं बता देना चाहता हूँ कि हस्त विज्ञान के अध्ययन में और उसे विकसित करने में यूनान के अनेक दार्शनिकों और वर्तमान काल के वैज्ञानिकों ने भी इस ओर ध्यान दिया है। दिलचस्पी ली है।

जब हम मनुष्य के मस्तिष्क की क्रियाशीलता और उसके पूरे शरीर पर उसके प्रभाव के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो हमें यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होता कि जिन वैज्ञानिकों ने पहले यह प्रमाणित किया था कि मानव मस्तिष्क और उसके हाथों के बीच जितने भी स्नायु हैं उतने शारीरिक व्यवस्था में और कहीं भी नहीं हैं। मस्तिष्क तब तक कुछ भी नहीं सोच सकता जब तक कि हम हाथों से अनुभव न करें। जब भी मस्तिष्क में कोई विचार उत्पन्न होता है तो उससे पहले हमारे हाथ को उसकी अनुभूति हो जाती है। आज के वैज्ञानिकों ने अपनी खोज के आधार पर इस बात को प्रमाणित कर दिया है। यदि हम केवल इसी दृष्टिकोण से हस्त विज्ञान को देखें तो उसकी सच्चाई असंगत दिखाई नहीं देती।

इस पुस्तक में हमने कुछ विख्यात व्यक्तियों के हाथों की छाप प्रस्तुत की है। हमारा अनुमान है कि पाठक उन के जीवन इतिहास से परिचित होंगे। इससे विभिन्न व्यक्तियों के स्वभाव के सम्बन्ध में पाठकों को पता चल जाएगा। हम एक दृष्टि में यह दिखाना चाहते हैं कि भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वभाव, संस्कार, प्रकृति और मानसिक स्थिति के व्यक्तियों के हाथों में कितना अन्तर होता है। मैं जिस उद्देश्य से इस पुस्तक को प्रस्तुत कर रहा हूँ, उस उद्देश्य को ध्यान में रखकर हाथों का विवेचन भी करुंगा। हस्त विज्ञान के छात्र यदि स्वयं भी ऐसा ही करेंगे तो उन्हें निश्चित रूप से लाभ पहुंचेगा।

इस पुस्तक में मैंने जिन व्यक्तियों या समुदायों का उल्लेख किया हैं, मैं उन्हें, या उनकी भावनाओं को उपने किसी तर्क या अभिव्यक्ति से ठेस नहीं पहुंचाना चाहता। इस बात की मेरी परिकल्पना से जितनी दूरी है, अन्य किसी बात की नहीं है। मैंने अपने-अपने विचारों की स्वाधीनता और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अधिकारों का उपयोग अवश्य किया है। यदि किसी को ऐसा लगे कि मेरे किसी कथन से किसी समुदाय विशेष, किसी के विश्वास या समाज की भावनाओं को किसी प्रकार का आघात पहुंच रहा है तो मैं निस्संकोच स्वेच्छा से अपने उन कथनों का दायित्व लेता हूँ लेकिन इसके साथ अपने ऊपर दोषारोपण करने वालो से मेरा इतना अनुरोध अवश्य है कि यदि उनकी अन्तरात्मा के कटघरे में मेरी उक्तियां निन्दा और अपराध के योग्य प्रमाणमित होती हैं तो इसमें आरोप केवल मेरे सिर ही मढ़ें जायें न कि इस विज्ञान के प्रति जिसे वे निन्दा के योग्य समझते हैं। मेरा ध्येय इस विज्ञान को निन्दनीय बनाना नहीं बल्कि इसे हमेशा ऊँचा उठाना ही रहा है।

–कीरो

कीरो के तर्क : हस्त विज्ञान के पक्ष में

मेरा अंनुभव है कि हस्तरेखा विज्ञान का कार्य करने वाले व्यक्ति केवल सम्भावनाओं का ही प्रदर्शन करते हैं। क्योंकि उन्हें इस विज्ञान की पर्याप्त जानकारी नहीं होती। हो सकता है उनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे भी हों जिनमें इस विज्ञान के प्रति विश्वास की भावना विद्यमान हो। लेकिन अधिकांश लोग इस विज्ञान की सच्चाई पर ध्यान ही नहीं देते।

हमारे संसार में अनेक आश्चर्यजनक सच्चाइयां हैं। सोने पर कितनी भी धूल क्यों न जम जाए फिर भी वह सोना ही रहता है। शताब्दियों के काल चक्र ने इस विज्ञान पर धूल जमा दी थी। लेकिन मानव के विवेक ने उसे फिर खोज निकाला। हमारा वर्तमान विज्ञान ऐसा ही है जैसा बिना अध्यापक का छात्र या फिर अंधेरे में भागता हुआ बालक। जिसे जो भी वस्तु मिल जाए उसी को देखकर हैरान रह जाए। लेकिन उसकी हैरानी उसी समय तक रहती है जिस समय तक उसे प्रकाश नहीं मिलता कि उसे एक ऐसा पुरातन अमूल्य सिक्का मिल गया है जो उसके जन्म लेने से वर्षों पूर्व प्रचलित था।

यही स्थिति हस्तरेखा विज्ञान की है। शताब्दियों की धूल ने उसे अपने आप में छिपा लिया था। लेकिन सच्चाइयों ने शताब्दियों की जमी उस धूल को हटा दिया है। उन्हें इस विज्ञान की सच्चाई पर विश्वास होने लगा है। यह प्रमाणित हो गया है कि हाथ की रेखाएं एक ऐसा अमिट सत्य है जो व्यक्ति के जीवन और उसकी प्रकृति को स्पष्ट रूप से प्रगट कर देता है।

आज के भौतिकवादी युग में जो लोग इस विज्ञान की सच्चाई के प्रभाव जानना चाहते हैं उन्हें यह याद रखना चाहिए कि हमें यह विज्ञान शताब्दियों पूर्व हिन्दू ब्राह्मणों और पुरातन विचारकों से प्राप्त हुआ था और वह विज्ञान आज के युग में भी एक अभिष्ट सत्य है।

जिन कार्यों, कलाओं और विज्ञान का उद्देश्य आरम्भ से ही मानवजाति के उत्थान, विकास और सुधार करना होता है, उन कार्यों, कलाओं और उन खोजों को मान्यता और प्रोत्साहन हर स्थिति में मिलना ही चाहिए।

मानव प्रकृति के अध्ययन विश्लेषण और परीक्षण करने के जितने भी क्षेत्र हैं उनमें सर्वाधिक महत्व मानव के हाथ को मिलना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के हाथ को देखकर केवल यही नहीं जाना जा सकता कि उसके जीवन में क्या अभाव और दोष हैं, बल्कि उन अभावों और दोषों को दूर करने के उपाय भी जाने जा सकते हैं। वास्तव में व्यक्ति का हाथ

उसके आचरण की उस बन्द अल्मारी की चाबी है जिसके भीतर प्रकृति ने न केवल उसके दैनिक-जीवन को प्रेरणा देने वाली शक्तियों को, बल्कि उसकी आन्तरिक क्षमताओं, गुणों और विभिन्न कार्य कर पाने की शक्तियों को छिपा रखा है। हम इन शक्तियों और गुणों को जान-पहचान कर उनका उपयोग अपने जीवन को सफल बनाने में कर सकते हैं।

मेरा अनुभव है कि लोग हस्तरेखा विज्ञान को कल्पना की उड़ान या अनुमान समझते हैं। लेकिन वे इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अधिकांश मानव जाति इस विज्ञान पर विश्वास करती है। क्योंकि उसका सीधा प्रभाव उनके जीवन और विचारों पर पड़ता है।

मानव जाति में कदाचित ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो अपने अतीत का भलीभांति अध्ययन करने के बाद यह अनुभव न करता हो कि उसके विकसित जीवन के कितने वर्ष या जीवन का कितना बड़ा भाग उसकी अपनी और उसके माता पिता की अनभिज्ञता के कारण बेकार ही बीत चुके हैं।

हमारे मनीषि पूर्वजों का कथन है–स्वयं को पहचानो। उनका मत मूलमंत्र अत्यधिक अर्थपूर्ण है। इसे सदैव याद रखना चाहिए। हम प्रकृति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करके उसके महत्व और अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। इसलिए हमें उस अध्ययन और पठन पर विचार करना चाहिएं जो इस सम्बन्ध में हमारे ज्ञान में अधिक से अधिक वृद्धि कर सके। अपने सम्बन्ध में पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही हम स्वयं को नियंत्रित करने में सक्षम और समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अपनी उन्नति करके मानव जाति की उन्नति कर सकेंगे।

हस्त विज्ञान का सीधा सम्बन्ध है स्वयं को पहचानने से है। इस विज्ञान की उत्पत्ति पर विचार करने के लिए हमें विश्व-इतिहास के प्रारम्भिक काल में लौटना होगा आदिकाल के पूर्वजों का स्मरण करना होगा, जिन्होंने विश्व के महान साम्राज्यों, सभ्यताओं, जातियों और राजवंशों के विनष्ट हो जाने के बाद भी अपने इस ज्ञान भंडार को सुरक्षित रखा। आज भी वे उस विशिष्टता से परिपूर्ण हैं, उसी तरह जिस तरह मानव इतिहास के प्रारम्भिक पृष्ठों के लिखे जाते समय थे। हमारा संकेत पूर्वी देशों के निवासी उन आर्य विद्वानों की ओर है जिनमें दर्शन और विशिष्ट ज्ञान को आज पुनः मान्यता देने का सिलसिला शुरू हो गया है। विश्व-इतिहास के प्रारम्भिक काल का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होगा कि भाषा से सम्बन्धित सामग्री इन्हीं मनीषियों की धरोहर थी। सभ्यता के उस आदिकाल का मानव इतिहास में आर्य सभ्यता के नाम से पुकारा जाता है। इतिहास से परे जाना हमारे लिए संभव नहीं है। लेकिन भारतीय प्राक ऐतिहासिक भवनों के खंडहर और गुफाओं में बने मन्दिर पुरातत्व वेत्ताओं की खोज की अनुसार इतने प्राचीन हैं कि इतिहास भी उनके निर्माण काल को बता पाने में असमर्थ है।

हस्त विज्ञान के ज्ञान की उत्पत्ति की जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें प्राग्-ऐतिहा-

सिक काल की ओर लौटना होगा। आदिकालीन इतिहास से पता चलता है कि आर्य सभ्यता के पुरातन काल में आर्यों की अपनी भाषा भी अपना साहित्य था। इस बात का प्रभाव हमें उन खंडहरों से मिलना है जो कहीं-कहीं कभी-कभी दिखाई दे जाते हैं।

जिन मनीषियों ने हस्त विज्ञान की खोज की, उसे समझा और उसे व्यवहारिक रूप दिया, उनके बारे में हम जानते हैं। उनकी विद्वता के अनेक ठोस प्रमाण आज भी मौजूद हैं। भारत के ऐतिहासिक युग के स्मारक हमें बताते हैं कि रोम और यूनान की स्थापना से वर्षों पूर्व इस देश के मनीषियों ने ज्ञान का इतना मूल्य भंडार एकत्र कर लिया था। भारत के प्राचीन मंदिरों में खगोल शास्त्र की जो गणनाएं प्रयोग में आई हैं उनके अनुसार भारतीय विद्वानों को विषुवत रेखा से सूर्य के आने-जाने का ज्ञान ईसा के जन्म से शताब्दियों पूर्व से प्राप्त था। भारत की कुछ गुफाओं में बने प्रागेतिहासिक काल के मंदिरों में कुछ नरसिंही आकृति की मूर्तियां पाई जाती हैं। यह रहस्यपूर्ण आकृतियां इस बात की मूक साक्षी हैं कि यह ज्ञान इस देश के निवासियों को शताब्दियों पहले से प्राप्त था जो शताब्दियों बाद अपनी ज्ञान और विज्ञान की खोजों तथा उपलब्धियों के लिए विख्यात हुए। इन्हीं विद्वानों में हस्त विज्ञान के जन्मदाता भी थे उन्हीं के बनाए हुए सिद्धांत अन्य देशों में पहुंचे अभी तक जितने भी प्राचीन ग्रंथ पाये गये हैं 'वेद' सबसे पुराने धर्म ग्रंथ हैं और ये वेद ही यूनानी सभ्यता और ज्ञान के मूल स्रोत थे इसके अनेक ठोस प्रमाण मिलते हैं।

जब हमारे सामने इतने ठोस तथ्य मौजूद हैं तो हमें इस विज्ञान के जन्मदाता देवपुरुष और मनीषी को समुचित आदर और सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए। उनके अध्ययन और विवेचन के साथ पूरा-पूरा न्याय करना चाहिए उन भारतीय मनीषियों के ज्ञान के आगे हमें अपना ज्ञान–महानतम ज्ञान भी बोना दिखाई देता है और हमारी बुद्धि एक बचकाने शून्य में विलीन हो जाती है यह सच है कि हमारा यह युग नवजात शिशु का लपेट पाने वाले वस्त्र से अधिक कुछ नहीं। काल की नित्यता की बाहों में हमारी मानवता एक शिशु के समान है।

इस विज्ञान के ठोस और पर्याप्त आधार का दिग्दर्शन कराने के अपने प्रमाण हैं पाठकों से मेरा केवल इतना ही अनुरोध है कि हस्तरेखा विज्ञान का समर्थन करने वाले इन पृष्ठों से गुजरते हुए यदि वे चाहें तो अपने सम्पूर्ण जिज्ञासा के साथ चलें। किन्तु उस जिज्ञासा में धैर्य और सामान्य ज्ञान का होना आवश्यक है। इसलिए मैं स्वयं इस क्षेत्र में एक जिज्ञासु बनकर ही विचरण करुंगा न कि इस विज्ञान का पक्षधर बनकर। तर्क-वितर्क छोड़कर मैं इस विज्ञान के अध्ययन का इतिहास प्रस्तुत कर रहा हूँ और ऐसा करते हुए मैं संतोष अनुभव कर रहा हूँ कि इस पुस्तक से उन लोगों को बुद्धि संगत तर्क और सामान्य ज्ञान की पूरी-पूरी जानकारी मिलती चलेगी जो किसी भी धारणा से मेरे इस अध्ययन की जांच-परख करना चाहते होंगे।

इतिहास साक्षी है कि पुरातन भारतीय मनीषियों के पास अपनी भाषा थी अपना साहित्य था। आज भी इस साहित्य के जो अंश प्राप्त हैं उनके आधार पर हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि आज भी उनका असीमित गुप्त ज्ञान भरा पड़ा है। पुरातनता की इस अंधकारपूर्ण रात्रि में हम कोई साहसिक कदम उठाने का साहस नहीं कर सकते। क्योंकि हमारे सामने न तो दिशा निर्देश करने वाले नक्षत्र हैं और न अस्त होते चन्द्रमा की ओर से हमें कुछ प्रकाश ही प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार हम ज्ञान की सीमाओं पर खड़े अज्ञान के अंधकार में टकटकी बांधे देख रहें हैं, इसी छाये हुए अन्धकार में हमें किसी भीमकाय मानव की अस्थियां अथवा किसी प्रागेतिहासिक काल के स्मारक के अवशेष दिखाई दे जाते हैं। ये काल की बालू पर उगे उन पोधों के समान दिखाई देते हैं जो हमें हमारे युग से भी पुराने युग का परिचय देते हैं, हमारी जाति से भी पहले की जाति के सम्बन्ध में बताते हैं। जो उस सभ्यता और संस्कृति के बारे में बताते हैं जो अतीत के महासागर में गुम हो चुकी है।

भारतीय मंदिरों में प्राप्त खगोल शास्त्र के प्रमाणों को देखकर स्पष्ट हो जाता है कि शताब्दियों पूर्व भारतीय विद्वानों को इस बात का पर्याप्त ज्ञान था कि सौर मार्ग पर एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने में सूर्य को कम से कम 2140 वर्ष लगते रहे होंगे। उन्हें विषुवत रेखा के माध्यम से दिन और रात की समानता तथा परिवर्तन का ज्ञान था। लेकिन जब से परिवर्तनों का ज्ञान उन्हें प्राप्त हुआ होगा हम यह अनुमान नहीं लगा सकते कि उस काल को व्यतीत हुए कितनी शताब्दियां बीत चुकी हैं।

हस्तरेखा विज्ञान के मूल बिन्दुओं को जांचते-परखते समय हमें प्रतीत होने लगता है कि हाथों की रेखाओं का यह विज्ञान विश्व के पुरातनतम विज्ञानों में से एक है। इतिहास साक्षी है कि भारत की उत्तर-पश्चिमी प्रांतों के जोशी नामक जाति न जाने किस काल से हस्तरेखा विज्ञान को व्यवहार में लाती रही है। अनुसरण और सदुपयोग करती रही है।

मेरे भारत प्रवास के समय की एक दिलचस्प घटना है—मुझे एक अत्यंत प्राचीन और अत्यधिक दिलचस्प पुस्तक का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का विषय हाथ के चिन्हों का अध्ययन था। यह पुस्तक उन ब्राह्मणों की अमूल्य निधि थी जो उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी, जिसे अपने पास रखने का पूरा-पूरा अधिकार प्राप्त था। इस ग्रंथ को वे ही पढ़ और समझ सकते थे। इस ग्रंथ की बड़ी सावधानी से रक्षा की जाती थी। यह ग्रंथ भारत के अत्यधिक पुरातन मुद्रा गुंहा मंदिर में रखा जाता था जो खंडहर बन चुका था।

इस ग्रंथ की रचना मनुष्य की चमड़ी को काट छांटकर और जोड़-जोड़कर बनाए गए पत्रों पर की गई थी। ग्रंथ का आधार विशाल था। इस ग्रंथ में अनेकों सुन्दर रेखांकन थे। उनमें इस बात का पूरा लेखा-जोखा अंकित किया गया था कि कौन सा चिन्ह कब, कहाँ और कैसे प्रामाणिक सिद्ध हुआ था।

इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विषमता यह थी कि इसकी रचना लाल रंग के किसी ऐसे तरल पदार्थ से की गई थी कि काल-चक्र उसे धुंधला नहीं पाया था न विकृत ही कर पाया था। हल्के पीले रंग की मानव चमड़ी के बने पन्नों पर इस चमकीले लाल रंग से लिखे अक्षरों का प्रभाव अदभुत था। यह रसायन निश्चित ही किन्हीं जड़ी बूटियों से तैयार किया गया होगा। हर पन्ने को इस तरह चमकदार बना दिया गया था जैसे उस पर वार्निश की गई हो। जो भी रसायन रहा हो उसमें काल को पराजित करने की शक्ति-सामर्थ्य थी। जहां तक इस रचना काल की पुरातनता का प्रश्न है, किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं थी। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि इस ग्रंथ की रचना तीन खंडों या तीन अलग-अलग समय में हुई होगी। इस ग्रंथ का पहला खंड प्राचीन भाषा से सम्बन्धित था। इतनी प्राचीन भाषा जिसे पढ़ने और अर्थ समझ पाने में उन इने-गिने ब्राह्मणों को कठिनाई हो रही थी जिनके पास इस ग्रंथ के स्वामित्व का अधिकार है। भारत में ऐसे बहुमूल्य खजानों की कमी नहीं है लेकिन ब्राह्मण इन खजानों की बहुत ही यत्नपूर्वक रक्षा करते हैं। क्या इन प्राचीन साक्ष्यों को, धन, कला, शक्ति या सत्ता कभी उजागर कर पायेगी।

इस विचित्र ब्राह्मण जाति का यह ज्ञान धरती पर दूर-दूर तक जैसे-जैसे फैलता गया विदेशों में हस्तरेखा विज्ञान के नियम और सिद्धांत फैलते चले गए लोग उन्हें अपनाने लगे। जिस प्रकार किसी जाति में जन्मने पनपने वाले धर्म के लिए उसी जाति की परिस्थितियां अनुकूल सिद्ध होती हैं, कुछ इसी प्रकार हस्तरेखा विज्ञान भी अलग-अलग बट जाने के बाद भी प्राचीनतम साक्ष्य वे ही हैं जो हमें हिन्दुओं-ब्राह्मणों के पास मिलते हैं। इस विज्ञान की इस देश से विभिन्न देशों की यात्रा की पगडन्डी को पहचान पाना अत्यन्त कठिन है।

अत्यन्त प्राचीन युग में इस विज्ञान का प्रचलन चीन, तिब्बत, ईरान और मिश्र जैसे देशों में आरम्भ हुआ। लेकिन इन देशों में इस विज्ञान में जो सहयोग, स्पष्टता और एकरूपता हमें दिखाई देती है वह वास्तव में यूनानी सभ्यता की देन है। संसार भर में यूनानी सभ्यता को सर्वाधिक उच्च और विवेकपूर्ण माना जाता रहा है–एक नहीं, अनेक कारणों से और जिसे हम हस्तरेखा विज्ञान या कीरोमेन्सी कहते हैं यूनान में ही पला-पनपा था वहीं इसकी अभिवृद्धि हुई और यह ज्ञान सितारों के समान ज्वाजल्यमान महापुरुषों के आश्रम में निरन्तर विकसित होता रहा। यूनानी कीर शब्द का अर्थ है जो हाथ से विकसित हुआ हो।

ईसा से 423 वर्ष पूर्व यूनानी दार्शनिक एनेक्सागोरस कीरोमेन्सी का केवल उपयोग ही नहीं करता था, उसकी शिक्षा भी देता था। हम यह भी जानते हैं कि एनोक्सोगोरस की तरह ही अरस्तू, पेरा विलसाइड, कार्डमिस, पिल्लनी और हिस्पेनस का इस विज्ञान में अटूट विश्वास और श्रद्धा थी। हिस्पेनस ने सिकंदर महान को हस्तरेखा विज्ञान पर एक पुस्तक लिखकर भेंट की थी। उसने लिखा था–"यह ग्रंथ एक ऐसा अध्ययन है जो जिज्ञासु और सुविकसित मस्तिष्क वाले व्यक्ति के पढ़ने के योग्य है।"

इस पुरातन विज्ञान को सबसे बड़ा धक्का तब लगा जब यह ढोंगियों नीम-हकीमों और आवारागर्दी करने वाले लोगों के हाथों में आ गया। इसके दुष्परिणामों को देखकर सन् 315 में सरकार को चर्च के दबाव डालने पर कानून बनाना पड़ा कि हस्तरेखा विज्ञान का प्रयोग करते हुए जो भी व्यक्ति पाया जाएगा उसे अदालत दंड देगी। अदालत उसे मृत्युदंड तक दे सकेगी। इन दिनों चर्च शक्तिवान हो गया था। उसके हाथों में सत्ता आ चुकी थी। इसलिए उसने ऐसा आश्चर्यजनक कानून बना डाला। लोग हस्तरेखा विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र को कालाजायी और शैतान की एजेन्सी कहने लगे। लेकिन सत्य सत्य ही होता है। सन् 1445 में एक महत्वपूर्ण घटना हुई। एक मठ में रहने वाले साधु हार्टलिव ने उसी समय प्रकाशित होनी वाली बाइबिल का अध्ययन किया और 1474 में इस सम्बन्ध में एक पुस्तक प्रकाशित की जो बाइबिल के बाद प्रकाशित होने वाली दूसरी पुस्तक थी।

इंग्लैण्ड से सम्राट जार्ज IV के जमाने में पार्लियामेन्ट ने कानून बनाया कि यदि कोई व्यक्ति ज्योतिष को उपयोग करते हुए पाया जाएगा तो उसे कड़ा दंड दिया जाएगा। उसे एक वर्ष का कारावास या टिकटी पर खड़े होने का दंड मिलेगा।

इस प्रश्न का लम्बे समय से उत्तर नहीं खोजा जा सका कि वे पुरातन विंद्वान अधिक ज्ञानवान थे या हम लोगों से अधिक समझदार हैं। इस प्रश्न का सर्वाधिक सम्बन्ध हस्तरेखा विज्ञान से है। सभी ने इसे स्वीकार भी किया है। क्योंकि उस युग में मानव जाति का सर्वाधिक महान विषय जिसका वे रात-दिन अध्ययन करते रहते थे, 'मानव' ही था। इसलिए उन लोगों के निष्कर्ष कहीं अधिक सही हैं, हम लोगों के निष्कर्षों की अपेक्षा। क्योंकि हम विनाशक अस्त्र-शस्त्रों आदि के सौदागर हैं। हमें चाहिए कि हम पीछे मुड़कर देखें, उन विद्वानों के सम्बन्ध में सोचें जिन का हम अक्सर उल्लेख करते रहते हैं। हम तर्कसंगत ढंग से उन्हें याद करें। उनके ज्ञान की उपेक्षा न करें।

उन विद्वानों ने जब 'मानव' का अध्ययन किया तो मानव के चेहरे, उसकी नाक, कान, आंखों आदि की स्वाभाविक स्थिति भली भांति पहचान लिया। इसी प्रकार मानव की हथेली में बनी मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा की जानकारी प्राप्त करके उनकी स्वाभाविक स्थिति को मान्यता प्रदान की इस विज्ञान की खोज और अध्ययन में उन विद्वानों ने जो साधना की, जो समय लगाया उसी के कारण वे हथेली पर बनी रेखाओं और चिन्हों को ये नाम दे सके। उदाहरण के लिए उन्होंने जिस रेखा को मस्तिष्क रेखा का नाम दिया उसका सम्बन्ध व्यक्ति की मानसिकता से है। हृदय रेखा का सम्बन्ध स्नेह से और जीवन रेखा का अर्थ जीवन की अवधि से है। इसी प्रकार अन्य चिन्ह और पर्वत हथेली पर मौजूद हैं। उन्होंने उनके भी नाम दिए हैं।

इस जानकारी के साथ हम उस युग में पहुंच जाते हैं जिस युग में साम्राज्य की शक्ति की अपेक्षा चर्च की शक्ति बढ़ने लगी थी। उस काल के चर्च-अधिकारी इस पुरातन ज्ञान की शक्ति से ईर्ष्या करते थे। आध्यात्मिक हो या लौकिक हर विषय में चर्च स्वयं को प्रधान

मानता था। वह जो कुछ कहता था उसे वेद वाक्य मानता था। वह धर्म का ही नहीं मानव जीवन के प्रत्येक कार्यों के लिए स्वयं को ईश्वर का निर्धारित प्रतिनिधि मानता था। शासन करने वाले किसी भी धर्म का इतिहास वास्तव में ज्ञान के विरोध का इतिहास है। इसीलिए मलेच्छ हो या काफिर हो हस्त रेखा विज्ञान सभी की संतान है–इस सत्य को चर्च ने अनसुना कर दिया। इसे जादूगरी और टोना-टोटका मानकर त्याज्य घोषित कर दिया गया। साथ ही यह भी घोषणा कर दी गई कि हस्तरेखा जानने वाला व्यक्ति शैतान की औलाद है। शैतान पिता की परिकल्पना से भयभीत होकर कोई भी चर्च का विरोध करने का साहस नहीं कर सका और हस्तरेखा विज्ञान के जानकारों को अपराधी तथा इस ज्ञान को त्याज्य घोषित हो जाने दिया। और अन्त में यह ज्ञान जिप्सियों, खानाबदोशों और आवारा बुझक्कड़ों के हाथों में चला जाने दिया।

इस प्राचीनतम विज्ञान को पुनर्जीवित करने के लिए मध्ययुग में अनेक प्रयास किए गए। सन् 1475 "दिये कुन्स्त कीरोमेन्ता" और सन् 1490 में "द कीरोमेन्तिया अरिस्टोटलिस कम फिगरस" नामक दो ग्रंथ प्रकाशित हुए, जो आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित हैं इन दोनों ग्रंथों को ज्योतिष विज्ञान को समाप्त होने से बचाने का श्रेय प्राप्त है। इन दोनों ग्रंथों ने इस विज्ञान को नया जीवन दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी में उत्पीड़न की अग्नि में भी सुरक्षित रहकर फीनिक्स ने इस ज्ञान की सुरक्षा के निरन्तर प्रयास किए। और जिस विज्ञान को अंधविश्वास घोषित किया जा चुका था वह एक बार फिर सत्य बनकर सामने आया। इस प्रकार के अनेक प्रमाण स्वतः ही झुटते जा रहे हैं जो प्रमाणित करते हैं कि यह प्राचीन विज्ञान एक ठोस यथार्थ है किसी व्यक्ति का मतिभ्रम नहीं है। एक ऐसा रत्न है जो धोखा-धड़ी और अंधविश्वासों के ढ़ेर में दबकर धुंधला तो पड़ गया था लेकिन उसका आंतरिक प्रकाश नष्ट नहीं हो पाया। वह प्रकाश जिसे जानकर प्रकृति के अनुयायिओं को प्रसन्नता होती है और जिसकी व अराधना करते हैं।

चर्च के आक्रमणों से हस्तरेखा विज्ञान की सुरक्षा करना उचित होगा यह स्थिति की मांग है। आइए, पहले चर्च द्वारा इस विज्ञान पर किए गए आक्रमणों पर नजर डालें। चर्च के विचार से हस्तरेखा विज्ञान का प्रयोग, अध्ययन और उसे बढ़ावा देना शैतान की और झुकाव होना है। इस विज्ञान के जानकार की पीठ पर शैतान का हाथ रखा रहता है।

लन्दन की एक घटना है। एक परिवार ने किसी सिलसिले में मुझसे परामर्श किया था। केवल इसी अपराध पर एक कैथोलिक पादरी ने उस व्यक्ति के पूरे परिवार को मुक्ति दिलाने से इन्कार कर दिया। उसने उस परिवार को स्पष्ट आदेश दिया था कि वह मुझसे कोई सम्बन्ध न रखे और न मुक्ति के विषय में मुझसे सलाह मशवरा करें।

जिन दिनों में अमेरिका में था प्रवास के पहले वर्ष में दो पादरी मेरे पास केवल इस बात पर बहस करने के लिए आए कि मुझे जो कुछ भी सफलता मिली है वह इसलिए मिली

है कि शैतान का प्रतिनिधि हूँ। एक पादरी ने मुझसे यह कहा कि उसे परम पिता ने मुझे चर्च में सेवा करने का अवसर प्रदान करने के लिए भेजा है। चर्च में मुझे एक छोटी सी नौकरी मिल सकती है। बहुत ही थोड़ा सा वेतन मिलेगा। लेकिन इस शर्त पर कि मैं शैतान की शक्ति से सम्बन्ध विच्छेद कर लूं।

उन्होंने कहा, " मैंने अपनी आंखों से जो देखा है, उसे तुम्हें बताता हूँ। मैंने एक ऐसा अग्नि पशु देखा है जिसकी आकृति घोड़े जैसी थी और वह कोयले की तरह दहक रहा था। घोड़े पर बिना बाहों का एक व्यक्ति बैठा था और घोड़े द्वीप के इस छोर से उस छोर तक दौड़ाता फिर रहा था। बहुत ही तेज रफ्तार से। उसे देखकर लोग भयभीत हो रहे थे और सोच रहे थे कि यही शैतान है। उन भयभीत लोगों ने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उनकी रक्षा करुं। लेकिन मैंने इन्कार कर दिया। क्योंकि यह दृश्य उन सभी लोगों के लिए चेतावनी थी जिन्हें यह दिखाई दे रहा था वह शैतान और उसकी सेना का प्रतिनिधित्व कर रहा था जिसका परिणाम वही होगा जो इस धरती पर पापियों का होता है–भयानक परिणाम–मैं सारे संसार का भ्रमण कर चुका हूँ। लेकिन इतना भयानक और आश्चर्यजनक दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा।

मैंने उस पादरी के ये शब्द ज्यों के त्यों उसके पूरे उपदेश के साथ न्यूयार्क के एक प्रमुख समाचारपत्र में प्रकाशित करा दिए थे।

वास्तव में चर्च का मूलाधार बाइबिल है। जोलिसस प्रथम के काल से लेकर क्रान्ति की समाप्ति तक बाइबिल को भाग्य का एक महानतम ग्रंथ माना जाता रहा। बाइबिल के प्रारम्भिक अध्यायों में हम देखते हैं कि ईश्वर ने एक निश्चित समय निर्धारित किया है जब एक अविवाहित कुंवारी कन्या गर्भवती होगी। और कुछ समय पश्चात जूड़ा छल करेगा। बेचारे जूड़ा को भाग्य का शिकार बना दिया जाता है जबकि वह एक मुक दूत था। आगर यह भाग्य चक्र से बचने का प्रयास करता तो धर्म ग्रंथ अधुरा रह जाता। बाइबिल के उपदेशों में अनेकों बार हमें ऐसे रहस्यपूर्ण शब्द मिलते हैं। बाइबिल के हर भाग में भविष्य वाणियों को मान्यता दी गई है। उनका समर्थन किया गया है।

बाइबिल में स्पष्ट दिखाई देता है कि लोगों को भाग्यवादी बनाने के उद्देश्य से भविष्य-वक्ताओं की कई शाखाएं स्थापित की गई हैं। साथ ही ऐसे संकेत भी दिए गए हैं कि जिन व्यक्तियों को भगवान ने निर्वाचित किया उन्होंने समाहत भाव से नारियों के साथ आध्यात्मिक समागम किए। भारत, मिश्र आदि देशों के निवासियों तथा भविष्य-वाणियों की भावना की अभिवृद्धि और समर्थन करने वाले हर राष्ट्र में मठाधिकारियों से प्रक्ष्य भविष्य वेत्ताओं का एक वर्ग अनादिकाल से चलता चला आया था।

यहूदी जाति के भविष्य वक्ता साधू धर्म के अधिकारियों के प्रचलित भ्रष्ट आचरण तथा अमानवीय व्यवहारों का सदैव विरोध करते रहे। उनकी मान्यताओं और सिद्धांतों को

त्याज्य घोषित करते रहे।

परम्परा के अनुसार यहुदियों को गुह्यवाद का ज्ञान ईश्वर से आदम को दिए जाने पर प्राप्त हुआ। यह गुह्य ज्ञान सर्वप्रथम ईश्वर ने आदम को दिया और आदम ने पुत्र को दिया जिसने किसी रहस्यपूर्ण ढंग से उसे खो दिया।

इसके बाद यह ज्ञान ईश्वर ने मूसा को सिमाई पर्वत पर दिया। मूसा ने जोशुआ को और जोशुआ ने सत्तर अनुयायियों को दिया। इस ज्ञान का उपयोग यहूदी साधू कभी-कभी यहूदी धर्मग्रंथ तालमदा में दी गई व्यवस्थाओं के स्थान पर किया करते थे। बाइबिल के इस कथन का परीक्षण करने पर कि यहूदी जाति उस समय मस्त्रियों की गुलाम थी। मिस्र के निवासी अपने जादू के लिए विख्यात थे। इस बात पर आश्चर्य होता है कि यहूदी उस रहस्यपूर्ण स्थान को छोड़ देने के बाद भी उस ज्ञान और उससे छिपे उपदेशों के खजाने को अपने पास सुरक्षित रखे रहे। अनेक आधिकारिक विद्वानों ने कहा है कि जब हिब्रलोग मिस्त्र के निवासियों का कत्ले आम कर रहे थे, उनकी धन-सम्पत्ति और आभूषण लूट रहे थे और कूच करने की तैयारी में थे, वह सत्य इस गुंह्यवोदी उक्ति में छिपा है—उनके यह कर्म कांड और उनकी जादूई पूजा विधि उनसे छीन ली गई। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि वह आधुनिक चर्च की बाइब्लि पर आधारित है उसमें तत्कालीन प्रचलित रहस्यवाद काक रंग विद्यमान है। वह भाग्यवाद का पाठ पढ़ाती है और भविष्य वाणियों से भरी पड़ी है। ये ही वे तीन बातें हैं जो हस्तरेखा विज्ञान के अध्ययन में चर्च के क्रोध का कारण बन गई थीं। जादू-टोना और ईश्वरीय उपदेश के विपरीत जो कुछ भी था उसे चर्च ने त्याज्य घोषित कर दिया गया था।

चर्च के इस विरोध को देखते हुए बाइबिल के ऐसे अनेक उदाहरणों पर ध्यान देना दिलचस्प मालूम होता है जिनमें "हथेली" का उल्लेख किया गया है। ऐसे अनेक विद्वान हैं जो इस बात को स्वीकार करते हैं कि मिस्र में रहते हुए यहूदियों ने जो कलाएं-विद्याएं सीखीं हाथ की रेखाओं को पढ़ना भी उन्हीं विद्याओं में से एक विद्या थी। लेकिन इस विद्या के समर्थन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उक्ति 'जाब' के सेंतीसवें अध्याय की सातवीं उक्ति है, जिसका बहुदा उल्लेख किया जाता है। मूल भाषा में इस उक्ति का अर्थ उस अर्थ से भिन्न प्रतीत होता है जो अंग्रेज़ी अनुवाद का अर्थ है। अंग्रेजी अनुवाद में इस प्रकार है—"ईश्वर ने मनुष्यों के हाथों में ऐसे अनेक चिन्ह और छापे बनाए जिनके द्वारा वे अपने जीवन के समस्त कार्यों को जान सकें।"

सोलहवीं शताब्दी के मध्य के आसपास इस उक्ति ने अनेक टीकाकारों और आध्यात्मवादियों के बीच अनेक महत्वपूर्ण और बड़े-बड़े शास्त्रार्थों का श्री गणेश कर दिया। इस वाद-विवाद से पता चलता है कि उन्होंने "ईश्वर ने मनुष्यों के हाथों में ऐसे अनेक चिन्ह और छापे बमाए जिनके द्वारा वे अपने जीवन के समस्त कार्यों को जान सकें—" कहकर हाथ

की रेखाओं के कीरोपक्ष का समर्थन किया। इस पक्ष के समर्थकों में थे फ्रासिस्क्स-बेलिसियस, शुल्तेन, लाईरनेस, टामसिस और ड्रब्रियो। इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि इस मत का समर्थन करने वाले महापुरुष जिस युग में रह रहे थे वह हस्त विज्ञान का सर्वाधिक विरोधी युग था। इस युग से बढ़कर विरोध का वातावरण शायद ही किसी युग में रहा हो। ऐसे विरोध भरे युग में जबकि हस्तरेखा विज्ञान, जादूटोना और ओझागीरी का विरोध चरम सीमा पर था, सम्भवतः यह उक्ति ही बाइबिल के उस अंग्रेजी अनुवाद का कारण बनी जो आज भी प्रचलित है।

इस मत से सम्बन्धित बाइबिल की कुछ अन्य उक्तियों का उल्लेख भी यहां किया जा सकता है–"दिन की लम्बाई उसके दांये हाथ में और धन सम्पत्ति तथा मान-सम्मान आदि बांये हाथ में है।"–"मेरे हाथ में कौन सा शैतान है ?"–"उसका चिन्ह उसके मस्तक में मिले या फिर उसके हाथ में।"

लेकिन इस विषय के सम्बन्ध में अनेक अन्य उदाहरणों में 'जाब' की उक्ति ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उसका समर्थन आध्यात्मवादियों ने भी किया है।

मेरे विचार से चर्च द्वारा किये जाने वाले विरोध के सम्बन्ध में सबके तर्कहीन विचार ही हैं कि जहां दूसरे लोक को लेकर भाग्यवाद का प्रचार करने में नहीं हिचकिचाता किन्तु हस्त विज्ञान को न छूने के योग्य बताता है जहाँ तक धार्मिक प्रभावों का सम्बन्ध है पूर्वनिर्धारित भाग्य का खुल्लम-खुल्ला प्रचार करने वाली अनेक जातियां हैं। जिसे आज इंगलैंड का चर्च कहते हैं वह इसी भाग्यवाद को आस्था के अपने आलेखों में से एक आलेख घोषित करने की सीमा तक पहुंच जाता है। जैसाकि सत्रहवें उल्लेख में कहा गया है–"जीवन में पूर्ण निर्धारित भाग्य परमेश्वर का शाश्वत लक्ष्य है जिसका निर्णय उसने इस विश्व की सृष्टि करने से पहले ही गोपनीय ढंग से अपने विचार प्रकाश से कर दिया था जिसके अनुसार मनुष्य को एक या दूसरा या अन्य कोई कर्त्तव्य करना था–" इस आलेख के विद्वान रचयिताओं ने अपनी परिकल्पना के अनुसार ईश्वर की ऐसी ही व्यवस्था की है।

इस प्रकार जीवन की चिरन्तनता का गणित लगाना और अज्ञान की अर्थ राजनीति के आयोजन की चेष्टा करना, लोगों को इस बात पर विश्वास करने को कहने से कई हजार गुणा अधिक असंगत है कि क्योंकि हाथ भी व्यवस्था के दास हैं। इसलिए व्यवस्था के प्रभावित करने वाले सभी तत्व उन्हें भी प्रभावित करते हैं। यह बात विचित्र लगती है, फिर भी सत्य है कि जो लोग धर्म के सम्बन्ध में अत्यधिक अनोखे सिद्धांतों पर विश्वास करते हैं, वे लोग ही शोर मचाते हैं कि हस्त विज्ञान जैसी किसी चीज में विश्वास रखना मूर्खता है। निस्संदेह इस बात में न कोई तर्क है न संगति ही है।

अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि हस्त विज्ञान के लिए विज्ञान ने क्या किया और इस विद्या का अनुमान, कल्पना और सम्भावना के अतिरिक्त कोई आधार है की या नहीं ? विशेष रूप से वर्तमान युग में जबकि यह युग इस शताब्दी की एक प्रसिद्ध विशेषता है, लगभग हर क्षेत्र में लोग विद्या कि किसी एक की विशिष्ट शाखा पर कार्य कर रहे हैं। अतीत में तो किसी एक ही व्यक्ति का एक साथ चिकित्सक, शल्य चिकित्सक और रसायनज्ञ होना सामान्य बात थी। वास्तविकता तो यह है कि विषयों की कोई सीमा नहीं थी। कोई भी व्यक्ति किसी भी ओर ध्यान दे सकता था। इस दिशा में उन्नीसवीं शताब्दी में और विशेषरूप से उसके अन्तिम वर्षों में हर क्षेत्र में विशेषज्ञों की बाढ़ सी आ गई थी। अनिवार्य नहीं था कि शल्य चिकित्सक चिकित्सक भी हो। और न यह जरूरी था कि एक चिकित्सक शल्य चिकित्सक भी हो। आवश्यक नहीं था कि दांतों का डाक्टर रोगों का भी डाक्टर हो। इसी प्रकार रसायनज्ञ के लिए भी कुछ आवश्यक नहीं रहा था कि वह हड्डी को बैठाने का काम भी करे। यह विभिन्न परिवर्तन विशेष रूप से विज्ञान के क्षेत्र में ही देखा गया था। साथ हीं कई स्वास्थ्य अनुसन्धानों और सुधारों में तो चंकित कर देने वाले परिणाम भी देखने को मिले थे।

इतना आवश्यक है कि इस विशेषज्ञता में एक कुल बड़ी बुराई भी है। इससे किसी एक विषय का ज्ञान तो अधिक हो जाता है लेकिन वे लोग ज्ञान की एक संकुचित शाखा तक सीमित रह जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि चिकित्सक को शरीर विज्ञान का अधिक ज्ञान नहीं होता। नाड़ी का विशेषज्ञ सामान्य रोगों का उपचार नहीं कर पाता जबकि सामान्य चिकित्सक नाड़ी सम्बन्धी रोगों को हाथ नहीं लगाता। शल्य चिकित्सक को औषधि का ज्ञान नहीं होता। यहाँ तक कि क्षय रोग का विशेषज्ञ साधारण ज्वर ग्रस्त रोगी का उपचार नहीं करेगा। इसी प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं। इस सबसे से एक उल्टी गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वह यह कि जन-सामान्य सामान्य डाक्टर के सम्बन्ध में अनुचित रवैया अपना लेता है।

मान लीजिए एक व्यक्ति होप्नोटिज्म को एक विचित्र प्रयोग मानता है और अपने इलाज के लिए डाक्टर के पास जाता है। लेकिन शायद उस डाक्टर ने हिप्नोटिज्म को जानने में कभी पाँच मिनट भी खर्च नहीं किए होंगे इसलिए वह हिप्नोटिज्म को असंभव घोषित कर देता है। रोगी वापस, लौट आता है और दूसरे लोगों के बीच हिप्नोटिज्म का मजाक उड़ाने लगता है। क्योंकि अमुक डाक्टर को इस पर विश्वास ही नहीं है। चिकित्सा विज्ञान में ऐसे सैकड़ों रहस्य हैं जिनका सामान्य चिकित्सक को ज्ञान ही नहीं होता। तो कल्पना की जा सकती है कि जीवन और प्रकृति के रहस्यों के सम्बन्ध में और कितना कुछ अज्ञात रह गया होगा। क्योंकि रहस्य मानव की विश्लेषण शक्ति से परे हैं और अदृश्य नियमों से नियंत्रित होते हैं।

मैं डाक्टरों का सम्मान सुशिक्षित व्यक्तियों की संस्था के रूप में करता हूँ। लेकिन मैं इस विचारधारा का सम्मान कैसे करुँ कि सभी डाक्टर अपने नाम के साथ केवल एम॰डी॰ के जुड़जाने भर से योग्यता और ज्ञान न होने पर भी टेलीपैथी, मेस्मरेज्म, और दूरश्रवण जैसे विषयों के सम्बन्ध में निर्णय देने के अधिकारी हो जायें।

वाल्टेयर ने कहा था–" न्यूटन अपने पूरे विज्ञान की जानकारी के बावजूद यह नहीं जानता कि उसका हाथ किस तरह हिलता-डुलता है

अपमे कार्य को दौरान-लगभग रोजाना ही मुझे इस प्रकार की बातें सुनने को मिलती रहती हैं–"महोदय, यह तो ठीक है कि आपने हाथ की रेखाओं को पढ़ कर मेरे विगत जीवन की सभी घटनाओं का ठीक-ठीक विवरण दे दिया। मैं इस पर आधा तो विश्वास करने के लिए राजी हो गया हूँ कि आप मेरे भविष्य भी बता सकते हैं। लेकिन इस सम्बन्ध में मैंने अमुक डाक्टर से पूछा था तो उसने कहा था कि यह एक छल, छन्द है। इसलिए मैं समझ नहीं पा रहा कि क्या कहूँ ? क्या सोचूं।

अमुक डाक्टर महोदय अक्सर ऐसे व्यक्ति निकलते हैं जिन्हें हाथ की रेखाओं और मस्तिष्क के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन करने का न तो कभी अवसर ही मिला है और न वे समय ही निकाल पाए। और न इस ओर उनकी रुचि ही थी। यहां तक कि इस विषय में उन्होंने चिकित्सा विशेषज्ञों के ग्रन्थ तक नहीं पढ़े। वे तो बस बुखार, निमोनिया, बच्चों के रोगों और वृद्धावस्था के साथ-साथ आने वाले रोगों के अतिक्रमों और उनका उपचार करने तक ही सीमित रह गए हैं। उन्हें केवल इतना पता है कि हाथ जैसे कोई चीज होती है जो बुखार आ जाने पर गर्म और खुश्क हो जाती है। उनके लिए इतना ही पर्याप्त होता है।

इस सम्बन्ध में वे न्यूजर्सी स्टेट से निकल सोसायटी के अध्यक्ष के भाषण का एक अंश उद्धृत कर रहा हूँ। उन्होंने अपने भाषण में कहा था–

"ऐसे चिकित्सक कितने हैं जो सुनी-सुनाई बातों के सिवा रोगों की उत्पत्ति के प्राकृतिक कारणों के सम्बन्ध में थोड़ा सा भी जानते हैं ? कितनों में यह साहस है कि वे विभिन्न अनावश्यक औषधियों के सेवन का परामर्श देने के लुभावने असर की अवहेलना करके स्वयं निरीक्षण करके इस पक्ष को जानने का प्रयास कर सकें ?"

बीस वर्ष से अधिक समय की बात नहीं है जब-प्रायः प्रत्येक विख्यात चिकित्सक जोर देकर यही कहता था कि सम्मोहन विद्या असंभव है। उसने आज उसी व्यवसाय को अपना रखा है जिस विद्या के अस्तित्व को जो स्वीकार ही नहीं करता था आज उसी के नियमों का अध्ययन करता है। कीरो विद्या के साथ भी यही बात है। वर्षों तक इसका उपहास किया गया। लेकिन आज उपहास करने वाले लोग स्वीकार करते हैं कि रोग एक अनूठे ढंग से हाथ की हथेली पर अंकित होते हैं। और अब तो नाखूनों के आकार का अध्ययन एक ऐसी प्रथा सा बन गया है जिस पर लन्दन और पैरिस के चिकित्सक विशेषज्ञ भरपूर ध्यान दे रहे हैं।

यदि चिकित्सक व्यवसाय चिरकाल से चले आ रहे अपने पूर्वाग्रहों को तिलांजलि दे सके, यदि उन्हें हस्तरेखा विज्ञान की कुछ विश्वसनीय पुस्तकों का अध्ययन करने पर राजी किया जा सके तो सन्देह नहीं कि वे इस निष्कर्ष पर पहुंच जायें और हिस्पेनस के इन शब्दों को याद रख सकें "हस्त विज्ञान निस्संदेह इस योग्य है कि विकसित और जिज्ञासु व्यक्तियों का मानस इसे अनदेखा न करें।"

इस सम्बन्ध में मैं एडिनबर्ग विश्व-विद्यालय, स्काटलैंड की पत्रिका 'स्टूडेन्ट' में प्रसारित एक पत्र को ले रहा हूँ। वह पत्र इस प्रकार है–

"महोदय :

कुछ वर्ष पहले जब मैं रायल हास्पिटल के एक वार्ड में से गुजर रहा था तो अचानक ही मन में विचार पैदा हुआ कि एक रोगी के हाथ की रेखाओं का अध्ययन किया जाए।

मैं सबसे निकट के पलंग के पास चला गया और रोगी की ओर देखने को रुके बिना उसका हाथ देखने लगा। मैं हस्तरेखा विज्ञान के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता था। और उस पर विश्वास भी कम करता था। मुझे केवल इतना ही पता था कि हाथ की पांच प्रमुख रेखाओं के नाम क्या हैं और उनमें कोई व्यवधान और उनका टूटना दुर्भाग्य का लक्षण है; मैंने उस रोगी के हाथों का निरीक्षण किया। उसकी जीवन रेखा दोनों ही हाथों में टूटी हुई थी। और भाग्यरेखा अपनी सामान्य लम्बाई की एक चौथाई भी विकसित नहीं हुई थी उसका स्थान एक बड़े गुणन चिन्ह (क्रास) ने ले लिया था।

मैंने उस रोगी से बातचीत की तो पता चला कि उम्र केवल तेईस वर्ष की है। और वह क्षय रोग से ग्रस्त है। कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

मैं इस प्रकार के अनेक उदाहरण दे सकता हूँ लेकिन स्थान की कमी इसकी अनुमति नहीं देती। क्या आप मुझे इस बात की अनुमति देंगे कि मैं मस्तिष्क की कोशिकाओं चलने वाली प्रक्रिया और हाथ की इन रेखाओं के पारस्परिक सम्बन्ध पर प्रभाव डालने वाले कुछ सुझाव दे सकूं ? मैं भलिभांति जानता हूँ कि हस्तरेखा विज्ञान को नीम हकीमी और कपट विद्या कहा जाता है। लेकिन अन्ततोगत्व तथ्य बहुत हठी होते हैं भले ही वे किसी वैज्ञानिक आधार पर न टिके हों।

हाथ के रेखांकित चिन्हों, शरीर विज्ञान तथा मस्तिष्क की मानसिक प्रक्रियाओं के बीच संभावित सम्बन्धों पर कुछ सुझाव

1 — एक तर्क युक्त जीवन के रूप में मनुष्य का हाथ विशेष रूप से विकास की उच्च स्थिति का द्योतक है।

2 — उसकी गति से क्रोध, प्रेम आदि प्रवृत्तियों का ज्ञान होता है।

3 — यह गति स्थूल अथवा सूक्ष्म होती है। इसलिए उससे हाथ पर बड़ी या छोटी सलवटें या रेखायें बनती हैं।

4 — इन सलवटों या रेखाओं की गति का व्यक्ति प्रवृत्तिओं से गहरा सम्बन्ध होता है

5 — हर हाथ पर चार स्पष्ट सलवटें या दो रेखाएं होती हैं। जिनके विषय में अनुभव से पता चलता है कि इन रेखाओं का प्रेम, मानसिक शक्ति, जीवन की अवधि और मानसिक झुकाव जैसी प्रवृत्तियों से सुनिश्चित सम्बन्ध है। हस्तरेखा विशारद अर्थात कीरो विज्ञान के विशेषज्ञ इन प्रवृत्तियों को भाग्य की संज्ञा देते हैं।

6 — जीवन की अवधि बताने वाली रेखा को काटनेवाली और रेखा या उससे निकली हुई कोई शाखा, या उसका कहीं टूटना उस रेखा की एकरुपता में बाधा डालते हैं। अतः जीने की प्रवृत्ति की एकरुपता के व्यवधान पैदा हो जाता है।

7 — स्थूल या सूक्ष्म गतिविधि का संचालित करने वाले स्नायु जिनसे ठीक वैसी ही सलवटें या रेखाएं बनती है, प्रमुख रूप से गतिशील रेशों से उनका निर्माण होता है। लेकिन संभवतः उनमें कुछ अन्य ऐसे तन्तु भी होते हैं जो अर्जित या अन्तर्निहित प्रवृत्तियों के कारणों या मिश्रित प्रभावों का कम्पनों द्वारा सम्प्रेषण करते हुए और उनका जीवन रेखा के प्रभावित होने वाले भाग से मुख्य रेखा या उसकी शाखा के जोड़पर क्रास चिन्ह बनाते हुए दोनों का सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

8 — स्पष्ट है कि तर्क की एक सूत्रता दुर्घटनाओं से सुरक्षा पर भी लागू होती है। उन दुर्घटनाओं पर जो असावधानी के कारण होती है।

9 — ऐसी दुर्घटनाएं जिनसे बचा न जा सके, उनके सम्बन्ध में यह समझा जाये कि अस्पष्ट भय, अन्तरचेतना का ज्ञान आदि जिनकी वास्तव में कोई संगतियुक्त एक सूत्रता नहीं है। अर्थात जिसका परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है, आखिर है क्या ? वे और कुछ नहीं, केवल शंकु का आकार के मस्तिष्क की कुछ कोशिकाओं की ऐसी वर्ती है जिनके कारण उनमें आगामी घटनाओं का प्रभाव उत्पन्न हो जाता है शायद कम्पन्न उत्पन्न हो जाता है। यह धारणा अविश्वसनीय दिखाई देती है। कोशिकाओं में उत्पन्न कम्पन्न अपने साथ जुड़े तर्क प्रक्रियाओं में लगे कोणों में कोई गतिविधि तो उत्पन्न नहीं करवा सकता लेकिन उनमें चेतनात्मक कम्पन्न अवश्य जगा देता है। और इन कम्पन्नों का सम्प्रेषण हाथ पर बने विभिन्न आकार-प्रकार के चिन्हों के साथ में अंकित हो जाता है। कीरो विज्ञान के जानकारों के अनुसार आप अपने-अपने निर्मित आकार-प्रकार में जैसे हैं, जो भी हैं, वह तो आपका बायां हाथ है और जो आप अर्जित करते हैं, स्वयं का कैसा निर्माण करते हैं वह आपका दायां हाथ है। इसलिए इस बात में संगति है कि हम आपकी अर्जित और अन्तर्निहित प्रवृत्तियों के परिणाम की अपेक्षा आपके दायें हाथ में करें।

जहाँ तक भविष्य कथन का सम्बन्ध है, मैं इसे असम्भव नहीं मानता। प्रोफेसर शरकाट की स्नायु मंडल की सर्वोच्च कार्यकलापों सम्बन्धी खोजें सिद्ध करती हैं कि कोशिकाओं की वृत्ति अथवा इन कोशिकाओं की शरीर विक्रिया वैज्ञानिक स्थिति भविष्य कथन

के अभ्यास को सम्भव बनाती हैं। किन्तु उसकी 'स्मृति' उत्पन्न नहीं करती।

हस्ताक्षर
स्पीरीनस

इस पत्र से स्पष्ट हो जाता है कि अत्यधिक नकारात्मक व्यक्ति तक की सहमति प्राप्त करने के लिए इस विषय का थोड़ा बहुत अध्ययन आवश्यक है। ताकि उसे भी ऐसा अनुभव हो कि रेखाओं में कुछ तो है ही। और अगर कुछ है तो बहुत कुछ क्यों नहीं है। बस, शर्त यही है कि इस विषय का पर्याप्त अध्ययन करने के लिए समय निकाला जाए।

चिकित्सा विज्ञान में कान का रक्त अर्वुद काफी समय पहले जाना जा चुका है। यह अर्वुद कान के ऊपरी भाग में एक विभिन्न आकार में बनता है। या फिर ऊपरी भाग के फूल जाने से उभार की शक्ल में बन जाता है या जिसमें रक्त अर्वुद होता है यह अर्वुद अक्सर पागलों के कान में ही बनता है। सामान्य रूप से उन लोगों के कान में जिनका पागलपन पैतृक होता है। इस बात का विशेष अध्ययन पेरिस में किया गया। विज्ञान अकादमी के तमाम परिक्षणों के जो परिणाम निकले उनसे सिद्ध हो गया कि केवल कान की परख करके वर्षों पहले भविष्यवाणी की जा सकती है। इसलिए मेरा यह तर्क है कि जैसा कि सिद्ध हो चुका है कि जब केवल कान की जाँच-परख करके सही-सही भविष्यवाणी की जा सकती है तो क्या हाथ का निरीक्षण करके अन्य भविष्यवाणी करना असंभव है ? जबकि हाथ के विषय में स्नायु मंडल और उनके गति संचालन को देखते हुए यह माना जा चुका है कि हाथ ही पूरे मानव शरीर का सर्वाधिक विचित्र अंग है और हाथ का मस्तिष्क के साथ सर्वाधिक गहरा सम्बन्ध है।

अब लगभग सभी चिकित्साशास्त्री इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि नाखूनों के विभिन्न आकार और रूप विभिन्न रोगों की और इशारा करते हैं। और केवल नाखूनों को देखकर यह बता पाना सम्भव है कि अमुक व्यक्ति पक्षाघात, क्षयरोग या हृदय रोग आदि से पीड़ित होता चला जा रहा है। अनेक चिकित्सकों ने मुझे बताया है कि उन्होंने हाथों से इतनी बातें जान ली हैं। लेकिन उन्हें स्वीकार कर पाने का साहस उनमें नहीं है। सच तो यह है कि पुरातन काल से चले आ रहे पुर्वाग्रहों ने ही अनेक चिकित्सकों को इस प्रकार की सच्चाइयों को स्वीकार करने नहीं दिया। यहाँ मैं एक चिकित्सक के उपचार के ढंग और हस्तरेखा विज्ञान के एक जानकार के सामने आने पर उसके साथ किये जाने वाले व्यवहार की तुलना करना चाहूँगा। यह तुलना मैं उस अनुचित व्यवहार के कारण कर रहा हूँ जो चिकित्सक नियमबद्ध होकर हस्तरेखा के जानकारों के साथ किया करते है।

पहली बात तो यह है कि चिकित्सकों का आधार और सबल एक मान्यता प्राप्त विज्ञान है। उनके पास उनका युक्ति संशोधित वैज्ञानिक उपकरण है, जिनकी सहायता से वे अपना शोध कार्य कर सकते हैं। लेकिन ऐसे कितने चिकित्सक हैं जो रोगी द्वारा अपने रोग के

लक्षण बताये बिना ही उसे यह बता सकें कि वह किस रोग से ग्रसित है। इसके अलावा चिकित्सक क्या हर रोग का सही निदान कर पाते हैं ? कुछ पाठकों ने सुना होगा कि कुछ वर्ष पूर्व लन्दन में इन्फलुएंजा की महामारी फैली थी तो एक व्यक्ति के विभिन्न अनुभव समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए थे। वह व्यक्ति उस समय के सबसे अधिक प्रख्यात सात चिकित्सकों के पास गया। हर चिकित्सक ने उसकी अच्छी तरह जाँच की। लेकिन हर चिकित्सक ने उसे एक नयी बिमारी बताई और खाने के लिए अलग-अलग दवाइयां दी।

दूसरी ओर आने वाला व्यक्ति हस्तरेखा के जानकार को अपना नाम तक नहीं बताता। न अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में बात करता है। वह यह भी नहीं बताता की वह अविवाहित है या विवाहित है। बस अपना हाथ उसके सामने बढ़ा देता है। और हस्तरेखा का जानकार उसके जीवन की विगत घटनाओं, वर्तमान परिस्थियों, भविष्य में उसके स्वास्थ्य आदि के सम्बन्ध में सब कुछ बता देता है। जिस प्रकार उसने अपने सटीक कथन भाग के आधार पर उसका विश्वास जीता या केवल इसी उपकरण के बल पर जिस प्रकार उसका अतीत बताया था भविष्य भी बता देता है। लेकिन यदि वह जरा सी भी भूल कर जाये तो वह व्यक्ति सोचने लगता है कि हस्तरेखा एक वंचना मात्र है। जालसाजी है। जबकि यदि किसी चिकित्सक से भूल हो जाए तो रोगी को उस भूल का पता ही नहीं चल पाता और वह इस लोक को छोड़कर दूसरे लोक में पहुंच जाता है। कितना भयानक परिणाम होता है चिकित्सक की एक मामूली सी भूल का।

पाठक इस उदाहरण से किस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, यह मैं उन्हीं पर छोड़ता हूँ।

जिन तथ्यों का वैज्ञानिकों ने समर्थन किया है उनमें हमें हाथों की रेखाओं, उनकी आवृत्तियों और उन पर पाये जाने वाले पर्वतों आदि के चिन्हों के पोषण करने वाले अनेक ऐसे विचार मिलते हैं जिन्हें हस्तरेखा के जानकार प्रगट करते हैं।

पहली बात तो यह है कि किन्हीं दो हाथों पर अंकित रेखाएं और चिन्ह कभी भी एक जैसे नहीं पाये जाते। इस तथ्य की और जुड़वां बच्चों की ओर ध्यान विशेषरूप से जाता है। जिस प्रकार उन दोनों स्वतन्त्र अस्तित्व और स्वभावों में भारी अन्तर पाया जाता है उसी प्रकार उनके हाथ की रेखाओं में भी भारी अन्तर दिखाई देता है। यह भी देखा गया है कि हाथ की रेखाएं किसी परिवार की किसी विशिष्ट प्रवृत्ति को स्पष्ट कर देती हैं। और आने वाली पीढ़ियों में यह विशिष्ट प्रवृत्ति निरन्तर बनी रहती है। लेकिन यह भी देखा गया है कि कुछ बच्चों के हाथ पर अंकित रेखाओं की स्थिति की अपने माता-पिता से कोई समानता नहीं होती। अगर उनके जीवन का गहराई से निरीक्षण किया जाए तो इस सिद्धान्त के अनुसार वे बच्चे अपने माता-पिता से पूरी तरह से भिन्न होते हैं। फिर भी यदि बच्चे में पिता के साथ समानता हो तो दूसरे बच्चे में माता के साथ समानता पाई जाती है। इसके अनुसार माता अथवा पिता से समानता रखने वाले उस बालक के हाथ पर अंकित

चिन्ह भी उसके हाथों पर अंकित चिन्हों के अनुरूप ही मिलते-जुलतें दिखाई देंगे।

एक प्रचलित धारणा है कि हाथ की रेखाओं पर व्यक्ति के कार्यों का गहरा प्रभाव पड़ता है। वे उनके अनुसार ही ढलती रहती हैं। लेकिन सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत है। शिशु के जन्म के समय ही उसके हाथ पर रेखाएं गहराई से अंकित होती हैं इसके विपरीत काम करने से हाथ की चमड़ी मोटी और सखत हो जाती है। जिसके कारण रेखाएं छिप जाती हैं। अगर हथेली की चमड़ी को पुल्टिस या किन्हीं अन्य साधनों से मुलायम बना दिया जाए तो उस पर अंकित चिन्ह किसी भी समय देखें जा सकते हैं। ये चिन्ह उसकी हथेली पर जीवन के अन्तिम क्षण तक बने रहते हैं।

हाथ की श्रेष्ठता विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है, प्रत्येक युग के विद्वान और वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में एक मत है कि शरीर के अन्य सभी अंगों की तुलना में हाथ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एनेकसा गोरस का कहना है कि "मनुष्य की श्रेष्ठता का कारण उसके हाथ होते हैं।" अरस्तु के लेखों में हमें मिलता है–"शरीर के समस्त अंगों में अंग तो हाथ ही हैं मानव शरीर की पूरी निष्क्रिय व्यवस्था के सक्रिय प्रतिनिधि।" हाल ही के विद्वानों में सी रिचर्डओ के हम्फ्री और चार्ल्स बेल आदि सभी विद्वान ने हाथ की महिमा और महत्व का बखान किया है। सी चार्ल्स बेल लिखते हैं–"हाथ की व्यवस्था व्यक्ति की कल्पना के रूप में ही की जा सकती है जो अपनी अनुभव क्षमता और गति शक्ति में उसके मस्तिष्क की शक्तियों से मेल खाता है।"

सी रिचर्ड ओवेन ने "अंगों की प्रकृति" नामक अपनी पुस्तक में लिखा है–"हाथ की हर हड्डी दूसरी हड्डी से स्पष्ट रूप से अलग पहचान ली जाती है। हर अंकन का अपना विशिष्ट चरित्र होता है।"

इस बात को तो पहले ही जाना और माना जा चुका है कि हाथ अपनी मुद्रा और स्थितियों से उतनी ही बात व्यक्त कर सकता है जिनती बोल कर की जाती है। हाथ की भाषा का वर्णन करते हुए क्विहोलियन का कहना है–"शरीर के अन्य अंग तो वक्ता के सहायक हैं, किन्तु मैं कहूँगा कि हाथ स्वयं वक्ता है। वे मांगते हैं, वायदा करते हैं, प्रेरणा देते हैं, झटकतें हैं, धमकाते हैं, पीछे हटते हैं और असहमत होते हैं। वे भय, आनन्द, शंकाओं सम्मतियों और पश्चात्ताप आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं। वे समझौता कराते हैं, दिल खोल देते हैं और समय तथा संख्याओं का अंकन करते हैं।

अब हम हाथों की चमड़ी, स्नायुओं और स्पर्श करने की अनुभूति पर ध्यान देते हैं। सर चार्ल्स वेल ने चमड़ी के सम्बन्ध में लिखा है–"चमड़ी त्वरित स्पर्श अनुभूति का महत्वपूर्ण अंश है यही वह माध्यम है जिसके द्वारा बाहरी प्रभाव हमारे स्नायुओं तक पहुंचते हैं। उंगलियों के सिरे इस अनुभूति की व्यवस्थाओं का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। नाखून उंगलियों को सहारा देते हैं और लचीले गद्दे के प्रभाव को बनाये रखने के लिए ही उसके

सिरे बने हैं। उनका आकार चौड़ा और ढालनुमा है। यह लचकीलापन बाहरी उपकरणों का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसकी लचक और भराव इसे प्रशंसनीय ढंग से स्पर्श के अनुकूल ढालते हैं। यह एक अद्भुत सत्य है कि हम जीभ से नाड़ी नहीं देख सकते। लेकिन उंगलियों से देख सकते हैं। गहराई से निरीक्षण करने पर हमें मालूम होता है उंगलियों के सिरों में उन्हें स्पर्श के अनुकूल ढालने के लिए उनका विशेष प्रावधान है। जहां भी अनुभूति की आवश्यकता अधिक स्पष्ट होती है वहीं हमें त्वचा की छोटी-छोटी घुमावदार मेंड़ें सी महसूस होती हैं। इन मेंड़ों की इस अनुकूलता में आन्तरिक सतह पर दबी हुई प्रणालिकाएं होती हैं जो पौपिला कहलाने वाली त्वचा की कोमल और मांसल प्रक्रियाओं को टिकाव और स्थापन प्रदान करती हैं। जिनमें संकेतन स्नायुओं के अन्तिम सिरों का आवास होता है। इस प्रकार स्नायु पर्याप्त सुरक्षित होते हैं और साथ ही साथ इतनी स्पष्ट भी दिखाई देते हैं कि लचीली त्वचा द्वारा उन्हें सम्प्रेषित प्रभावों को ग्रहण कर सकें और इस प्रकार स्पर्श-अनुभूति को जन्म दे सकें।

जहां तक स्नायुओं का प्रश्न है चिकित्सा विज्ञान बताता है कि शरीर व्यवस्था के अन्य किसी भाग की अपेक्षा हाथ में सर्वाधिक स्नायु होते हैं और हाथ के किसी भी हिस्से की तुलना में हथेली में स्नायु अधिक होते हैं। यह भी स्पष्ट हो चुका है कि पीढ़ियों से प्रयोग होते चले आने के कारण मस्तिष्क से हाथ तक के सभी स्नायु इतने विकसित हो चुके हैं कि हाथ अनायास अथवा सायास मस्तिष्क का हर प्रकार से तात्कालिक अनुचर बन चुके हैं।

एक अत्यन्त दिलचस्प चिकित्साग्रंथ में लिखा है–"प्रत्येक प्रत्यक्ष स्नायु वास्तव में एक खोल में दो स्नायविक वस्तु है इनमें से एक तो मस्तिष्क की क्रिया को शरीर के सम्बन्धित भाग तक पहुंचाता है और दूसरा उस भाग की क्रिया को मस्तिष्क तक पहुंचाता है।

इस संदर्भ में हाथ में विद्यमान कोषाणुओं पर ध्यान देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैरनर ने अपनी पुस्तक–"हाथ की रचना और विधान" में लिखा है कि हाथ के इन कोषाणुओं का अर्थ बहुत ही महत्पूर्ण है। यह अद्भुत आणविक पदार्थ उंगलियों की पोरों में और हाथ की रेखाओं में पाए जाते हैं और कलाई तक पहुंचते-पहुंचते लुप्त हो जाते हैं। इन कोषाणुओं में सबसे महत्वपूर्ण स्नायु रेशे का अन्तिम छोर होता है और यह शरीर के जीवित रहने की अवधि में कुछ विशेष कम्पन्न भी उत्पन्न करते हैं। और जैसे जीवन समाप्त होता है तो यह रुक जाते हैं।

मैसनर ने लिखा है–"मैंने एक वयस्क व्यक्ति की तर्जनी उंगली की पहली पोर की हथेली से सही सतह पर एक सौ आठ कोषाणुओं को और एक चतुर्वगीय रेखा में लगभग चार सौ प्रगिकाओं की गिनती की है।"

इन शोध्रों के पश्चात जीवन के दौरान इनसे उत्पन्न कम्पन, अभी या चटपटाने की ध्वनियों को लेकर प्रयोग किये गए। यह दिखाया गया कि अत्यन्त सूक्ष्म श्रवण शक्ति वाले मनुष्य हर मनुष्य से भिन्न और स्पष्ट कथनों को पकड़ सकते हैं। एक व्यक्ति के मामले में जिसे लेकर पेरिस में प्रयोग किया गया वह जन्मांध था। लेकिन प्रकृति ने आंखों के बदले उसे अत्यधिक श्रवण शक्ति प्रदान कर दी थी। प्रयोग करने पर पाया गया कि इन कोषाणुओं के कम्पनों को सुनकर वह किसी भी व्यक्ति के लिंग, आयु, स्वभाव, स्वास्थ्य यहां तक कि रोग अथवा मृत्यु से उसकी दूरी तक के बारे में बता सकता था।

अब हम चलते हैं उस विषय की ओर जो सम्भवतः ज्योतिष शास्त्र को लेकर अन्य किसी मुद्दे से बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है। वह है स्नायु और मस्तिष्क से सम्बन्धित एक तरल अथवा सार को लेकर विद्वानों के विचार।

इस सम्बन्ध में एक कोम्की का विचार है–"अनुभूति के अंगो से मस्तिष्क की अवधारणाओं का सम्प्रेषण स्नायविक तरल पदार्थ की गतिविधि, स्नायुओं के कम्पन या विद्युत अथवा विद्युतीय रसायन से मिलते-जुलते सूक्ष्म सार का श्रेय है।"

हम देखते हैं कि इस विचारधारां का उन व्यक्तियों द्वारा खुलकर प्रचार हुआ है जिन्होंने इस विषय पर गंभीर चिन्तन किया है। मूलर का विचार है–"संभवतः स्नायु मंडल और विद्युत की अवधारणा के बीच कोई ऐसी सह संवेदना का सम्बन्ध मौजूद है जो अभी तक अज्ञात है। कुछ उसी प्रकार का सम्बन्ध विद्युत और चुम्बकीय शक्ति के बीच विद्यमान पाया गया है।"

उन्होंने आगे कहा : हम अभी तक यह नही जान पाए हैं कि क्या कोई विचारतीत तरल अकल्पनीय गति से स्नायुओं द्वारा सम्प्रेषित प्रभाव के साथ दौड़ पड़ता है या नहीं। अथवा क्या स्नायु मंडल की गतिविधि में स्नायुओं में पहले से वर्तमान कोई अकल्पनीय विधान विद्यमान होता है या नहीं, जो मस्तिष्क के कम्पनों में भी स्थित होता है।

मुझे फ्रांस सुप्रसिद्ध विद्धान महान प्रोफेसर सैवरी आर्गेवर्दी की व्यक्तिगत रूप से जानने का गौरव प्राप्त है जिन्होंने अपने जीवन में अधिकांश समय रोगों की चिकित्सा में विद्युत प्रभावों का अध्ययन करने में लगाया। प्रोफेसर आर्गेवर्दी ने दैनिक जीवन में विद्युत की भूमिका को अपनी जानकारी के आधार पर अनेक उपचार कर दिखाये थे। उन उपचारों ने ही उन्हें इस विषय का अपने काल का महानतम आविष्कारी विद्वान बना दियां था।

बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि वे स्नायुमंडल की ऐसी टेलीग्राफिक व्यवस्था मानते हैं जो विचारों के प्रभाव को मस्तिष्क से शरीर तक पहुंचाती है। और यह सम्बन्ध हाथों के सम्बन्ध में अधिक विशिष्ट है।

सन् 1827 ईस्वी में हर्डर के पेरिस से प्रकाशित मानवता के इतिहास और विचार दर्शन पर एक पुस्तक लिखी थी। उसने अपनी उस पुस्तक में इस सिद्धांत का समर्थन किया

इन शोध्रों के पश्चात जीवन के दौरान इनसे उत्पन्न कम्पन, अभी या चटपटाने की ध्वनियों को लेकर प्रयोग किये गए। यह दिखाया गया कि अत्यन्त सूक्ष्म श्रवण शक्ति वाले मनुष्य हर मनुष्य से भिन्न और स्पष्ट कथनों को पकड़ सकते हैं। एक व्यक्ति के मामले में जिसे लेकर पेरिस में प्रयोग किया गया वह जन्मांध था। लेकिन प्रकृति ने आंखों के बदले उसे अत्यधिक श्रवण शक्ति प्रदान कर दी थी। प्रयोग करने पर पाया गया कि इन कोषाणुओं के कम्पनों को सुनकर वह किसी भी व्यक्ति के लिंग, आयु, स्वभाव, स्वास्थ्य यहां तक कि रोग अथवा मृत्यु से उसकी दूरी तक के बारे में बता सकता था।

अब हम चलते हैं उस विषय की ओर जो सम्भवतः ज्योतिष शास्त्र को लेकर अन्य किसी मुद्दे से बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है। वह है स्नायु और मस्तिष्क से सम्बन्धित एक तरल अथवा सार को लेकर विद्वानों के विचार।

इस सम्बन्ध में एक कोम्की का विचार है–"अनुभूति के अंगो से मस्तिष्क की अवधारणाओं का सम्प्रेषण स्नायविक तरल पदार्थ की गतिविधि, स्नायुओं के कम्पन या विद्युत अथवा विद्युतीय रसायन से मिलते-जुलते सूक्ष्म सार का श्रेय है।"

हम देखते हैं कि इस विचारधारा का उन व्यक्तियों द्वारा खुलकर प्रचार हुआ है जिन्होंने इस विषय पर गंभीर चिन्तन किया है। मूलर का विचार है–"संभवतः स्नायु मंडल और विद्युत की अवधारणा के बीच कोई ऐसी सह संवेदना का सम्बन्ध मौजूद है जो अभी तक अज्ञात है। कुछ उसी प्रकार का सम्बन्ध विद्युत और चुम्बकीय शक्ति के बीच विद्यमान पाया गया है।"

उन्होंने आगे कहा : हम अभी तक यह नही जान पाए हैं कि क्या कोई विचारतीत तरल अकल्पनीय गति से स्नायुओं द्वारा सम्प्रेषित प्रभाव के साथ दौड़ पड़ता है या नहीं। अथवा क्या स्नायु मंडल की गतिविधि में स्नायुओं में पहले से वर्तमान कोई अकल्पनीय विधान विद्यमान होता है या नहीं, जो मस्तिष्क के कम्पनों में भी स्थित होता है।

मुझे फ्रांस सुप्रसिद्ध विद्धान महान प्रोफेसर सैवरी आर्गेवर्दी को व्यक्तिगत रूप से जानने का गौरव प्राप्त है जिन्होंने अपने जीवन में अधिकांश समय रोगों की चिकित्सा में विद्युत प्रभावों का अध्ययन करने में लगाया। प्रोफेसर आर्गेवर्दी ने दैनिक जीवन में विद्युत की भूमिका को अपनी जानकारी के आधार पर अनेक उपचार कर दिखाये थे। उन उपचारों ने ही उन्हें इस विषय का अपने काल का महानतम आविष्कारी विद्वान बना दिया था।

बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि वे स्नायुमंडल की ऐसी टेलीग्राफिक व्यवस्था मानते हैं जो विचारों के प्रभाव को मस्तिष्क से शरीर तक पहुंचाती है। और यह सम्बन्ध हाथों के सम्बन्ध में अधिक विशिष्ट है।

सन् 1827 ईस्वी में हर्डर के पेरिस से प्रकाशित मानवता के इतिहास और विचार दर्शन पर एक पुस्तक लिखी थी। उसने अपनी उस पुस्तक में इस सिद्धांत का समर्थन किया

है। उसने स्नायविक तरल की चर्चा करते हुए यह स्वीकार किया है कि यह एक ऐसा रूप है जो विद्युत से भी अधिक सूक्ष्म है और मस्तिष्क के प्रभावों को स्नायुओं तक पहुंचाने का कार्य करता है।

सुविख्यात विद्धानों के ऐसे सभी विचार, जिन्होंने इस विषय के अध्ययन-मनन और चिन्तन में अपना समय लगया, पूरी तरह यह प्रगट करते हैं कि एक या दूसरे रूप के मस्तिष्क का प्रभाव रेखाओं पर नाखूनों पर यहां तक कि हाथ के हर भाग पर पड़ता है। इस सिद्धांत में अन्धविश्वास का कहीं कोई स्थान नहीं है। यह विचार ज्ञान की उपलब्धियों पर आधारित है और आवश्यक वर्गों द्वारा सम्बन्धित हैं। इसके अतिरिक्त आखिर यह और कुछ हो भी कैसे सकता है ?

जाने-माने अधिकारी विद्धानों का कहना है कि "हम प्रायः देखते हैं कि एक जीव वैज्ञानिक जब एक कंकाल का परीक्षण करता है तो जान जाता है कि कंकाल की हड्डियों की सतह पर जो अनियमित गिद्द अथवा भेड़ जैसा उभार है वे मांस-पेशियों और स्नायुओं की क्रिया और दबाव का ही परिणाम है।" एक वैज्ञानिक हड्डी के किसी टूटे अवशेष के आधार पर ही पूरे ढांचे को पहचान लेता है। मृतक प्राणी के शारीरिक अनुपातों, उनकी जाति, स्वाभाव, यहां तक की उसे प्रभावित करने वाले सम्भावित रोगों के सम्बन्ध में भी जान लेता है। यदि एक हड्डी के अवशेष के अध्ययन से यह सब कुछ सम्भव है तो हम शरीर के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग हांथ के सम्बन्ध से निरीक्षण करके क्या कुछ नहीं जान सकते ? इस दृष्टिकोण के अनुसार मेरा यह प्रश्न है।

क्या इस विचार में आपको कुछ भी मुर्खतापूर्ण और हास्यस्पद प्रतीत होता है कि एक ज्योतिषी को किसी भी हस्तरेखा सम्बन्धी सिद्धांत अथवा रेखाओं के अध्ययन से मुक्त रहकर हाथ का अध्ययन-निरीक्षण करने मात्र से हाथ के स्वामी के स्वास्थ्य, भूत, वर्तमान और भविष्य आदि के सम्बन्ध में जानने का प्रयास करना चाहिए बल्कि इस योग्य होना चाहिए?

हम पहले ही देख चुके हैं कि हाथ की रेखाओं का निर्धारण काम से नहीं होता जिस प्रकार रेखाएं काम से नहीं बदलतीं उसी प्रकार हाथ को निरन्तर मोड़ते रहने से भी नहीं बनती। यह ठीक है कि हाथ रेखाओं पर ही मुड़ता है। लेकिन यह भी सच है कि जहां हाथ का मुड़ना असम्भव होता है रेखाएं और चिन्ह हाथ पर वहां भी होते हैं और यदि यह बात रेखाओं के सम्बन्ध में सही है तो सभी रेखाओं के बारे में क्यों नहीं हैं ? फिर कुछ रोग (जैसे पक्षाघात) ऐसे हैं जिनके कारण रेखाएं पूरी तरह लुप्त हो जाती हैं। फिर भी हाथ पहले की तरह ही मुड़ता रहता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हाथ के मुड़ने का तर्क किसी प्रकार भी टिकता नहीं है।

क्या मस्तिष्क विज्ञान और हस्त विज्ञान का अध्ययन हस्तरेखा विशेषज्ञ के निरीक्षण के सहायक माने जा सकते हैं ? –जहां तक इस प्रश्न का सम्बन्ध है, प्रश्न करने वाला यदि थोड़ा सा भी विचार कर ले तो वह इस उत्तर से सन्तुष्ट हो जाएगा कि ऐसा होना किसी प्रकार भी आवश्यक नहीं है। हाथ का पूर्ण निरीक्षण इन दोनों बातों को साथ लेकर चलता है। हाथ का मस्तिष्क के हर भाग से सीधा सम्पर्क होता है। इसलिए वह न केवल सक्रिय विशेषताओं के सम्बन्ध में बताता है बल्कि उन विशेषताओं का भी निर्देशन करता है जिनका विकास अभी होना है या जो अत्याधिक प्रभावशाली हैं। जहां तक सामुहिक शास्त्र का प्रश्न है, चेहरा इतनी अधिक सरलता से नियन्त्रित हो जाता है कि उसे देखकर निगले हुए निष्कर्ष पूरी तरह सही नहीं हो सकते जबकि रेखाओं को तात्कालिक उद्देश्य की अनुकूलता के लिए परिवर्तित नहीं किया जा सकता। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बालज़ाक ने अपने ग्रंथ–"Come die Humaine" में एक स्थान पर लिखा है–"हम चुप रहने के लिए अपने होठों को बन्द रखने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। न देखने के लिए या अपने मन की भावना को छिपाने के लिए अपनी आंखें मूंद सकते हैं। अपनी भौहों के संचालन को रोक सकते हैं। अपने मस्तिष्क पर नियन्त्रण रख सकते हैं, लेकिन अपने हाथ पर इस प्रकार का काबू रख पाने में अस्मर्थ होते हैं। क्योंकि शरीर का कोई भी अन्य अंग हाथ से अधिक भावना सूचक नहीं होता।

आइए, अब हम इस विज्ञान द्वारा बताए जाने वाले भविष्य के प्रश्न पर विचार करें और सावधानी से उन कारणों का विश्लेषण करें जो इसके प्रति विश्वास के पक्ष में बताए जाते हैं।

सबसे पहले हमें यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि विभिन्न प्रकार के हाथों पर पाई जानें वाली विभिन्न रेखाओं को यदि मिला कर देखा जाने वाला अर्थ आज की नहीं बल्कि किए जा चुके उस पुरातन काल की बातें हैं। जब यह विज्ञान उन लोगों के हाथों में था जिन्होंने इसके विकास के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। अब जिस प्रकार चेहरे पर नाक या होंठों के सहज स्थान की पहचान की गई, उसी प्रकार हाथ का अध्ययन करते हुए एक ऐसा समय आया जब मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा की स्थिति के अनुसार पहचान की जाने लगी। इस प्रकार का निर्धारण मूल रूप में किस प्रकार खोज निकाला गया उसका विवेचन हमारे कार्यक्षेत्र में नहीं है। लेकिन इन निर्धारणों के सत्य को प्रमाणित किया जा चुका है। प्रमाणित किया जा सकता है। और सरसरी तौर पर कोई भी व्यक्ति हाथ का स्वयं निरीक्षण करके इसे स्वीकार कर लेगा।

इसलिए अगर इस क्षेत्र में यह प्रमाणित होता है कि मस्तिष्क रेखा पर बने कुछ चिन्ह एक या किसी दूसरी मानसिक विशेषता को बताते हैं, या जीवन रेखा पर बने विशेष चिन्हों का सम्बन्ध जीवन की लघुता या दीर्घता से है तो यह स्वीकार करना तर्कहीन नहीं हो

सकता कि इसी प्रकार के निरीक्षण से रोग, अरोग्य, पागलपन और मृत्यु आदि की भविष्यवाणी भी की जा सकती है। अगर और जोर देकर कहा जाए तो यह भी सही-सही बताया जा सकता है कि जीवन के किस पड़ाव पर पहुंच कर उस का विवाह होगा। कब समृद्धिशाली बनेगा या उसके विपरीत कुछ होगा।

इस प्रश्न का उत्तर देना मेरी सामर्थ्य से बाहर है कि कोई ऐसी चीज हो ही कैसे सकती है। लेकिन निम्नलिखित सिद्धान्त का प्रतिपादन मेरी कार्य सीमा से अवश्य बाहर नहीं है। कालयात्रा में प्रत्येक शताब्दी बीतने के साथ जैसे-जैसे प्रकृति के गूढ़ नियम स्पष्ट होते जाते हैं वैसे-वैसे मनुष्य इस तथ्य को पहचानता जाता है कि वह जिन्हें पहले रहस्य समझता था उनके पीछे कुछ ऐसे बंधे हुए नियम थे जिन्हें इससे से पहले वह जानता ही नहीं था। मैं इस सिद्धान्त का भी प्रतिपादन करना चाहूंगा कि अलग-अलग जीवन जीना हमारे लिए सम्भव नहीं है। आरम्भ में हमें भले ही ऐसा करना सम्भव प्रतीत हो। क्योंकि सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करने वाले नियमे हमें भी प्रभावित करते हैं। कि सम्पूर्णता के अंग के रूप में हम भी उन नियमों को प्राभावित करते हैं। इस प्रश्न का विवेचन करते हुए हमे देखते हैं कि हाथ कुछ सीमा तक भाग्य के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। क्योंकि इसे देखकर वर्षों पूर्व भविष्य का दर्शन किया जा सकता है। और क्योंकि हाथ का उन परिस्थितियों के प्रभाव से सम्बन्ध है जिन पर हमारा कुछ भी नियन्त्रण नहीं है। इसलिए इस प्रकार एक दिलचस्प और ज्ञानवर्धक सुयोग बनता है कि मनुष्य भाग्य और स्वतन्त्र इच्छा शक्ति के दोहरे नियम के प्रति संवेदनशील है।

मेरा इस सम्बन्ध में तर्क यह है कि निश्चय ही मनुष्य के पास स्वतन्त्र इच्छा शक्ति है, लेकिन कुछ सीमाओं के साथ। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार जीवन के अन्य क्षेत्रों की सीमाएं होती हैं। जिस प्रकार मनुष्य की शक्ति की, उसके कद या ऊंचाई की, उसकी आयु की या इसी प्रकार अन्य बातों की। स्वतन्त्र इच्छा शक्ति किसी सिलिन्डर के दोलन की तरह है जो दोलन निर्माण या जीवन के आरम्भिक शाश्वत यन्त्र को चलायमान रखता है।

बाइबिल के पृष्ठ पलटते हुए हम देखते हैं कि प्रारब्ध पूर्णतः अटल है। हर कहीं हमें ईश्वर की इच्चा लक्षित होती दिखाई देती है। यदि हम विश्व-इतिहास का पर्यवेक्षण करें तो राष्ट्रों का भाग्य अतीत की अंधकार भरी पृष्ठभूमि में पर्याप्त सान्त्वना देता दिखाई देता है। मनुष्य प्रारब्ध का दास है। रोम के शासक हों या एथेन्स के यूनानी सम्राट या मिस्त्र के फराओ–सबने अपनी-अपनी भूमिका निभाई और फिर आंख से ओझल गए। हम निर्माण की धीमी-मन्थर गति से बहती हुई धारा को देखते हैं जो हमें ऊंचा उठा कर धीरे-धीरे पूर्णता की ओर ले जा रही है। हमें इलसिए पीछे मुड़कर देखना चाहिए कि अतीत के अध्याय भविष्य के उपदेशक सिद्ध हो सकते हैं।

इतिहास के पृष्ठों में हमें ऐसा युग भी देखने को मिलता है जब विचारों की स्वतन्त्रता कर्म के सिद्धान्त तले दम तोड़ रही थी। हमें दासता का ऐसा युग भी मिलता है जब भारत

में राम का, मिस्र में मूसा का ओर यरोशलम में ईसा का प्रादुर्भाव हुआ था। जब लाखों-करोड़ों तत्व मिलकर एक विराट संकट उत्पन्न कर देते थे।

इतिहास बार-बार दोहराया ज्ञाता रहा है। और बार-बार किसी महान पुरुष को मोर्चा संभालना पड़ा है। लूथर नामक उस सामान्य साधू के अवतरण में क्या कोई विशेषता नहीं थी जो उसे अपने कन्धों पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी के बोझ को उठाना पड़ा था। हां, वह अवश्य अवतरित हुआ लेकिन मानवों की पुकार पर नहीं। उसके जन्म का कारण प्रारब्ध का लिखा था। प्रकृति एक दिशा में झुक गई थी। इसलिए प्रकृति के सन्तुलन को बनाए रखना आवश्यक था। ईश्वर, प्रकृति और भाग्य के नाम को लेकर कोई झगड़ा नहीं, आदि के तत्वों ने पैतृकता के नियमों के माध्यम से प्रभावी होते हुए उस एक व्यक्ति का निर्माण इस प्रकार किया कि आवश्यकता के पलों में वह एक ऐसा आधार बन गया कि असंख्य लोगों का भाग्य उस पर निर्भर हो गया था। नेपोलियन के सम्बन्ध में भी यही सत्य था, ज़ार्ज वाशिंगटन नामक बालक के सम्बन्ध में भी यही बात थी। पर बड़े और छोटे के सम्बन्ध में, जाति से जाति, वर्ग से वर्ग राष्ट्रपति से उपदेशक, बैंक के स्वामी से लेकर भिखमंगे तक हर व्यक्ति के सम्बन्ध में यही कहा जाएगा कि सब अपनी भूमिका निभाते हैं। हर व्यक्ति का अपने क्षेत्र में महत्व है। हैसियत है। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थान या स्थिति में जीवन के गीत में साज के तार के समान है। वह लय है, ताल है या बिगड़ा हुआ स्वर है, क्योंकि पूर्णता की उस अन्तिम शताब्दी में पूर्णता चिरन्तन है। इसलिए हम सभी उस महान संगीत की पूर्णता के समभागी हैं जिसके स्वर अधूरे स्वर या बेसुरे स्वर के हम इस समय भी सम भागी हैं।

क्या हमारे जीवन को बनाने और नियन्त्रित करने वाले किसी अदृश्य नियम, या किसी रहस्यमय कारण अथवा शक्ति में विश्वास करना कठिन है ? यदि एक-एक बार भी हमें ऐसा प्रतीत हो भी तो हमें उन अनेक बातों पर विचार करना चाहिए जिन का आधार उनसे कम ठोस है। लेकिन हंम उन पर विश्वास करते आये हैं। यदि हम स्थिर विचार रहें तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि अनेक धर्म, विचार धारणायें और सिद्धान्त जिनके प्रति न केवल जन समूह के मन में आस्था है बल्कि जो बुद्धिजीवियों के ठोस विश्वास के भी केन्द्र रहें हैं। यदि लोग आसानी से इस बात पर विश्वास करने के लिए तैयार हैं कि इस जीवन के बाद भी दूसरा जीवन है (जिसके सम्बन्ध में हमारे पास कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है) तो क्या प्रगटता या भविष्यवक्ता अर्थात होनी के सिद्धान्त जो कि युक्ति संगत हैं, उनका समर्थन करना नितान्त असंगत होगा ?

इस सम्बन्ध में हम पाठकों का ध्यान अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान डुगाल्ड स्टीवर्ड की पुस्तक (Out Lines Of Moral Philosophy) की और आकृष्ट करते हैं। जिसमें लिखा है–'समस्त दार्शनिक ज्ञान की खोज और सम्पूर्ण व्यवहारिक ज्ञान जो हमारे

जीवन के संचालन का मार्ग दर्शन करते हैं घटनाओं के अनुक्रमण के नियमित विधान के पूर्वानुमान पर आधारित हैं। विकसित मस्तिष्क में घटित होने वाली घटनाओं को विगत जीवन के अनुभव के आधार पर धारणा बनाने में समर्थ होते हैं।

इस प्रकार मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता भी है और दास भी है। वह केवल अपने अस्तित्व या अपनी विद्ववता से ऐसे विधान सक्रियता में लाता है जिनकी प्रतिक्रिया उस पर होती है। और उसके माध्यम से दूसरों पर होती है। जो वर्तमान है वह अतीत का परिणाम है और जो भविष्य मे होने वाला है उसका कारण भी वर्तमान है। विगत जीवन के कर्म ही वर्तमान को प्रभावित करते हैं और वर्तमान के कर्म भविष्य पर अपना प्रभाव डालते हैं। मानव जीवन का यही क्रम है जो सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा है और जब तक सृष्टि है यह क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा।

इसलिए यह स्वीकार करना पड़ेगा कि भाग्य का सिद्धान्त अनिष्टकारी होने के स्थान पर इष्टकारी सिद्ध होता है। वह स्त्रियों और पुरुषों को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को समझने पर मजबूर करता है। उन्हें सिखाता है कि अपना उद्धार करने के लिए अपना ध्यान केवल अपनी सुरक्षा और कुशलता पर ही केन्द्रित नहीं रखना चाहिए दूसरों के प्रति भी संवेदनशील होना आवश्यक है हम जिस मत का अनुपालन और अनुमोदन कर रहें हैं, समाज के सभी वर्गों के लिए उपयुक्त होगा। अपनी निस्वार्थ भावनाओं द्वारा लोगों को ऊंचा उठायेगा और उनके दृष्टिकोण को उदार तथा विस्तृत बनायेगा। हठधर्मी के स्थान पर उन्हें सत्य की सच्चाई दिखाई देगी। उनको यह शिक्षा मिलेगी कि हम मानवता की सन्तान हैं। हमें भाई-बहिन के नाते एक-दूसरे की सेवा करनी चाहिए। इससे मानव जाति को पूर्णता और कुशलता प्राप्त होगी। समस्त मानव जाति को लाभ पहुंचेगा और उन्हें भी प्रगतिशीलता प्राप्त होगी जो हमारे बाद इस संसार में आने वाले हैं।

प्रारब्ध या भाग्यवाद का यह सिद्धान्त लोगों के काम करने में व्यवधान उत्पन्न नहीं करता बल्कि उनको और गतिशील बनाता है। वह उन्हें यह विश्वास नहीं दिलाता कि जो करोगे उसका पुरुस्कार तुम्हें मिलेगा वह मनुष्य को इस बात की सन्तुष्टि दिलाता है कि वह जो कुछ कर सकता था वह उसने किया है। वह कठिन परीक्षा या कठिनाइयों के समय मनुष्य को धैर्य रखने की, विपत्तिकाल में संतोषी बने रहने की सफलता प्राप्त होने पर विनम्र बने रहने की और जीवन की प्रत्येक स्थिति में नैतिक मापदण्ड बनाए रखने की प्रेरणा और विवेक देता है।

इसके विपरीत इच्छा शक्ति की स्वतंत्रता के अनुसार अपने जीवन को नियोजित करने का सिद्धान्त, जिसका अकसर लोग पालन करते हैं, क्या परिणाम उत्पन्न करता है ? मानव जाति की अनन्तता में बड़े-बड़े महान व्यक्ति लघुतम अणु में रूपान्तरित हो जाते हैं। जीवन स्तर से गिरे हुए दिखाई देते हैं। लाखों-करोड़ों को कुचलते हुए एक-दूसरे का

शोषण करते हुए अपनी स्वतंत्रता के लिए अपनी सम्पूर्ण प्रचण्डता और उत्कंठा से संघर्ष करते दिखाई देते हैं। ऐसे जीवन में न तो सन्तुष्टि का चिन्ह होता है और न शान्ति तथा सुन्दरता ही होती है। नई आस्थाओं या धार्मिक विश्वासों में ऐसा आवश्यक भी नहीं होता की जीवन के अन्त में इस प्रकार की प्रवंचनाओं से मुक्ति या अपने कर्मों का कोई पुरुस्कार मिलेगा।

दूसरी ओर प्रारब्ध या भाग्यवाद पर सच्ची आस्था रखने वाला व्यक्ति अपने हाथों को रोक कर प्रतीक्षा नहीं करेगा। वह उनसे काम लेगा सन्तोष और तत्परता से अपने काम में जुट जाएगा। यह विश्वास लेकर कर्मपथ पर अग्रसर होगा कि वह जिस जिम्मेदारी के बोझ को सम्भाल रहा है वह उस पर इसलिए डाला गया है कि उसे शक्ति मिलेगी वह दूसरों का बोझ हल्का कर सके। वह यह अनुभव करेगा कि वह जीवन श्रंखला की एक कड़ी है जो अनादि और अनन्त है। भले ही कड़ी छोटी सी हो फिर भी उसका अपना प्रयोजन होता है। उसे सन्तोष के साथ सहन करना होगा और अपनी प्रतिष्ठा के साथ जूझना होगा। न तो सफलताएं उसे घमण्डी बनायेंगी और न असफलताएं उसके मनोबल को गिरायेंगी। वह जीवन में भले-बुरे सभी कर्म करेगा। हम सब भी ऐसा ही करते हैं। बुराई भी उतनी ही आवश्यक है जितनी अच्छाई। लेकिन जो भी करेगा उसमें अपना पूरा प्रयत्न लगा देगा और अन्त में–अन्त वास्तव में है ही नहीं। क्योंकि यदि जीवन के बाद कोई दूसरा जीवन न भी हो तो भी वह मिट्टी के उन कणों में बना रहता है जिनमें से वह आया था। लेकिन आत्मा का कोई अस्तित्व यदि होता है तो वह अनादि अनन्त आत्मा का अंश होता है और इस प्रकार सबकी सफलता में उसे भी सफलता के दर्शन होते हैं।

मेरे मत के अनुसार प्रारब्ध और भाग्यवाद का यही सिद्धान्त है जिसका हाथ के अध्ययन से प्रतिपादन किया जाता है। यही वह मत है जिसे धार्मिक कट्टरपंथी घृणा की दृष्टि से देखते थे और जिसे ईश्वरीय आदेशों के विरुद्ध माना जाता था। हम इस रहस्य को जानने में सदैव असमर्थ रहेंगे कि किस सृजन शक्ति द्वारा हाथों में विभिन्न प्रकार के चिन्ह अंकित होते हैं। लेकिन हमारे पास उन पर अविश्वास करने का कोई युक्तिसंगत कारण नहीं है।

क्या कोई व्यक्ति कह सकता है–"मैं जीवित नहीं रहना चाहता क्योंकि मैं नहीं जानता कि जीवन कैसे बना था। मैं यह सोचना नहीं चाहता क्योंकि मैं सोचविचार की प्रक्रिया ही नहीं जानता।" हमारे सामान्य जीवन में अनेक रहस्यपूर्ण बातें होती हैं जिन्हें हमारी सीमित बुद्धि समझ पाने में समर्थ नहीं होती। लेकिन इसी कारण से हम उसका परित्याग तो कर नहीं देते। सभी धर्मों के विशिष्ट विचार के इस तथ्य पर आस्था प्रगट की है कि हमारे नियन्त्रण से परे एक परम शक्ति है जिसके निर्धारित नियमों के अनुसार ही हमारे जीवन का मानचित्र बनता है।

इस सम्बन्ध में प्रोफेसर टिन्डल का यह कथन उल्लेखनीय है–"जीवन और उसकी परिस्थितियां एक अज्ञात और अपरोक्षीय शक्ति या सत्ता के परिचालन का श्रीगणेश कर

देती है। हमें न तो उसकी उत्पत्ति का ज्ञान है न उसके अन्त का। परिकल्पना या निम्नीकर उन लोगों की जिम्मेदारी है जिन्होंने सृष्टि के सिहांसन पर अपनी काल्पनिक मू स्थापित कर रखी है।"

वाल्टेयर ने कहा है–"वह एक ऐसी शक्ति है जो हमसे सलाह-मशवरा किए बिना हमारे अन्दर सक्रिय हो जाती है।"

इसी सम्बन्ध में इमर्सन का यह कथन भी उल्लेखनीय है–"अगर हम रोजाना अपने का और होने वाली घटनाओं पर ध्यान दें और उन पर विचार करें तो हम देखेंगे की हमारी इच्छ शक्ति से भी अधिक कोई अन्य शक्तिशाली विधान है जो उनका विनियमन करता है।

उपर्युक्त बातों से आपको ज्ञात हो गया होगा की हस्त विज्ञान तथा निगूढ़ विज्ञा किस प्रकार स्वयं को जीवित रख पाने में समर्थ रहा है। हमने देखा है कि कठोर नियम वाला भौतिक विज्ञान ऐसे तथ्य प्रस्तुत करता है जो हस्त विज्ञान के पक्ष में जाते हैं। हम प्राकृतिक दृष्टिकोण से उसकी परीक्षा की है और उनमें वह उत्तीर्ण हुआ है। हमने उनक कर्म के दृष्टिकोण से भी परखा है और उसको कर्मानुकूल पाया है। हमने निष्कर्ष निकाल है कि यह विषय जनसाधारण की भलाई का ही साधन है। क्योंकि जैसा हमने कहा है वि इसके सिद्धान्त मानव जाति के अपनी जिम्मेदारियों को समझने में समर्थ बनाते हैं। इनवे द्वारा हमें भविष्य के सम्बन्ध में चेतावनी मिलती है। इस विज्ञान में सर्वाधिक महत्वपू गुण यह है कि यह स्वयं को पहचानने में सहायक सिद्ध होता है। इसकी सच्चाई औ यथार्थता के कारण हमें इसे प्रोत्साहन देना चाहिए। और अधिक समृद्ध करना चाहिए। इसे सीखना और दूसरों को सिखाना चाहिए। उसे और व्यापक बनाने के लिए उसका समर्थन करना चाहिए।

अन्त में मैं उस महिला या पुरुष से उस ज्ञान की वास्तविकता के विरुद्ध फास्टर के तर्क को आधार बनाते हुए कहूंगा कि कारण प्रमाण और तथ्यों आदि के कारण जो इस पर संदेह करते हैं वह ऐसा व्यवहार करके एक प्रबुद्ध व्यक्ति के नाते अपने प्रति तो अन्याय नहीं ही करते। आखिर क्यो ? जब तक वे मानवता को नियन्त्रित करने वाले हर नियम का ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते तब तक हो सकता है कि वे जिस नियम के अस्तित्व को नकार रहे हैं उसका उन्हें ज्ञान ही न हो। जब तक वे ब्रह्माड के हर भाग में विचरण नहीं कर आते तब तक यह भी कहा जा सकता है कि सम्भव है पूर्ण सत्य उसी भाग में हो जहां वे जा नहीं पाये हैं। जब तक वह उस शक्ति को नहीं जान लेते जो जीवन का निर्माण करती हैं, हो सकता है वे जिस शक्ति को नहीं जान पाये हैं वह शक्ति वही हो जो हाथों पर चिन्ह अंकित करती है।

—कीरो

पहला खंड

1. हाथों और उंगलियों की बनावट

हस्तरेखा विज्ञान का वास्तविक अर्थ पूरे हाथ का अध्ययन है। यह अलग बात है कि उसे दो भागों में विभाजित कर दिया गया है। यह दोनों जुड़वां विज्ञान हैं हाथ की आकृति और हाथ की रेखाएं। हाथ की आकृति का सम्बन्ध हाथों और उंगलियों की बनावट से है। इससे व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व के पैतृक प्रभावों का पता चलता है। जबकि हस्तरेखा विज्ञान का सम्बन्ध हाथ पर बनी रखाओं तथा चिन्हों से और मानव के भूत, वर्तमान तथा भविष्य की घटनाओं से सम्बन्धित होता है।

इसलिए यह बात सुगमता से समझी जा सकती है कि दूसरा भाग पहले भाग के बिना अधुरा है। इसलिए इस शास्त्र का या फिर हाथ का अध्ययन करते समय अध्येता को हथेली पर बनी रेखाओं और चिन्हों का निष्कर्ष निकालने से पहले हाथ की आकृति, गठन, नाखूनों आदि का निरीक्षण करना आवश्यक है। कुछ लोग हाथ की बनावट, गठन, आकृति नाखून और चमड़ी आदि को कतई महत्व नहीं देते। वे केवल हाथ की रेखाओं को ही महत्वपूर्ण मानते हैं।

इस विज्ञान का अध्ययन करने वाले अगर गम्भीरता से विचार करें तो उन्हें स्वयं ही पता चल जाएगा कि हाथ के इन अंगों को महत्व न देना कितनी बड़ी भूल है। कोई भी विषय हो अगर वह अध्ययन के योग्य है तो उसका पूर्ण अध्ययन होना ही चाहिए। दूसरी बात, हाथों की बनावट का अध्ययन हाथ की रेखाओं की अपेक्षा अधिक सरल है। इसलिए दिलचस्प भी है। क्योंकि इसके द्वारा कोई भी व्यक्ति भले ही वह मन्दिर में बैठा हो, ट्रेन में यात्रा कर रहा हो, किसी सैलून में हो या किसी संगीत सभा में—वहीं बैठा-बैठा अपरिचित व्यक्तियों के चरित्र का बड़ी आसानी से अध्ययन कर सकता है।

हाथों की बनावट में सम्पूर्ण राष्ट्रों की चारित्रिक विशेषताएं छिपी रहती हैं। और उन विशेषताओं का अध्ययन आवश्यक है। आगे चलकर मैं प्रयत्न करूंगा कि ऐसी कुछ प्रमुख विशेषताओं के सम्बन्ध में आपको बताऊं जिन्हें मैंने इस शास्त्र का अध्ययन करते हुए देखा है। हाथों की बनावट में विभिन्न अन्तर पाया जाता है। हाथों का विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्ध पाया जाता है। यह भी प्रमाणित हो जाता है कि हम अपनी इच्छा शक्ति के द्वारा अपने शारीरिक अभाव को सुधार सकते हैं, उसमें परिवर्तन भी कर सकते हैं कुछ लोग किन्हीं विशेष कार्यों के लिए दूसरों की अपेक्षा अधिक उपयुक्त होते हैं। हस्तरेखा विज्ञान

का तात्कालिक क्षेत्र यही है। इसलिए सबसे पहले हम विभिन्न प्रकार के हाथ, उसके परिवर्तनों तथा व्यक्ति के चरित्र तथा मानसिकता आदि के सम्बन्ध में अध्ययन करेंगे।

हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार हाथ सात प्रकार के होते हैं और हर प्रकार के हाथ के सात उपप्रकार होते हैं।

सात प्रकार के हाथ ये हैं:–

1. अविकसित या निम्न श्रेणी का हाथ
2. वर्गाकार या उपयोगी हाथ
3. चमकदार चौड़ा या स्वाभाविक गति वाला हाथ
4. दार्शनिक या गांठदार हाथ
5. कलात्मक या सूक्ष्माकार हाथ
6. मनोवैज्ञानिक या आदर्श हाथ
7. मिश्रित हाथ

विभिन्न हाथों की आकृति आदि को देखकर हाथों के ये सात प्रकार निर्धारित किए गए हैं। जो राष्ट्र सभ्य हैं उनमें अविकसित हाथ प्रायः मूल रूप के दिखाई नहीं देते। इसलिए हम वर्गाकार हाथ की बात करते हैं।

विकसित या वर्गाकार हाथ सात प्रकार के होते हैं–

1. छोटी उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ
2. लम्बी उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ
3. गांठदार उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ
4. चपटी उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ
5. सूक्ष्माकार उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ
6. मनोवैज्ञानिक उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ
7. मिश्रित उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

2. अविकसित या निम्नश्रेणी का हाथ

इस प्रकार के हाथ का सम्बन्ध मनुष्य की मानसिकता की निम्नता को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार का हाथ देखने में मोटा, भद्दा और भारी-थुलथुली हथेली में होता है। इसकी उंगलियां और नाखून छोटे होते हैं (रेखाचित्र 1)

इस हाथ का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि सबसे पहले इस हाथ की हथेली और उंगलियों की लम्बाई पर ध्यान दिया जाए। व्यक्ति की बुद्धि का हथेली और उंगलियों की लम्बाई से गहरा सम्बन्ध है। हाथों का अध्ययन करने से आज तक कोई ऐसा हाथ देखने में नहीं आया जिसकी उंगलियों की लम्बाई हथेली से अधिक हो। उंगलियों की लम्बाई हथेली के बराबर या लगभग उतनी तो पाई जाती है। लेकिन अकसर ऐसा कोई हाथ देखने में नहीं आया जिसकी हथेली और उंगलियों की लम्बाई समान हो। अगर हथेली की लम्बाई की अपेक्षा उंगलियों की लम्बाई अधिक हो तो वह व्यक्ति बुद्धिप्रधान होता है।

डाक्टर कैर्न ने मानव शरीर आकृत विज्ञान पर अपनी पुस्तक के में लिखा है–"हिंस्र पशुओं ने हाथों की हथेली की हड्डियां ही उनका पूरा हाथ होती हैं।"–अर्थात हाथ की हथेली व्यक्ति के स्वभाव को प्रदर्शित करती है। हथेली की कठोरता व्यक्ति के स्वभाव की कठोरता और पाशविकता को प्रकट करती है। अविकसित हाथ की हथेली कड़ी और मोटी होती है भद्दी होती है और उस पर रेखाएं बहुत कम होती हैं, उंगलियां छोटी होती हैं, इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति के स्वभाव में कठोरता पाशविकता की सीमा तक होती है। उसका अपनी इच्छाओं तथा कार्यों पर कोई नियन्त्रण नहीं होता। उनमें रूप, रंग, सौन्दर्य आदि के प्रति कोई रुचि नहीं होती। नाखून वाली पोर भारी, भरी-भरी और सामान्यतः वर्गाकार होती हैं। ऐसे व्यक्तियों का स्वभाव हिंसक होता है और वे अपनी वृत्तियों के दास होते हैं। लेकिन उनमें साहस नहीं होता। लेकिन कम, क्रोध या विनाश की प्रकृति से अन्धे होकर किसी की हत्या तक कर सकते हैं। उनमें तर्क संगत चतुराई नहीं होती बल्कि स्वभाव में चालाकी और धूर्तता पाई जाती है। उनमें महात्वाकांक्षा का आभाव होता है। खाना-पीना और सोना तथा मर जाना ही उनके जीवन का सिद्धान्त होता है।



(अविकसितत हाथ–रेखाचित्र 1)

3. वर्गाकार हाथ और उसके उपविभाग

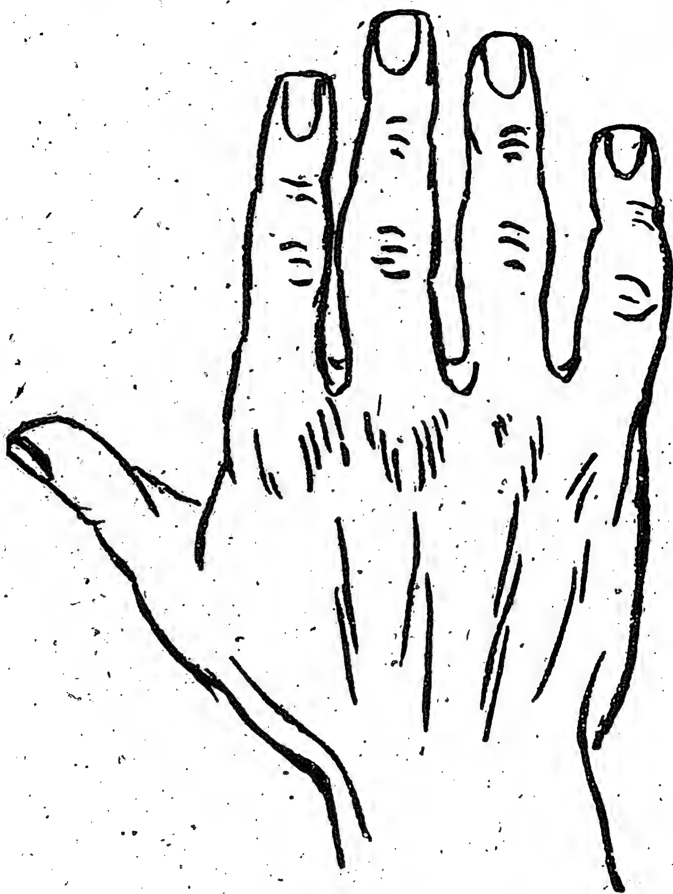
वर्गाकार हाथ का अर्थ है--हथेली का कलाई के पास वर्गाकार होना। जो उंगलियों की जड़ों के पास वर्गाकार हों और जिसकी उंगलियाँ भी वर्गाकार हों (रेखाचित्र 2)

इस प्रकार के हाथ को उपयोगी हाथ भी कहा जाता है। क्योंकि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों में इस प्रकार के हाथ मिलते हैं। इन हाथों के नाखून भी वर्गाकार लेकिन छोटे होते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति अपने स्वभाव तथा दैनिक आचरण से समय के पाबन्द और व्यवहार में खरे पाये जाते है। सत्ता का सम्मान करते हैं और उनमें अनुशासन के प्रति स्वाभाविक लगाव होता है। नियम और सिद्धान्त प्रिय होते हैं। उनके जीवन में हर वस्तु के लिए स्थान होता है और हर वस्तु का एक निश्चित स्थान होता है। वह झगड़ालू नहीं होते लेकिन दृढ़ निश्चयी होते हैं। वे शान्तिप्रिय होते हैं। हर काम को रुचि के साथ करना उनका स्वभाव होता है। उनमें धैर्य की कमी नहीं होती। वे निराशावादी नहीं होते। भौतिकवाद के प्रति उनका सामान्य झुकाव रहता है। धार्मिक कट्टरता उनमें नहीं पाई जाती। विचारों की अपेक्षा निश्चिय सिद्धान्त उन्हें प्रिय होते हैं।

ऐसे व्यक्तियों में मौलिकता और कल्पनाशीलता कम पाई जाती है। वे दूसरों के अनुकूल कम ही ढल पाते हैं। अल्पभाषी होती हैं। अपनी कुशलता इच्चा शक्ति की दृढ़ता और अपनी चारित्रिक शक्ति के कारण उन्हें अपने कार्य क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। यहां तक कि अपने से अधिक गुणवान और बुद्धिमान प्रतिस्पर्द्धियों से कहीं आगे निकल जाते हैं।

व्यावहारिक शास्त्रों और निश्चित विज्ञानों को प्राथमिकता देते हैं। कृषि और वाणिज्य वृद्धि और पारिवारिक दायित्वों को निभाना उनके स्वभाव में शामिल होता है। हालांकि वे प्रेम का प्रदर्शन नहीं करते लेकिन उनके मन में सभी के लिए स्नेह भरा होता है। अपने वचन के पक्के, और वफादार होते हैं। मित्रता को प्राण देकर भी निभाते हैं। अपने सिद्धान्तों के प्रति कट्टरता और ईमानदारी उनकी सबसे बड़ी विशेषता होती है। जो बात उनकी समझ से परे होती है उस पर वह विश्वास नहीं करता।



चित्र— 2
वर्गाकार या उपयोगी हाथ

छोटी वर्गाकार उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

ऐसे हाथ अकसर देखने में आते हैं और हाथ की यह विशेषेता सहज ही पहचान में आ जाती है। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति पक्के भौतिकवादी होते हैं। ऐसे व्यक्तिओं का जीवन सिद्धान्त होता है–जो कुछ अपनी आंखों से देखता हूँ और कानों से सुनता हूँ उसी पर विश्वास करता हूँ–ऐसे हाथ वाले व्यक्ति हठी होते हैं। और हठ संकुचित मानसिकता का सूचक होती है। उनकी व्यवसाय में रुचि होती है। व्यवहारिक होते हैं। कृपणता उनके स्वभाव में नहीं होती। लेकिन धन एकत्र करना उनका स्वभाव होता है। अपनी बुद्धि और परिश्रम से पर्याप्त धनोपार्जन करते हैं।

लम्बी उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

लम्बी उंगलियों वाले वर्गाकार हाथ वाले व्यक्ति का मानसिक विकास छोटी वर्गाकार उंगलियों वाले हाथ के व्यक्ति से कहीं अधिक होता है। वह हर बात को वैज्ञानिक ढंग से जांचने परखने के बाद ही उसे स्वीकार करता है। वह पूर्वाग्रहों से प्रभावित नहीं होता। बड़ी सावधानी और सलीके से चलते हुए तर्कसंगत निष्कर्षों तक पहुंचना उसकी विशेषता होती है। इसलिए ऐसे व्यक्ति वैज्ञानिक या व्यवसायी होते हैं।

गठीली उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

इस प्रकार के हाथों की उंगलियां गठीली भी होती हैं और लम्बी भी होती हैं। योजना बनाना, प्रत्येक कार्य का सूक्ष्म विवरण एकत्र करना उनका स्वभाव होता है। निर्माण कार्यों में रुचि होती है। इस प्रकार के हाथ वाला व्यक्ति भले ही आविष्कारक न बन सके लेकिन महान शिल्पी और गणितज्ञ अवश्य होते हैं। अगर ऐसा व्यक्ति विज्ञान या चिकित्सा के क्षेत्र में प्रवेश कर ले तो किसी विशेष क्षेत्र को ही चुनता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण के प्रति स्वाभाविक लगाव होने के कारण उस क्षेत्र में विशेपता प्राप्त कर लेता है।

चपटी उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति अधिकांश आविष्कारक होते हैं जीवन की उपयोगी वस्तु का निर्माण करते हैं। कुशल इंजीनियर होते हैं। टेकनीशियन होते हैं। हर प्रकार की मशीनों के निर्माण तथा संचालन में उनकी रुचि होती है।

शंकु के आकार की उंगलियों वाला हाथ

इस हाथ वाले व्यक्तियों की रुचि संगीत प्रधान होती है। वर्गाकार हाथ वास्तव में एक अध्येता हाथ होता है। हाथ के वर्गाकार होने के कारण व्यक्ति में व्यावहारिक शक्ति की कमी नहीं होती। उंगलियों का नुकीलापन व्यक्ति को अन्तश्चेतना की प्रेरणा प्रदान करता है। संगीत में सम तथा विषम स्वर ज्ञान से उठकर कल्पना तथा आदर्श से गुजरते हुए अज्ञात लोक में पहुंच जाते हैं। क्योंकि संगीतकार का सम्बन्ध विचार प्रधान ठोस, नियमबद्ध और ज्ञात धरातल से उठकर अग्रगामी प्रकृति से अवश्य होता है। संगीत रचना के लिए एक विशिष्ट और अनिवार्य लगाव की आवश्यकता होती है।

मैंने अनेक संगीतकारों के हाथों को देखा है, इस सिद्धान्त को भंग होते मैंने कहीं नहीं देखा। साहित्यकारों पर भी यही सिद्धान्त लागू होता है। आमतौर पर हस्तरेखा के शास्त्रों का मत है कि जिस व्यक्ति के हाथ की उंगलियां शंकु के आकार की हों कला से उसका गहन सम्बन्ध होता है।

शंकु हाथ वाले अत्यधिक कलात्मक अभिरुचि वाले एक व्यक्ति ने मुझसे कहा था—"एक कलाकार के लिए आवश्यक है कि वह अपने भीतर से कलाकार हो। यही पर्याप्त है। संसार के प्रमाण पत्र तो समर्थन मात्र होते हैं।"

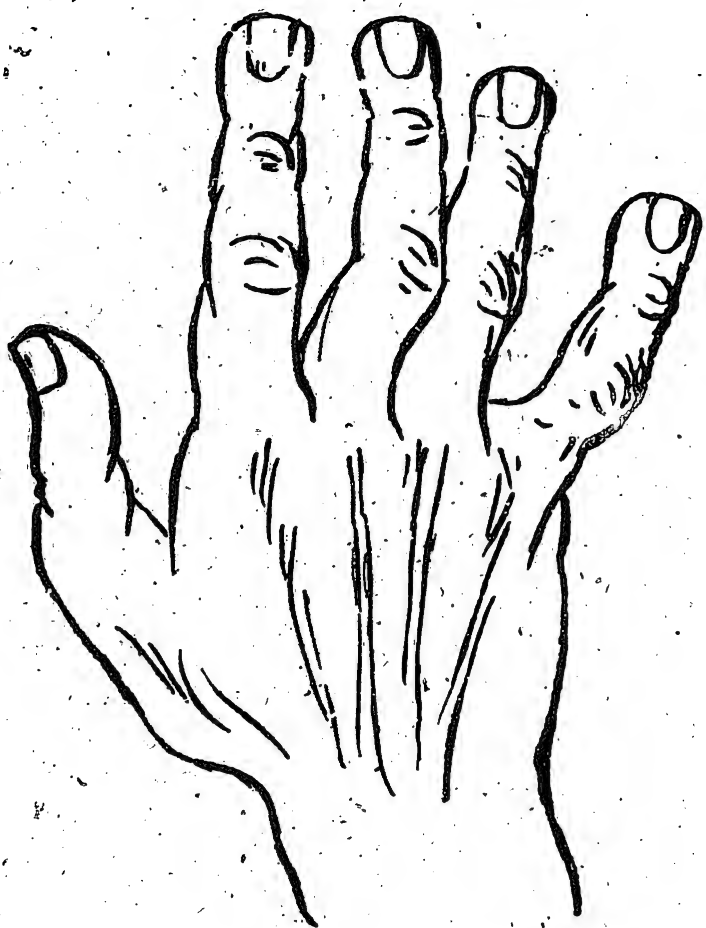
मैंने उत्तर दिया "हां, आपके स्वभाव को देखते हुए तो इतना ही पर्याप्त है। लेकिन संसार के लिए पर्याप्त नहीं है। संसार तो हीरे को चमकते और सोने को दमकते देखना चाहता है। अगर फूल अपने खिलने मात्र से पर्याप्त समझने लगे तो वह अपनी सुगन्ध को पृथ्वी पर फैलने से रोक लेगा। जबकि वर्गाकार हाथ वाले व्यक्ति अपनी शक्तियों का भरपूर उपयोग सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए करेगा।"

मनोवैज्ञानिक उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

ऐसे वर्गाकार हाथ जिनकी उंगलियां सम्पूर्ण रूप से मनोवैज्ञानिक हों बहुत ही कम मिलते हैं। इन्हें वर्गाकार हथेली, लम्बी-नुकीली उंगलियों और लम्बे नाखूनों से मिश्रित हाथ अकसर दिखाई दे जाते हैं। इन विशेषताओं का संमिश्रण उनके जीवन का श्रीगणेश तो बहुत ही सुन्दर ढंग से करता है। लेकिन उन्हें किसी न किसी सनक का दास बना देता है। किसी भी काम को वे बड़े उत्साह से आरम्भ करते हैं लेकिन कुछ समय बाद ही उसे अधूरा छोड़ देते हैं। यदि वे चित्रकार हैं तो उनके स्टूडियो में अधूरे चित्र और यदि व्यापारी है तो उनके आफिस में अधूरी योजनाओं के ढेर आपको स्पष्ट दिखाई दे जाएंगे। इन विशेषताओं के गुणों वाला व्यक्ति जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

मिश्रित उंगलियों वाला वर्गाकार हाथ

इस प्रकार के हाथ स्त्रियों के कम और पुरुषों के अधिक होते हैं। इस प्रकार के हाथ में प्रत्येक उंगली का आकार पृथक होता है। किसी हाथ की सारी उंगलियों भिन्न-भिन्न आकार की होती हैं और किसी हाथ की दो या तीन उंगलियों का आकार भिन्न होता है। लेकिन ऐसे हाथों का अंगूठा काफी लचकदार होता है और बड़ी आसानी से बीच के जोड़ पर मुड़ जाता है। तर्जनी अंगुली अकसर नुकीली होती है।



चित्र— 3
चमचाकार या चपटा हाथ

4. चमचाकार या चपटा हाथ

चमचाकार हाथ की उंगलियों के अगले सिरे ही फैले हुए नहीं होते बल्कि हथेली का कलाई के पास वाला भाग या उंगलियों के मूल के पास का स्थान फैला हुआ होता है (चित्र संख्या 3)।

जब हथेली की बनावट कलाई के पास अधिक चौड़ी होती है तो वह उंगलियों की ओर बढ़ती हुई कुछ नुकीली हो जाती है। लेकिन इसके विपरीत जब उंगलियों की जड़ के पास हथेली अधिक चौड़ी होती है तो हथेली कलाई की ओर नुकीली होती चली जाती है।

हाथ की इन दो स्थितियों की चर्चा करने से पहले चपटे हाथ के महत्त्व की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

यदि चमचाकार हाथ कठोर और दृढ़ हो तो उस व्यक्ति का स्वभाव अधीर और उत्तेजनापूर्ण होगा। लेकिन उसमें कार्य करने की शक्ति और उत्साह प्रचुर मात्रा में होता है; यदि हाथ कोमल, शिथिल और छिलछिला हो तो उस व्यक्ति के स्वभाव में अस्थिरता और चिड़चिड़ापन होता है। इस प्रकार का व्यक्ति कभी तो काम बड़े उत्साह से करता है और कभी बिल्कुल शिथिल हो जाता है। तन्मयता से निरन्तर कोई भी काम कर पाने की सामर्थ्य उसमें नहीं होती।

लेकिन उनमें एक विशेष गुण होता है। उनमें काम करने की लगन, आत्म निर्भरता और कार्यशक्ति की कमी नहीं होती। काम करने की प्रकृति उन्हें और अधिक कार्यशील बना देती है। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्तियों की दिलचस्पी नए-नए स्थानों, देशों, मार्गों की खोज, समुद्री जहाज चलाने, नए-नए आविष्कार करने या प्रकृति सम्बन्धी नए-नए सिद्धान्तों को बनाने में होती है। बड़े-बड़े इंजीनियरों और टेकनीशियनों के हाथ प्रायः चमचाकार होते हैं।

लेकिन इस प्रकार के हाथ उपर्युक्त व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं होते। जीवन के अन्य क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों में भी पाए जाते हैं। सामान्य रूप से चमचाकार हाथ बड़ा होता है। उंगलियां बड़ी-बड़ी और सुविकसित होती हैं। उन व्यक्तियों में आत्म निर्भरता कूट कूटकर भरी होती है। उनकी यही मनोवृत्ति और उत्साह उन्हें संकटों की चिन्ता न कर के नए-नए स्थानों को खोजने, नए-नए सिद्धान्तों, नई-नई बातों और नए-नए आविष्कार करने की प्रेरणा देते हैं और उन्हें सफलता प्रदान करते हैं। वे कभी भी दूसरों का अनुसरण नहीं

करते। अपना मार्ग स्वयं ही खोजते और निर्धारित करते हैं। वे किसी भी स्थिति में हों, किसी भी क्षेत्र में हों स्वयं को ऊपर उठाने का अवसर खोज ही लेते हैं। और यह प्रमाणित कर देते हैं कि उनका व्यक्तित्व दूसरों से पृथक है।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति कोई भी क्षेत्र हो, कोई भी व्यवसाय हो, अभिनय, संगीत, राजनीति, चिकित्सा या धर्मोपदेश—रह स्थान पर अपनी कर्मठता और स्वतन्त्र मनोवृत्ति के कारण अपने मार्ग पर चलकर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध कर देते हैं। वे दूसरों के बनाए तरीकों और नियमों का पालन नहीं करते। इसका कारण यह नहीं होता कि उन्हें परम्पराओं को परिवर्तित करने या उनका विरोध करने की जिद्द होती है या वे सनकी होती हैं। केवल उनकी मौलिक, स्वतन्त्र विचार शक्ति, आत्म निर्भरता और उनके नैतिक गुण उन्हें हर काम को अपने दृष्टिकोण से देखने और दूसरों की बनाई हुई परम्परा को न मानने पर विवश कर देते हैं। वे नए विचारों के अग्रदूत होते हैं। जो काम कुछ वर्षों या अनेक वर्षों के बाद हो सकता है उसकी गणना और कल्पना पहले से ही कर पाने की उनमें सामर्थ्य होती है। आवश्यक नहीं है कि वे हमेशा जो कुछ करें ठीक ही हो, वे गल्तियां भी कर बैठते हैं। लेकिन नए-नए तथ्यों की खोज करके ऐसे नवीन आविष्कारों और सिद्धान्तों की बुनियाद रख देते हैं जो वर्षों बाद जन साधारण के लिए या उन्हीं के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।

जो चमचाकार हाथ उंगलियों की जड़ में अधिक फैला होता है उस व्यक्ति में आविष्कार, व्यावहारिकता और उपयोगिता अधिक मात्रा में पाई जाती है। वे कल-कारखाने सम्बन्धी आविष्कार करते हैं, रेल और जहाज जैसे जीवनोपयोगी यन्त्रों का निर्माण करते हैं।

अगर मणिबन्ध या कलाई के पास वाला भाग विशेष चौड़ा हो तो उनकी मौलिक आविष्कार की क्षमता का उपयोग, मानसिक, बौद्धिक और वैचारिक क्षेत्रों में विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति विज्ञान साहित्य और प्रकृति की बारीकियों की खोज करने के विशेषज्ञ बन जाते हैं। यदि उन्हें किसी नवीन आविष्कार की योजना बनाने में सफलता मिल जाती है तो उनकी इच्छा पूरी हो जाती है। संसार में ऐसे व्यक्तियों की अधिक आवश्यकता होती है। इसीलिए उनकी सृष्टि की जाती है।

5. दार्शिनिक हाथ

अंग्रेजी में इस प्रकार के हाथ को "फ़िलास्फिक हाथ" कहते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के "फिलोस" 'Philos' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है प्रेम का अनुसरण। और 'Sophia' सोफिया शब्द का अर्थ है प्रबुद्धता।

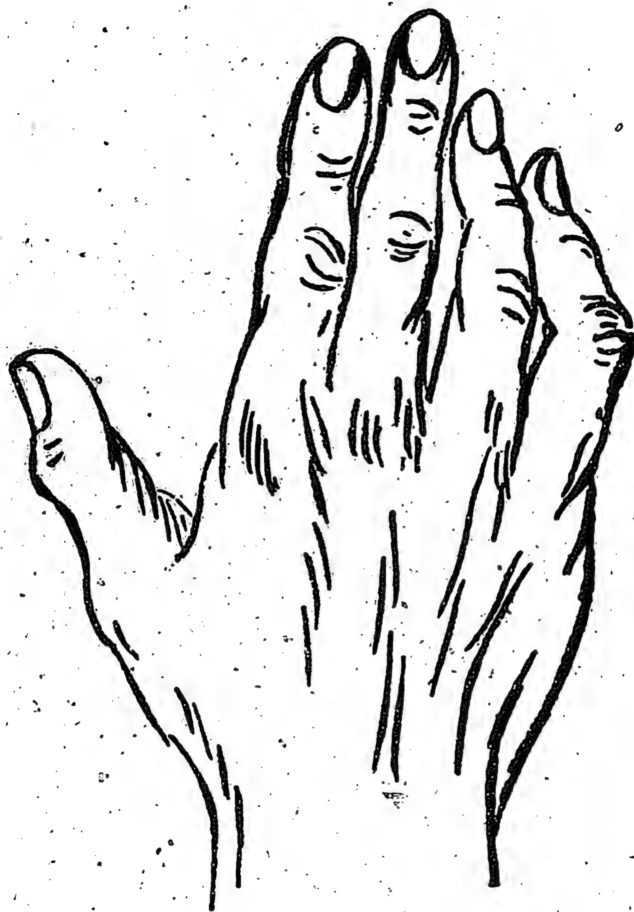
इस प्रकार का हाथ प्रायः लम्बा और नुकीला होता है। उंगलियों की गांठें उठी होती हैं। नाखून लम्बे होते हैं (चित्र-4) इस हाथ वाले व्यक्ति को धनोपार्जन में कम सफलता मिलती है। उनकी दृष्टि में बुद्धि और ज्ञान का महत्व धन-सोने और चाँदी से अधिक होता है। वे विचार प्रधान होते हैं। मानसिक-विकास के कार्यों में विशेष रुचि होती है।

ऐसे व्यक्ति मानव जाति और मानवता में विशेष दिलचस्पी रखते हैं। जीवन वीणा के हर तार और उसकी हर धुन से परिचित होते हैं। महत्वाकांक्षी होते हैं। लेकिन उनके लिए जीवन का ध्येय बिल्कुल भिन्न प्रकार का होता है। वे अन्य लोगों से भिन्न रहना चाहते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे हर प्रकार के संकट सहन करने के लिए तैयार रहते हैं। वे हर वस्तु के रहस्य को जानने का प्रयत्न करते रहते हैं। ज्ञान को ही शक्ति और अधिकार देने वाला मानते हैं। दर्शन में उसकी विशेष रुचि होती है। यदि चित्रकार होते हैं तो उनकी कला में रहस्यवाद की झलक दिखाई देती है। कवि होते हैं तो उनकी कविताओं में प्रेम और विरह की पीड़ा का वर्णन नहीं होता बल्कि दार्शिनिक दृष्टिकोण या आस्तिक अन्वेषण होता है। दुनियादारी का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं होता।

ऐसे हाथ पूर्वी देशों में और विशेषरूप से भारत में बहुत देखने को मिलते हैं। भारत के ब्राह्मणों के, योगियों के, चिन्तकों और विचारकों के हाथ अक्सर इसी प्रकार के होते हैं। कैथोलिक चर्च के पादरियों में भी इस प्रकार के हाथ पाये जाते हैं।

इंग्लैंड में कार्डिनल मैनिंग और टेनीसन के हाथ इसी प्रकार के हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले लोग शान्तिप्रिय, अल्पभाषी और अपने विचारो को गोपनीय रखते हैं। वे गम्भीर होते हैं। छोटी से छोटी बात में भी सावधानी बरतना, हर शब्द को नाप-तोलकर बोलना उनका स्वभाव होता है। उन्हें इस बात का गर्व है कि वे आम लोगों से भिन्न हैं। कोई उनका अपमान करे या किसी प्रकार कि हानि पहुंचाए तो वे उसे हमेशा याद रखतें। बड़े धीरज के साथ उचित अवसर की प्रतीक्षा करतें रहते हैं और जैसे ही उन्हें अवसर मिल जाता है अपना हिसाब चुकता कर लेते हैं।

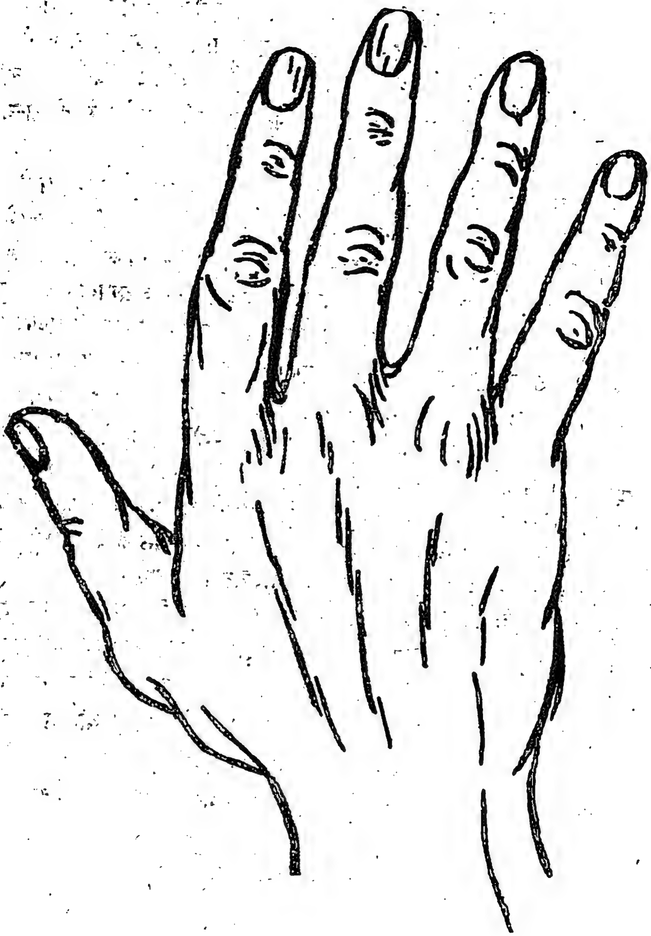


चित्र— 4
दार्शनिक हाथ

क्योंकि अहम उनकी जीवनचर्या के अनुकूल होता है इसलिए वे अहंवादी होते हैं। यदि दार्शिनिक हाथ अत्याधिक उन्नत और विकासित होता है तो ऐसे लोग धर्मात्मा बन जाते हैं और रहस्यवाद की सीमा का अतिक्रमण कर जाते हैं। इसके आश्चर्यजनक उदाहरण पूर्वी देशों में अनेक मिलते हैं। जहां बालक अपनी छोटी सी अवस्था में ही सन्यास ले कर सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं।

हस्तिविज्ञान के अनेक लेखक इस प्रकार के हाथ के गुणों के सम्बन्ध में एकमत नहीं हैं। हमारे विचार से इन लोगों ने एक दूसरे की नकल की है। उन्नीसवीं शताब्दी में जब अनेक पुरुष और स्त्रियां इस विषय पर लिखने लगे तो इस विज्ञान को बहुत क्षति पहुंची। उन्होंने कुछ व्यावहारिक अनुभव किए, इधर-उधर के विचारों को इकट्ठा किया और कुछ पुस्तकें पढ़ने के बाद एक पुस्तक की रचना कर डाली। इस प्रकार की पुस्तकें बाजारु थीं। जितनी तेजी से आईं उतनी ही तेजी से विलीन हो गईं। हमें एक महिला की पुस्तिका पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ था। उन्होंने केवल आठ महीने हस्त विज्ञान का अध्ययन किया था। उस पुस्तक में लिखा था कि वर्गाकार हाथ की छोटी उंगलियां व्यक्ति की काव्यात्मक और आदर्शवादी अभिरुचि को प्रदर्शित करती हैं। बहुत ही दिलचस्प बात थी। इस पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करने से पहले हमने विभिन्न विचारों मतों और दृष्टिकोणों का गम्भीरता से विश्लेषण किया है। और जो निष्कर्ष हमने पाठकों के सामने प्रस्तुत किए हैं वे सैकड़ों हाथों की परीक्षा करने के बाद निश्चित किए गए हैं।

हाथ की उंगलियों में गाँठें निकलना व्यक्ति की वैचारिक प्रवृत्ति का सूचक होता है। इस हाथ वालों का प्रत्येक बात का सूक्ष्म विश्लेषण करना स्वभाव बन जाता है। लेकिन हाथ के आकार और गांठ से ही यह निर्णय किया जा सकता है कि अन्वेषण की क्षमता भौतिक कार्यों के लिए होगी या मनुष्य जाति के सम्बन्ध में। यदि उंगलियों के अगले सिरे चौकोर या नुकीले हों तो व्यक्ति में आत्मिय स्फूर्ति आ जाती है। वर्गाकार उंगलियां उसमें धैर्य, अध्यवसा और नुकीली उंगलियां आत्मत्याग की भावना पैदा करती हैं।



चित्र— 5
शंकु आकार का हाथ

6. शंकु आकार हाथ

इस प्रकार का नुकीला हाथ मध्यम आकार का होता है। न अधिक लम्बा होता है न अधिक छोटा होता है। उंगलियां मूल स्थान में भरी हुई होती हैं जो सिरे पर कुछ नुकीले होती हैं। अक्सर इसे अधिक नुकीले हाथ के समान समझ लिया जाता है, लेकिन यह लम्बोतरा और संकीर्ण होता है। उंगलियां काधी लम्बी और नुकीली होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वालों के स्वभाव में मनोवृत्ति की प्रधानता, अडिग और मानसिक सूझ पाई जाती है। कुछ नुकीले हाथ वालों को "आवेग की सन्तान" (Children of Inpulse) कहते हैं। आवेग से तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्तियों के मन में जब भी जो इच्छा पैदा होती है वही कर डालते हैं। वे गुण-दोष की मीमांसा नहीं करते।

इस प्रकार के हाथों में अनेक विविधता यें पाई जाती हैं—

कुछ हाथ कोमल और कुछ नुकीली उंगलियों वाला होता है। उगंलियों के नाखून लम्बे होते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले कलाप्रिय और आवेगात्मक स्वभाव के होते हैं। साथ ही अरा मतलब, शौकीन तबियत और आलसी भी होती हैं। चतुर और शीघ्र निर्णय लेने वाली क्षमता तो उनमें होती है लेकिन धैर्य नहीं होता। अतिशीघ्र थक जाते हैं इसलिए अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता कुछ ही मिल पाती है। वे बातचीत में निपुण होते हैं। हर विषय को आसानी और शीघ्रता से समझ लेते हैं। लेकिन उनके ज्ञान में छिछलापन होता है। विचारकों की तरह वे मननशील नहीं होते। किसी विषय की गहराई में नहीं जाते। क्षणिक आवेश में तत्काल निर्णय कर डालते हैं। जिन लोगों से उनका सम्पर्क होता है उनसे वे सहज ही प्रभावित हो जाते हैं। इसलिए उनकी मित्रता प्रेम और अनुराग में परिवर्तन आते रहते हैं। पसन्द और नापसन्द की कोई सीमा नहीं होती। भावुक होते हैं इसलिए सहसा ही उन्हें क्रोध भी आ जाता है। लेकिन उनका क्रोध दूध के उबाल जैसा होता है। जब उन्हें क्रोध का दौरा पड़ता है तो परिणाम सोचे बिना जो मुँह में आता है कह डालते हैं। उदारता और सहानुभूति की उनमें कमी नहीं होती लेकिन जहाँ अपने सुख और आराम का प्रश्न उठता है वे स्वार्थी बन जाते हैं। फिर भी पैसे के मामले में स्वार्थी नहीं होते। यदि उनके पास पैसा होता है तो उदारता से दान दे डालते हैं। यह देखि बिना की वह दान देने के योग्य है या नहीं। अगर उन के मन में आता है तो मांगने वाले के लिए जेब खाली कर देते हैं। वरना दुत्कार देते हैं। उनके मन में दान देने की भावना नाम या यश कमाने के लिए नहीं है।

इस प्रकार के हाथ को कलाकार का हाथ भी कहा गया है। लेकिन ऐसे हाथ वाले वास्तव में कला के सम्बन्ध में प्रेरणाएं, योजनाएं और कल्पनाएं तो कर सकते है, उन्हें कार्यान्वित करने की क्षमता उनमें नहीं होती। वास्तव में वे कलाकार नहीं होते, केवल कला से प्रभावित होतें हैं। उन पर अन्य प्रकार के हाथ वाले की भाषण पटुता, वाक् पटुता, आनंद, हर्ष-दुख-संगीत और चित्रशाला आदि कलाओं का प्रभाव अधिक पड़ता है। जिससे भी उन्हें अपनत्व और सहानुभूति मिलती है, उसकी ओर खींच जाते हैं। जरा सी खुशी मिलते ही उनकी खुशी की जिस तरह सीमा नहीं रहती उसी तरह निराश और हताश हो बैठने में भी उन जैसा कोई दूसरा नहीं मिलता।

जब इस प्रकार का हाथ कठोर और लचकदार हो तो उस व्यक्ति में कठोर हाथ की विशेषताओं के साथ-साथ अधिक स्फूर्ति, कार्यकुशलता और इच्छा शक्ति भी पाई जाती है। कुछ कठोर नुकीले हाथ वाला व्यक्ति स्वभाव से कलाप्रिय होता है। यदि उसे कला के प्रति प्रोत्साहन मिले तो अपनी कार्यशक्ति और दृढ़संकल्प के द्वारा वह सफल कलाकार बन सकता है। इस प्रकार के लोग रंगमंच, राजनीति और ऐसे स्थान जहां जनता को अधिकाधिक आकर्षित किया जा सके, बड़ी आसानी से सफल हो जाते हैं। ऐसे लोग आवेश या तात्कालिक प्रेरणा से तो कुछ कर लेते हैं, लेकिन सोच विचारकर कुछ नहीं कर पाते। अगर किसी गायिका का हाथ इस प्रकार का हो तो वह गाने से पहले रियास नहीं करती। केवल अपने व्यक्तित्व से ही श्रोताओं को आकर्षित करेगी। इसी प्रकार वक्ता बिना युक्ति संगत सामग्री एकत्र किए अपनी आवेशपूर्ण ओजस्वी वाक शक्ति से लोगों को मुग्ध कर देगा।

हमने ऊपर जो कुछ कहा है सारांश में उसका अर्थ यह है कि इस प्रकार के लोगों का सबसे बड़ा गुण और शक्ति तात्कालिकता होती है। उनकी सफलता का आधार भी यही होती है। एक उदाहरण देखिए—एक महिला है जिसकी उंगलियां वर्गाकार हैं। वह बहुत ही निपुण और सफल गायिका बन सकती है उस दूसरी गायिका की अपेक्षा जिसकी उंगलियां नुकीली हैं वे अधिक यश और नाम कमा सकती है। लेकिन इस सफलता का आधार आवेश या आवेग नहीं होता। यदि वह परिश्रम करेगी, अभ्यास करेगी तो बड़े धीरज के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगी। कलाप्रिय के हाथ का सम्बन्ध व्यक्ति की मनोवृत्ति से होता है। इस मनोवृत्ति में उंगलियों की विविधताएं परिवर्तन लाती हैं। कलाप्रिय हाथ की वर्गाकार उंगलियां क्षणिक आवेग या आदेश के आधार को लगन, परिश्रम और व्यवस्था में परिवर्तित कर देती हैं, यह हम पहले ही कह चुके हैं।

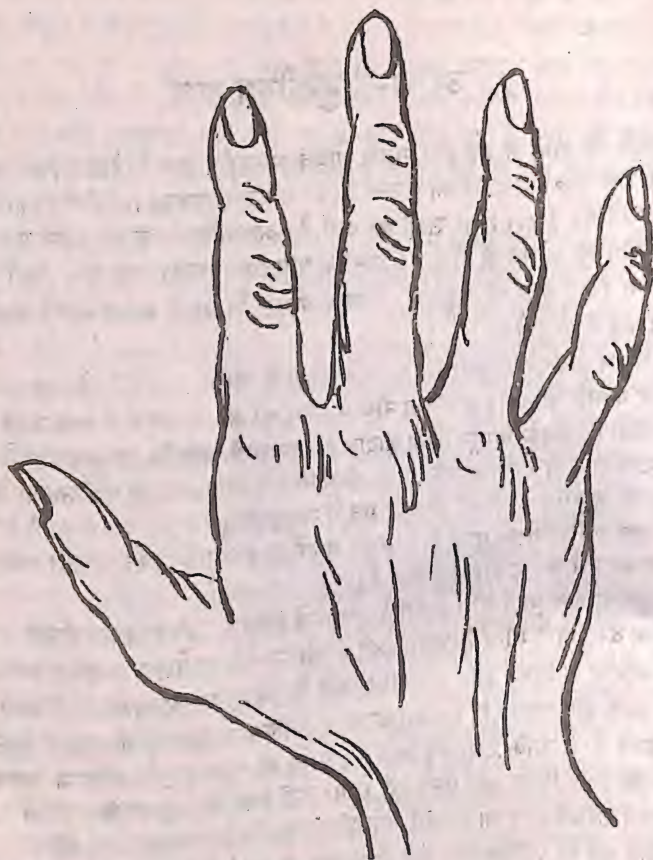
यदि किसी नुकीले या कलाप्रिय हाथ की उंगलियां चमचाकार हों और वह व्यक्ति चित्रकार हो तो उसकी चित्रकारी में मौलिकता प्रधान होगी। नए प्रकार के डिज़ाइनों में रंगों के मिश्रण के चित्र बनाकर वह सहज ही गहराई प्राप्त कर लेगा। उसकी उंगलियां दार्शिनिक हों तो उस के बनाए गए चित्रों में रहस्यवाद की झलक दिखाई देगी।

7. अत्यन्त नुकीला हाथ

इस प्रकार के हाथों में यह हाथ सबसे अधिक भाग्यहीन हाथ है (देखिए चित्र संख्या 6) नुकीला हाथ कुछ कम देखने को मिलता है। इस प्रकार के हाथ को अंग्रेजी में Psychic Hand कहते हैं। Psychic शब्द का अर्थ है–'आध्यामिक'। इसलिए इस हाथ का सम्बन्ध व्यक्ति की आत्मा से होता है। हालांकि वास्तविक आध्यात्मिक हाथ, जिसे कुछ लेखक शान्त निष्ट हाथ भी कहते हैं, मिलना कठिन हैं। उससे मिलते-जुलते हाथ तो अक्सर दिखाई दे जाते हैं।

देखने में इस हाथ की आकृति सब प्रकार के हाथों से अधिक सुन्दर होती है। यह लम्बा, संकीर्ण और कोमल होता है। उंगलियां नीचे से ऊपर की ओर पतली होती चली जाती हैं। वे कोमल होती हैं। उनके नाखून लम्बे बादाम के आकार के होते हैं। लेकिन इन हाथों की यह उत्कृष्टता तथा सुन्दरता इनकी शक्ति की कमी और निष्क्रियता ही प्रदर्शित कर देती हैं। ऐसे सुन्दर सुकुमार हाथों को देखकर मन में सहानुभूतिपूर्ण उग्रता पैदा हो जाती है कि ऐसे हाथ वाला व्यक्ति जीवन यात्रा के भयानक संघर्षों का सामना कैसे कर पायेगा। क्योंकि यह परिश्रम करने में सर्वथा असमर्थ होता है।

इस प्रकार के हाथ वाले लोग सपनों के संसार में विचरण करने वाले आदर्शवादी होते हैं। व प्रत्येक वस्तुओं में सौन्दर्य खोजते रहते हैं और पा जाने पर उसका यथोचित सम्मान करते हैं। स्वभाव से विनम्र और शान्तिप्रिय होते हैं। किसी पर अविश्वास नहीं करते। जो व्यक्ति उनके प्रति सहानुभूतिं प्रदर्शित करता है, उनके साथ बहुत ही सौजन्यपूर्ण मृदुल व्यवहार करते हैं–वे उनके दास बन जाते हैं। समय की पाबन्दी और व्यवस्था अथवा अनुशासन का उनके निकट कोई मूल्य नहीं होता। बड़ी आसानी से दूसरों के प्रभाव में आ जाते हैं। उनमें परिश्रम करने का सामर्थ्य, सांसारिक चतुराई और व्यावहारिकता नहीं होती। इच्छा न होते हुए भी परिस्थितियां उन्हें जिस ओर ले जाती हैं उसी ओर बह जाते हैं। प्राकृतिक रंगों के प्रति उनमें विशिष्ट आकर्षण होता है। उनमें से कुछ ऐसे होते हैं जिसके लिए संगीत का प्रत्येक स्वर, जीवन का हर दुख-सुख और हर्ष तथा आवेश रंगों के प्रतिबिम्बित होता है। वे यथार्थ और सत्य की खोज करने में असमर्थ होते हैं। वे संगीत तथा रस्मों से प्रभावित होते हैं लेकिन उनके अर्थ और उद्देश्य को जानने का वे कभी प्रयत्न नहीं करते। अपनी अर्न्तनिहित भावनाओं के कारण धर्म में उनकी अनुरक्ति होती है। वे



चित्र— 6
अत्यन्त नुकीला हाथ

अध्यातम के निकट पहुंच जाते हैं। जीवन के रहस्यों को आश्चर्य मिश्रित रूप से देखते हैं। लेकिन वह यह नहीं जानते कि ऐसा होने का कारण क्या है। जगत के तमाशें उन्हें आकर्षित करते हैं। उनसे धोखा भी खा जाते हैं। अन्त से भ्रमित हो जाने पर क्रुद्ध हो उठते हैं। इन लोगों का अतिन्द्रिय ज्ञान व अत्यन्त विकसित होता है। वे अच्छे सूक्ष्म ग्राही, परोक्ष दर्शी बन जाते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी भावनाओं, स्वाभाविक अभिरुचियों और दूसरों के प्रभावों से प्रेरणा मिलती रहती है। वे दुनियादारी और वास्तविकता से बिल्कुल अनभिज्ञ रहते हैं।

इस प्रकार के गुणों वाले बच्चों के माता-पिता नहीं जानते कि उनके साथ कैसा व्यवहार करें। यदि वे उन्हें अपनी तरह दुनियादारी और व्यावहारिक बनाने का प्रयत्न करते हैं तो उनका जीवन नष्ट कर देते हैं।

इस सुन्दर और सुकुमार हाथों के स्वामी स्वभाव से इतने भावुक होते हैं कि कभी-कभी अपनी परिस्थितियों को देखकर सोचने लगते हैं कि उनका जीना व्यर्थ है। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी मनस्थिति विकृत हो जाती है। वे जीवन के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

आज के कोलाहल में संसार में यही लोग हैं जो सौन्दर्य और कोमल भावनाओं का आभास करते हैं। ऐसे लोगों को निरर्थक समझना बहुत बड़ी भूल होगी। हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें स्वयं को उपयोगी बनाने में सहायता देनी चाहिए।



चित्र— 7
मिश्रित हाथ

8. मिश्रित लक्षणों वाला हाथ

मिश्रित लक्षणों वाला हाथ का वर्णन करना बहुत कठिन है। वर्गाकार हाथ का वर्णन करते समय हमने ऐसे वर्गाकार हाथ का उदाहरण दिया था जिस में मिश्रित प्रकार की ठंगलियाँ होती हैं। इस उदाहरण में मिश्रित प्रकार की उगंलियों को वर्गाकार हाथ का आधार प्राप्त था। लेकिन वास्तव में जो मिश्रित लक्षण वाला हाथ होता है उसे कोई आधार प्राप्त नहीं होता।

जिस हाथ की कोई श्रेणी न हो, जिसकी उंगलियाँ मिश्रित लक्षणों वाली हों,—यानी कोई नुकीली, कोई वर्गाकार, कोई चमचाकार और कोई दार्शनिक हों (देखें चित्र संख्या 7)

हस्त विज्ञान के अनुसार हाथ सात प्रकार के होते हैं। लेकिन विधाता संसार भर के हाथों को सात सांचों में ढालकर नहीं बनाता। जिससे यह कह दिया जाए कि अमुक हाथ अमुक सांचे में ढला हुआ है।

मिश्रित लक्षण वाले हाथ वाला व्यक्ति सर्वोत्मुखी और अनेक गुणों से युक्त होता है। परिवर्तनशीलता उसका विशिष्ट गुण होता है। वह हर स्थिति में स्वयं को बड़ी आसानी से ढाल लेता है। अनेक गुण होते हुए भी ऐसे व्यक्ति समय के अभाव के कारण और अपनी बौद्धिक शक्तियों को एक ही समय में भिन्न-भिन्न कार्यों में लगा देने के कारण किसी भी काम को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाते। इस हाथ वाला व्यक्ति विज्ञान, कला, वार्त्तालाप और वाद-विवाद में प्रतिभाशाली सिद्ध होता है। कोई भी वाद्य यन्त्र अच्छी तरह बजा सकता है। यदि चित्रकारी करने लगे तो अच्छे चित्र बना लेता है। वह कोई भी काम करे उसे ठीक ढंग से कर लेगा लेकिन उसे किसी भी काम में पूरी सफलता और दक्षता प्राप्त नहीं हो सकेगी।

यदि मिश्रित लक्षण वाले हाथ में यदि शीर्ष रेखा (Line of Head) शक्तिशाली हो तो वह अपनी अनेक योग्यताओं में से किसी एक को चुन लेगा जो सबसे बढ़ चढ़कर हो। फिर उस गुण से सम्बन्धित जो भी कार्य वह करेगा, उसके अन्य गुण भी उस कार्य में उसकी सहायता करेंगे। इस तरह वह उस कार्य में अपनी प्रतिभा का उपयोग पूरी तरह कर पायेगा। कूटनीतिक और चतुरतापूर्ण कार्यों में ऐसे लोग विशेष रूप से सफल होते हैं।

वे इतने बहुमुखी और मिलनसार होते हैं कि हर प्रकार के लोगों से बहुत जल्दी हिलमिल जाते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वे स्वयं को हर प्रकार की

9. हाथ का अंगूठा

हाथ का अंगूठा इतना महत्वपूर्ण होता है कि हमने एक पृथक प्रकरण में उसका वर्णन आवश्यक समझा है। अंगूठे का विषय हाथ की बनावट से सम्बन्धित अध्ययन के लिए ही आवश्यक नहीं है। बल्कि हाथ की रेखाओं आदि का विवेचन करने के लिए अंगूठे के प्रभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है। एक प्रकार के हस्तविज्ञान की यथार्थता केवल अंगूठे के अध्ययन के ठोस आधार से ही प्रमाणित की जा सकती है।

अंगूठे ने प्रत्येक युग में हाथ में ही नहीं, समूचे विश्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सभी जानते हैं कि किसी जमाने में पूर्वी देशों मे जब किसी कैदी को पुलिस के अधिकारी के सामने लाया जाता था तो वह अपने अंगूठे को उंगलियों में छुपा लेता था उसकी इस क्रिया से यह समझ लिया जाता था कि उसने पुलिस के आगे आत्म-समर्पण कर दिया है और वह दया की भीख मांग रहा है।

इजरायल निवासी पराजित होने वाले शत्रु सैनिकों के अंगूठे काट लेते थे। जिप्सी लोग भविष्यवाणियां करते समय अंगूठे के अध्ययन को विशेष महत्व देते थे। उन्हें हमने अंगूठे की बनावट, स्थिति और उसके पोर का अध्ययन करके गणना करते देखा है।

भारत में हाथ की परीक्षा में अनेक ढंग काम में लाए जाते हैं। लेकिन कोई भी तरीका हो उसमें अंगूठे की परीक्षा को प्रमुख स्थान दिया जाता है। चीन के निवासी भी हस्त विज्ञान में विश्वास रखते हैं। वे हस्त परीक्षा केवल अंगूठे की परीक्षा करके ही करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि ईसाई धर्म में भी अंगूठे को सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया है। उनके अनुसार अंगूठा ईश्वर का प्रतिनिधि है। अंगूठे को पहली उंगली माना गया है। जिसे जीसस क्राइस्ट माना जाता है, जो ईश्वर की इच्छा को व्यक्त करती है। अंगूठा ही हाथ की ऐसी उंगली है जो अपनी स्थिति के अनुसार अन्य उंगलियों से पृथक व्यक्तित्व रखता है। वह पूर्णरूप से स्वतंत्र है। उंगलियों की सहायता के बिना भी वह सीधा खड़ा हो सकता है। प्राचीन काल में ग्रीक चर्च के मुखय पादरी अंगूठे और उसके साथ वाली उंगली द्वारा आशीर्वाद दिया करते थे।

अंगूठे का चिकित्सा के क्षेत्र में अत्याधिक महत्व है क्योंकि अंगूठे का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क के Thumd Canter यानी अंगूठा केन्द्र से होता है।

पक्षाघात या लकवे का रोग वायु से उत्पन्न होने वाला स्नायु रोग है। पक्षाघात के रोगी के शरीर का एक भाग संचालन के योग्य नहीं रहता। स्नायु रोग के ऐसे भी कुछ विशेषज्ञ हैं जो वर्षों पहले किसी भी व्यक्ति के अंगूठे की परीक्षा कर के यह बता सकते हैं कि उसे

पक्षाघात का रोग होगा। अंगूठे के द्वारा केवल रोग का ही पता नहीं चल जाता, बल्कि उसे रोका भी जा सकता है। इसके लिए मस्तिष्क स्थित अंगूठे के केन्द्र का आपरेशन किया जाता है। इससे भविष्य में पक्षाघात होने की अशंका समाप्त हो जाती है।

ऐसा सजीव और विख्यात प्रमाण होने पर भी लोग हस्त विज्ञान पर विश्वास करने को तैयार नहीं होते। एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर फ्रेन्सिस गाल्टन ने प्रदर्शन द्वारा यह प्रमाणित कर दिया था कि अंगूठे की त्वचा मे जो लहरदार सूक्ष्म धारियां होती हैं उनके द्वारा अपराधी को पकड़ा जा सकता है। आज के युग में भी प्रसव कराने वाली दाइयों का कहना है कि अगर बच्चा जन्म लेने के कुछ दिन बाद तक अपने अंगूठे को उंगलियों के अन्दर दबाए रखे तो वह शारीरिक रूप से निर्बल होता है। और अगर सात दिन के बाद भी शिशु अंगूठे को उंगलियों के भीतर दबाए रखे तो वह मानसिक रूप से निर्बल होता है। यदि आप अपंगों के किसी आश्रम में जायें तो देखेंगे कि जो बच्चे, स्त्री या पुरुष जन्म से ही बुद्धिहीन होते हैं उनके अंगूठे बहुत ही कमजोर होते हैं। कुछ के अंगूठे तो एकदम अविकसित होते हैं। जिन लोगों का मन दुर्बल होता है उनके अंगूठे भी निर्बल होते हैं। जो व्यक्ति अंगूठे को उंगलियों में दबाकर बात करता दिखाई दे समझ लेना चाहिए कि उसमें आत्म विश्वास और आत्म निर्भरता की कुछ कमी है। मृत्यु के समय यदि मनुष्य की विचार शक्ति नष्ट हो जाती है लेकिन अंगूठे निर्जीवन हों तो समझ लेना चाहिए कि वह अभी मरेगा नहीं क्योंकि अंगूठा मनुष्य की चैतन्यता का केन्द्र होता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रान्स के विख्यात हस्त विज्ञानवेत्ता डाक्टर अर्पेन्टिग्ने के अनुसार अंगूठा व्यक्ति को व्यक्तित्व प्रदान करता तहै (The Thum individualises the man.)

चिम्पाजी का हाथ मनुष्य के हाथ जैसा तो नहीं होता लेकिन उससे मिलता जुलता होता है। उसके हाथ की बनावट मनुष्य के हाथ की बनावट जैसी ही होती है। लेकिन नापने पर उसका अंगूंठा पहली उंगली की जड़ तक नहीं पहुंचता। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अंगूठा जितना ऊंचा और उचित अनुपात में हो व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताएं उतनी ही प्रबल होंगी। यदि अंगूठा विकसित नहीं हैं तो उसमें बुद्धि का अभाव होना निश्चित है।

जिस व्यक्ति का अंगूठा जितना छोटा, बेडौल, बेढंगा और मोटा होता है वह उतना ही नासमझ, क्रूर और उद्दंड होता है। उसके विचार और व्यक्तव्य भी वैसे ही होते हैं। उसके स्वभाव में पाशिवकता कूट कूटकर भरी होती है। जिस व्यक्ति का अंगूठा लम्बा और उचित आकार का हो उसका बौद्धिक स्तर उतना ही ऊंचा होगा। वह उतना ही सुसंस्कृत और सभ्य होगा। लम्बे अंगूठे वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी बौद्धिक शक्ति का प्रयोग करता है जबकि छोटे और मोटे अंगूठे वाला व्यक्ति अपनी पाशिवक शक्ति का प्रयोग करता है।

इसलिए अंगूठा लम्बा और हाथ से मजबूती से जुड़ा होना चाहिए। हथेली से समकोण में स्थित होना चाहिए। हाथ की ओर अधिक निकट होना शुभ नहीं होता। उसका ढलान उंगलियों की ओर हो लेकिन उनके ऊपर गिरे नहीं। जब अंगूठा हाथ से दूर समकोण में होता है तो व्यक्ति का स्वभाव पूर्ण तथा स्वतन्त्र बन जाता है। उसपर नियन्त्रण रख पाना कठिन हो जाता है। वे विरोध को पसन्द नहीं करते। विरोध होने पर उद्दंड और आक्रामक बन जाते हैं। लेकिन यदि अंगूठे की बनावट ठीक और अच्छी होते हुए भी वह नीचे की ओर गिरा हुआ हो और उंगलियों की ओर ऐंठा हुआ हो तो उस व्यक्ति में स्वन्तत्र बनने की क्षमता नहीं होती। उसके मानसिक विचारों और भावनाओं को जानना कठिन होता है।

जिन व्यक्तियों का अंगूठा लम्बा होता है वे अपने विरोधियें या प्रतिस्पर्धियों को अपनी बौद्धिक योग्यता द्वारा प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन अगर अंगूठा छोटा होता है तो हिंसात्मक योजना बनाकर अवसर का इंतजार करते हैं। जब कोई सुपुष्ट अंगूठा इन दोनों सीमाओं का उल्लंघन करने वाले अंगूठों जैसा न होता व्यक्ति मे् ऐसी भावनाएं पैदा हो जाती हैं कि उसका नैतिक स्तर ऊंचा उठ जाता है और उसे गौरव तथा प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है। अपने कार्यों में वह सावधानी बरतेगा और उसमें इच्छा शक्ति तथा निर्णय लेने की क्षमता अधिक मात्रा में होगी।

ऊपर दिए गए तथ्यों के अनुसार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं–

1. सुगठित, सुन्दर और लम्बा अंगूठा बौद्धिक इच्छा शक्ति को मजबूत बनाता है।

छोटा और कमजोर अंगूठा इच्छा शक्ति की कमी, पाश्विक स्वभाव और हठधर्मी का सूचक है। उसमें कार्यशक्ति का भी अभाव होता है।

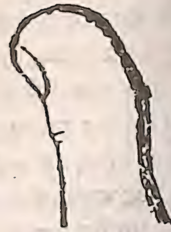
अनादि काल से अंगूठे को तीन भागों में विभाजित किया गया है। ये तीन भाग संसार पर आधिपत्य रखने वाली तीन शक्तियों के प्रतीक हैं–प्रेम (अनुराग) तर्क शक्ति और इच्छा शक्ति।

अंगूठे का पहला भाव इच्छा शक्ति का, दूसरा तर्क शक्ति का और तीसरा प्रेम का सूचक है। तीसरा भाग शुक्र क्षेत्र से आरम्भ होता है।

यदि अंगूठा संतुलित और समान रूप से विकसित हो तो वे व्यक्ति के स्वाभाव में कुछ दोष पाए जाते हैं।

अंगूठे का पहला भाग लम्बा हो तो व्यक्ति केवल अपनी इच्छा शक्ति पर विश्वास करता है और उसी का प्रयोग करता है। उसे तर्कशक्ति या युक्ति संगतता पर बिल्कुल विश्वास नहीं होता।

अंगूठे का दूसरा भाग अगर पहले भाग से अत्याधिक लम्बा हो तो व्यक्ति शान्तिप्रिय होता है। युक्ति संगत ढंग से हर काम को पूरा करना चाहता है। लेकिन उसमें इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय न होने के कारण यह अपनी योजनाओं को कार्यान्वित नहीं कर पाता।



(क) गदा के आकार का अंगूठा



(ग)

लचकदार पीछे की ओर मुड़ने वाला अंगूठा
(ख)

कठोर तना हुआ न मुड़ने वाला अंगूठा

(घ) (ङ) (च)







चित्र— 8
हाथ का अंगूठा

यदि तीसरा भाग लम्बा हो और अंगूठा छोटा हो तो पुरुष हो या स्त्री हो , उसकी विषय वासना की और प्रबल प्रवृत्ति होती है।

अंगूठे का अध्ययन करते समय यह देखना आवश्यक है कि वह अपने पहले जोड़ पर लचीला है, कड़ा है या तना हुआ है। अगर लचीला होगा वो पीछे मुड़कर धनुष का आकार ले लेगा। अगर लचीला नहीं होगा तो पीछे की और मोड़ा नहीं जा सकेगा। इन दोनों विपरीत गुणों का व्यक्ति के चरित्र तथा स्वभाव से गहरा सम्बन्ध होता है। चित्र संख्या 8 में विभिन्न प्रकार के अंगूठे दिए गए हैं–

(क) गदा के आकार का अंगूठा

(ख) लचकदार-पीछे की और मुड़ने वाला अंगूठा

(ग) कठोर, तना हुआ न मुड़ने वाला अंगूठा

(घ) दूसरा भाग बीच से पतला है।

(ङ) दूसरा भाग–न मोटा न पतला

(च) दूसरा–बीच से मोटा है। अंगूठा भी छोटा है।

लचीला अंगूठा

अगर अंगूठा अपने पहले जोड़पर आसानी से पीछे की ओर मुड़ जाता है तो ये व्यक्ति फिजूल खर्च करने वाला होता है। उसे धन और समय की बिल्कुल परवाह नहीं होती। उसका स्वभाव अपने आपको हर प्रकार की परिस्थितियों और हर प्रचार के अनुकूल बना लेने वाला हो जाते है। हर समाज में वह आसानी से घुलमिल जाता है। उसे अपने सजातीय, सम्बन्धियों और देश के प्रति भावनात्मक प्रेम होता है। उसे कोई काम नया नहीं लगता। किसी भी वातावरण में और किसी भी अपरिचित स्थान पर रहने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती।

कठोर बिना लोच का अंगूठा

इस प्रकार के अंगूठे वाले व्यक्ति में लचीले अंगूठे वाले व्यक्ति के विपरीत गुण होते हैं। वे व्यावहारिक होते हैं। उनकी इच्छा शक्ति प्रबल होता है। जो निश्चय कर लेते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। यह गुण उनके चरित्र को दृढ़ता प्रदान कर देता है और सफलता दिलाता है। हर कदम सावधानी से उठाना अपने मन की बात मन में ही रखना उनके स्वभाव का आवश्यक अंग होता है। बिना सोचे समझे वे कोई काम नहीं करते। न उनके विचार पलपल में परिवर्तित ही होते हैं। जब किसी बात का निश्चय कर लेते हैं उस पर डटे रहते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हठधर्मी बन जाते हैं और विरोधी को कुचल डालते हैं। उनकी दिलचस्पी अपने परिवार और देश की उन्नति में होती है। उनमें सुधार करना और उसे पूरा योगदान देना उनकी भावना होती है। लेकिन अपने प्रेम का प्रदर्शन करना उचित नहीं समझते। युद्ध में प्राण दे देते हैं लेकिन पीछे नहीं हटते, कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व की छाप डाल देते है। शक्तिशाली शासक होते है।

अंगूठे में लचक और पीछे की ओर झुकाव होने से व्यक्ति के स्वरूप में कल्पना भावुकता, उदारता, आदि गुणों के साथ फिजूलखर्ची और अपनी योजनाओं को कार्यरू में परिणत न कर पाने का अवगुण पाया जाता है।

अगर अंगूठे में लचक नहीं होती तो उस व्यक्ति में कार्यक्षमता, परिश्रम, मितव्यय आदि गुण होते हैं। उसमें सौन्दर्य के प्रति आकर्षण, प्रेम तथा अपने विचारों को विस्ता से प्रदर्शित कर पाने की क्षमता नहीं होती।

अंगूठे का पतला भाग

अगर अंगूठे का पहला भाग दृढ़ हो और सामान्य से अधिक लम्बा हो तो ऐसे अंगू वाला व्यक्ति वर्ग और विचार से काम नहीं लेता वह केवल अपनी इच्छा को प्रधानता दे है।

पहला भाग अगर बहुत छोटा और कमजोर हो और शुक्र का क्षेत्र अधिक उठा हुआ तो ऐसे व्यक्ति में संयम का अभाव होता है विषय वासना और उसकी अत्याधिक आसी होती है। यदि किसी स्त्री के अंगूठे का पहला भाग छोटा और कमजोर हो तो वह परपु के बहकाने में बड़ी आसानी से आ जाती है। लेकिन यदि पहला भाग सुदृढ़ होता है विचारों में दृढ़ता होती है। इसलिए उसे कोई आसानी से नहीं बहका पाता।

अगर पहला भाग मोटा और भारी हो और नाखून चपटा हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत ही क्रो होता है। अगर अंगूठे का अगला भाग गदा के समान हो तो क्रोध आने पर वह उचित अनु का ज्ञान खो बैठता है अगर अंगूठे का पहला और दूसरा जोड़ सख्त हो तो क्रोध की सीमा ही नहीं रहती। क्रोध के आने पर वह हत्या भी कर सकता है। अगर पहला भाग च हो तो व्यक्ति शान्त स्वभाव का होता है।

अंगूठे का दूसरा भाग

अंगूठे के दूसरे भाग की बनावट पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यह बनावट भिन्न-भि प्रकार की होती है, जिससे व्यक्ति के स्वभाव के सम्बन्ध में निश्चित रूप से जाना सकता है।

सामान्यतः दो मुख्य वनावटें देखने में आती हैं–

(1) बीच में कमर की तरह दिखाई देने वाला पतला (चित्र 8 घ)

(2) इसके विपरीत बनावट, पूरा भरा और बेढंगा (चित्र 8 च)

जब हमारी पुस्तकें Book On Hand प्रकाशित हुई थी हमने मनुष्य की प्र के सम्बन्ध में इन दोनों प्रकार की बनावटों का उल्लेख किया था। हमारे इस कथन की आलोचना हुई थी कि यदि अंगूठा कमर के समान पतला हो तो व्यक्ति नीति कुशल है। इसलिए हम यहां यह बताने का प्रयास करेंगे कि हम इस निष्कर्ष पर किस तरह गए।

हम बता चुके हैं कि अंगूठे का सुगठित होना व्यक्ति के उच्च बौद्धिक स्तर और उच्च विकास का सूचक है और यदि शक्ल बेढंगी है तो ऐसा व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाशविक शक्ति का प्रयोग निस्संकोच भाव से करता है। कमर जैसी पतली बनावट सुगठन का एक क्षेत्र है और मानसिक शक्ति का प्रतीक है। बेढंगी बनावट व्यक्ति का हिंसक और पाश्विक स्वभाव प्रदर्शित करती है। उसके स्वभाव में जोर जबरदस्ती होती है।

इसलिए कमर की तरह लचक होने के कारण नीति कुशलता आती है। व्यवहार चतुरता प्रधान हो जाता है। दुर्भाग्य से यदि दूसरा भाग पतला हो तो उसे शुभ नहीं मानना चाहिए। ऐसी बनावट स्नायु रोगों को जन्म दे सकती है। सोचते-सोचते घबराहट हो जाती है Nervous Energy शक्ति हीन हो जाती है।

अगर दूसरा भाग बहुत लम्बा हो तो व्यक्ति कानूनी और अविश्वासी होता है। साधारण लम्बा हो तो व्यक्ति में पर्याप्त तर्क शक्ति होती है। हर बात पर हर दृष्टिकोण से विचार और तर्क करता है। यदि छोटा हो तो उस व्यक्ति में बौद्धिक क्षमता की कमी होती है। कार्य करने से पहले वह उसका विचार तक नहीं करता।

अगूंठे की बनावट के साथ-साथ हाथ की कठोरता और कोमलता पर भी ध्यान देना चाहिए। अगर हाथ कठोर हो तो अंगूठे की दृढ़ता और स्फूर्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति को पुष्टि और बुद्धि मिलती है। हाथ की कठोरता के साथ अंगूठे का दूसरा भाग समुचित रूप से विकसित हो तो कोमल हाथ वाले की अपेक्षा वह व्यक्ति उद्देश्य की पूर्ति और योजनाओं के पूरा करने में दृढ़ निश्चयी होता है।

भले ही ये गुण विद्यमान हों लेकिन हाथ कोमल हो तो वह व्यक्ति कभी तो योजनाओं को क्रियान्वित करने में तत्परता दिखाता है और कभी एकदम शिथिल पड़ जाता है। वह कोई कांम पूरा कर पायेगा यह आशा करना ही व्यर्थ है।

जिन लोगों का अंगूठा लचीला होता है, पीछे की ओर काफी मुड़ जाता है, ऐसे व्यक्ति नैतिकता को अधिक महत्व नहीं देते। वे अपनी भांवनाओं और आवेशों के साथ बहते रहते हैं जब कि सीधे और दृढ़ अंगूठे वाला नैतिकत। को अत्याधिक महत्व देता है।

10. उंगलियों के जोड़

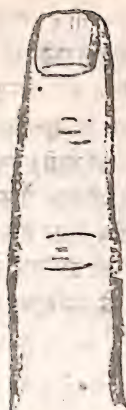
उंगलियों के जोड़ उठे हुए—गांठदार—और दबे हुए-चिकने होते हैं। इन जोड़ों का हाथ की परीक्षा में बहुत महत्व होता है ये जोड़ उंगलियों के भागों के बीच दीवार के समान होते हैं और व्यक्ति के विशिष्ट गुणों तथा स्वभाव को प्रदर्शित करते हैं।

अगर उंगलियों के जोड़ चिकने होते हैं तो व्यक्ति का स्वभाव आवेशात्मक होता है। बिना सोचे-समझें निर्णय कर डालता है, आकर हाथ वर्गाकार हो तो यह अवगुण कुछ कम हो जाता है लेकिन समाप्त नहीं होता।

अगर किसी वैज्ञानिक की उंगलियां वर्गाकार हों लेकिन जोड़ चिकने हों तो वह किसी निष्कर्ष पर तो तत्काल पहुंच जायेगा लेकिन अपनी कार्य प्रणाली का विवेचन नहीं कर पायेगा। देखें (चित्र संख्या 9 क) यही स्थिति एक डॉक्टर की भी होती है। वह भी रोग का निदान इसी प्रकार करेगा। जिन लोगों की उंगलियों की गांठें चिकनी होती हैं वे उन लोगों से अधिक गल्तियां करते हैं जिनकी वर्गाकार उंगलियां गांठदार होती है। नुकीली, चिकने जोड़ों वाली उंगलियां पूर्ण रूप से अन्तर्ज्ञान की सूक्ष्म होती हैं। (चित्र संख्या 9 ख) ऐसी उंगलयों वाले व्यक्ति किसी भी विषय में विस्तार से विचार या विवेचन करने का कष्ट उठाना नहीं चाहते। वेशभूषा के प्रति भी वह लापरवाह रहते हैं। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना पसन्द करते। यदि व्यापारी होगा तो काम की कोई व्यवस्था नहीं होगी। काम के कागजात भी सही ठिकाने पर नहीं होगें। जरूरत पड़ने पर उन्हें खोजना कठिन हो जाएगा। ये लोग स्वयं तो लापरवाह होते हैं लेकिन दूसरों से चाहते हैं कि वे व्यवस्थित ढंग से काम करें।

जब उंगलियों के जोड़ उन्नत या गांठदार होते हैं (चित्र संख्या 9 ग) तो प्रभाव बिलकुल उल्टा होता है उंलियों के जोड़ उन्नत या अउन्नत होने से परिणाम की क्षमता में कोई अन्तर नही आता। जिन लोगों की उंगलियां चिकने जोड़ों वाली होती हैं वे उतने ही कठोर परिश्रमी होते हैं जितने गांठदार जोड़ों की उंगलियो वाले होते हैं। अन्तर केवल इतना होता है कि चिकनी उंगलियों वालों का परिश्रम शारीरिक होता है और गांठदार उंगलियों वालों का आन्तरिक तथा बौद्धिक। एक ही परिवार में पीढ़ियों से इन दो श्रेणियों के व्यक्ति पाए जाते हैं।

क्योंकि उन्नत या गांठदार जोड़ों वाली उंगलियो के गुण चिकने जोड़ों वाली उंगलियों के गुणों के विपरीत होते हैं। इस प्रकार की उंगलियों वाले व्यक्तियों के कार्य



(क) वर्गाकार उंगली और चिकने जोड़
Smooth Joints



(ख) नुकीली उंगली और चिकने जोड़
Smooth Joints



(ग) उन्नत या गांठदार जोड़
Joints

FI 9.
उंगली के जोड़

और कार्य प्रणाली में यथार्थता अधिक होती है। यदि किसी वैज्ञानिक की उंगलियां गांठदार हो तो, हाथ वर्गाकार हो तो उसे इस बात की रत्ती भर भी चिन्ता नहीं होती कि वह जिस काम को कर रहा है उसके सूक्ष्म विवेचन और विस्तृत विशलेषण में कितना समय लगेगा। दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति अपने काम की सूक्ष्मता में जाने के इच्छुक और अभ्यस्त होते हैं। उन्हें अव्यवस्था बिल्कुल पसन्द नहीं होती। जरा सी भी अव्यवस्था उन्हें फौरन दिखाई दे जाती है। वे छोटी छोटी बातों से तो परेशान हो उठते हैं लेकिन महत्वपूर्ण कार्यों में शान्त तथा स्थिर रहते हैं। वेशभूषा पर विशेष ध्यान देते हैं। अपने साथी की वेशभूषा पर भी वे बहुत ध्यान देते हैं। जिन अभिनेताओं की उंगलियों के जोड़ गांठदार होते हैं उनके अभिनय में यथार्थता अधिक होती है। यादि वे साहित्यकार होते हैं तो उनका स्वभाव अत्यन्त विवेकशील और विकासशील होता है।

11. उंगलियां

उगंलियां लम्बी हों या छोटी हों हाथ की लम्बाई से उनका कोई सम्बन्ध नहीं होता। लम्बी उंगलियों वाले हर बात के विस्तार में जाना पसन्द करते हैं। भले ही कमरे की सजावट हो, नौकरों के प्रति व्यवहार हो, चित्रकारी हो, वे सभी में अत्यन्त व्यवहारिक ढंग से काम करते हैं। अपनी वेशभूषा में छोटे से छोटे ऐब पर भी ध्यान देते हैं। कभी-कभी तो उनकी व्यवहार सनक की सीमा तक पहुंच जाता है।

छोटी उंगलियों वालों के स्वभाव में शीघ्रता या जल्दबाजी अत्याधिक होती है, छोटी-छोटी बातों पर तो ध्यान ही नहीं देते लेकिन यदि कोई समस्या सामने आ जाए तो उस पर तत्काल निर्णय ले डालते हैं। वे दिखावे की परवाह नहीं करते और न समाज द्वारा निर्धारित परिपाटी को मानते हैं। वे सोच विचार करने वाले जल्दबाज होते हैं। बातचीत में मुंहफट।

अगर उंगलियां मोटी और बडौल हों, साथ ही छोटी हों तो उस व्यक्ति का स्वभाव क्रूरता और स्वार्थ से भरा होता है।

अगर उंगलियों में लोच न हो, तनी और अन्दर की ओर मुड़ी हुई हों या स्वाभाविक रूप से संकुचित हों तो व्यक्ति अल्पभाषी, कम मेलजोल रखने वाला, कायर और बहुत ही सावधानी बरतने वाला होता है।

अगर उंगलियां लचकदार हों और धनुष के समान पीछे की ओर मुड़ जाती हों तो उस व्यक्ति का स्वभाव बहुत की आकर्षक और मीठा होगा। उसमें मैत्री की मात्रा अधिक होती है। चतुर होता है। हर बात को जानने की उसमें स्वाभाविक जिज्ञांसा होती है। समाज में उसे सभी लोग पसन्द करते हैं।

अगर उंगलियां टेढ़ी-मेढ़ी और विकृत हों तो वह व्यक्ति धोखेबाज, उल्टे रास्ते पर चलने वाला, विकृत मस्तिष्क वाला और निन्दक होता है। अच्छे हाथ पर इस प्रकार की उंगलियां कम ही देखी जाती हैं। अगर होती हैं तो उसे देखकर लोगों को प्रसन्नता नहीं होती बल्कि वे उसका मजाक उड़ाने लगते हैं।

अगर उंगलियों के छोर पर अन्दर की ओर मांस की गद्दी सी हो तो वह व्यक्ति अत्याधिक संवेदनशील और व्यवहार कुशल होता है। दूसरों को उससे किसी प्रकार का कष्ट या हानि नहीं पहुंच पाती।

यदि उंगलियां मूल स्थान पर मोटी और फूली हुई हों तो व्यक्ति आराम तलब होता है। खाने-पीने और अच्छे रहन-सहन का बेहद शौकीन होता है।

अगर उंगलियां मूल स्थान पर कमर के आकार की पतली हों तो वह व्यक्ति अपने स्वार्थ के प्रति लापरवाह होता है। खान-पान और रहन-सहन में सावधानी बरतता है और मनपसंद वस्तुओं का ही प्रयोग करता है।

अगर उंगलियां छितरी हुई हों और तर्जनी तथा मध्यमा के बीच की दूरी अधिक हो तो ऐसे व्यक्ति के विचार स्वतन्त्र होते हैं। अगर मध्यमा और अनामिका के बीच अधिक दूरी हो तो वह हर कार्य स्वतन्त्र रूप से करता है।

उंगलियों की एक दूसरी की अपेक्षाकृत लम्बाई-छोटाई

हाथ की प्रत्येक उंगली की लम्बाई में समानता नहीं होती। किसी हाथ की तर्जनी उंगली बहुत छोटी होती है। किसी हाथ में मध्यमा के बराबर लम्बी होती है। ऐसी ही अन्य उंगलियों के सम्बन्ध में भी होता है।

अगर तर्जनी अधिक लम्बी हो तो व्यक्ति घमंडी बन जाता है। दूसरों पर शासन करने और उन पर प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। ऐसी उंगलियां अधिकतर कट्टर धार्मिक तथा राजनैतिक नेताओं के हाथों में पाई जाती हैं। ऐसे लोग अपने नियम स्वयं ही निर्धारित करते हैं।

अगर तर्जनी उंगली असाधारण रूप से लम्बी हो और मध्यमा के बराबर हो तो घमंड की मात्रा और भी अधिक होती है। प्रभुत्व का मद उसे उन्मत्त बना देता है और वह संसार में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ और महान समझने लगता है। नेपोलियन इस तथ्य का उदाहरण है उसकी दोनों उंगलियों की लम्बाई समान थी।

अगर मध्यमा उंगली वर्गाकार और भारी हो तो उसके स्वभाव में गम्भीरता पाई जाती है। वह हर बात में गहराई से विचार करता है। अधिकतर वह अस्वस्थ स्वभाव (Morbid) का व्यक्ति होता है।

अगर मध्यमा उंगली नुकीली हो तो व्यक्ति के स्वभाव में क्रूरता और छिछोरापन होता है।

अगर अनामिका की लम्बाई तर्जनी के बराबर हो तो उस व्यक्ति में अपनी कला की प्रवृत्ति द्वारा धन और यश कमाने की महत्वाकांक्षा होती है। वह चाहता है कि वह विश्वभर में विख्यात हो जाए।

अगर उसकी लम्बाई मध्यमा के बराबर हो तो वह व्यक्ति जीवन को जुआ या लाटरी समझने लगता है। उसमें कला के अर्न्तहित गुण होते है। वह चतुर होता है, और अपने उद्देश्य के लिए अपना जीवन-धन, मान-सम्मान सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तत्पर

रहता है।

अगर उंगली का अगला सिरा चमचाकार हो तो वह व्यक्ति सफल अभिनेता, ओजस्वी वक्ता और प्रभावशाली धर्मोपदेशक बन जाता है। उसके कला सम्बन्धी गुणों को प्रोत्साहन मिलता है।

अगर कनिष्ठका उंगली अच्छे आकार की सुगठित और लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों पर आसानी से प्रभाव डाल लेता है यदि उसकी लम्बाई अनामिका के नाखून तक पहुंच जाय तो वह ओजस्वी कलाकार और प्रतिभावान लेखक बन सकता है। हर विषय पर बात करने की उसमें पर्याप्त योग्यता होती है। उसे सर्वगुण सम्पन्न कहा जा सकता है।

12. हथेली और लम्बे-छोटे हाथ

अगर हाथ पतला हो, कठोर और सूखा हो तो व्यक्ति कायर, शीघ्र घबरा जाने वाला (Nervous) और चिन्तित स्वभाव का होता है।

अगर हाथ मोटा, भरा हुआ और कोमल हो तो उस व्यक्ति का लगाव विषय वासना और भोग-विलास की ओर अधिक होता है।

अगर हाथ लचीला और मजबूत हो उंगलियां आनुपातिक संतुलन में हो तो उस व्यक्ति के स्वभाव और विचारों में स्थिरता होती है। स्फूर्ति होती है किसी भी बात को तुरन्त समझ लेने का गुण होता है।

अगर हाथ अधिक मोटा न हो, कोमल, शिथिल और पिलपिला हो तो वह व्यक्ति आराम तलब और आलसी होता है। विषय वासना में रुचि होती है।

अगर हाथ गद्देदार हो तो अशुभ माना जाता है। ऐसे व्यक्तियों का जीवन निराशा से पूर्ण रहता है।

अक्सर देखा गया है कि हाथ में गड्ढा अक्सर किसी रेखा की ओर झुका होता है। बीचों बीच नहीं होता। अगर वह जीवन रेखा की ओर झुका हो तो पारिवारिक जीवन में असन्तोष और निराशा होती है। अगर हाथ का शेष भाग रोग के संकेत देता हो तो उसकी यातनाएं बढ़ जाती हैं। यदि गड्ढा भाग्य-रेखा के नीचे हो तो व्यापार में, अर्थिक सम्बन्ध और सांसारिक सम्बन्ध में दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है। यदि गड्ढा हृदय रेखा के नीचे हो तो प्रेम में निराशा मिलती है।

बड़े और छोटे हाथ

बड़े हाथ वाला व्यक्ति हर काम को खूब अच्छी तरह सोच-समझकर करता है। बारीकी के कामों में उसे दक्षता प्राप्त होती है। छोटे हाथ वाले इन गुणों के विपरीत गुण वाले होते हैं।

हमने एक बार लन्दन में एक प्रसिद्ध जौहरी का कारखाने तथा खेतों में काम करने वाले कारीगरों के हाथ देखे। उनके हाथ बड़े थे। तात्पर्य यह है कि छोटे हाथ वालों में धैर्य नहीं होता कि वे बारीकी से काम कर सकें वे बड़ी-बड़ी योजना तो बना सकते हैं लेकिन क्रियान्वित नहीं कर सकते। बड़े-बड़े संस्थान के प्रबन्धकों, सामाजिक नेताओं के हाथ लम्बे होते हैं। वे जीवन में सफल भी होते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि छोटे हाथ वालों की लिखावट बड़ी होती है।

13. नाखून

जहां तक व्यक्ति के स्वास्थ का सम्बन्ध है, नाखून असाधारण रूप से मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। लन्दन और पेरिस के डाक्टरों ने नाखूनों की परीक्षा और उनके लक्षणों में काफी दिलचस्पी से काम किया है। आमतौर पर कोई भी रोगी यह नहीं जानता, या वह भूल गया है कि उसके माता-पिता किस रोग से ग्रसित रहते थे। और उनकी मृत्यु का कारण क्या था। लेकिन नाखूनों के निरीक्षण से कुछ ही क्षणों में वशांनुगत रोगों का पता चल जाता है।

मैं पहले नाखूनों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध का विवेचन करूंगा और फिर इस विषय पर चर्चा करूंगा कि उनका आधार और लक्षण क्या है।

नाखूनों की देखभाल कितनी ही सावधानी से की जाए हम उनके प्रकार और प्रभाव को नहीं बदल सकते। भले ही नाखून काम करते करते टूटे हों या एक हाथ संवार कर रखे गए तो उनका आकार कभी नहीं बदलता। उदाहरण के लिए एक मेकेनिक के नाखून लम्बे हो सकते हैं। और आराम की जिन्दगी जीने वाले व्यक्ति के छोटे। भले ही मैकेनिक उन्हें रोज तराशे फिर भी वे लम्बे ही रहेंगे। इसी प्रकार आराम का जीवन बिताने वाले सज्जन नाखूनों की कितनी भी देखभाल और साज-सवांर क्यों न बरतें वे छोटे ही रहेंगे।

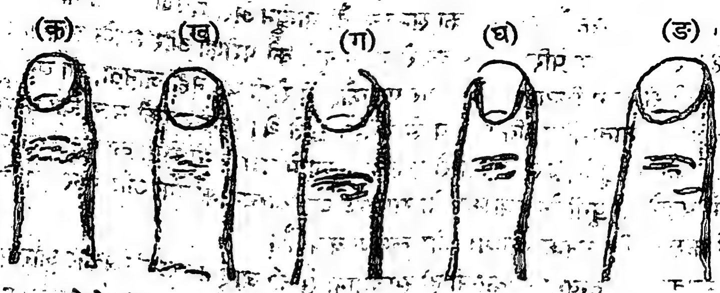
नाखून चार प्रकार के होते हैं–लम्बे, छोटे, चौड़े और संकीर्ण।

लम्बे नाखून

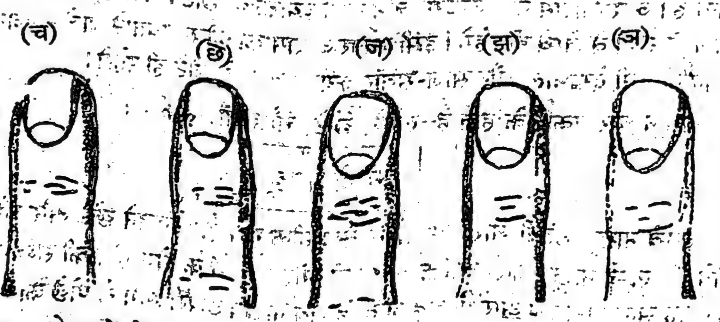
लम्बे नाखून उतनी शारीरिक शक्ति के प्रतीक नहीं होते जितने छोटे और चौड़े नाखून होते हैं। लम्बे नाखून वाले व्यक्ति को छाती और फेफड़ों के रोग होने की सम्भावना रहती है। यह सम्भावना तब और भी बढ़ जाती है जब नाखून ऊपरी भाग से पीछे की ओर उंगली की ओर या उंगली अग्र पर वक्र हो गए हों। देखें (चित्र 10 क) यदि नाखून पर धारियां बन जाती है या वह उभर आता है तो इस सम्भावना में और भी वृद्धि होती है। (चित्र 10 ख)

यदि नाखून छोटा है तो गले के रोग दमा और श्वासनली में सूजन के रोगों की सम्भावना रहती है।

अगर लम्बे नाखून ऊपरी किनारे पर अत्यन्त चौड़े हों नीलापन आ गया हो तो स्पष्ट है कि रक्त संचार या रक्त वितरण में दोष आ गया है। ऐसे नाखून स्नायु मंडल की थकान



गले के रोग　　　　सांस के रोग



फेफड़ों के रोग

चित्र— 10

5. नाखून

के द्योतक होते हैं। अंत में निराश होकर व्यक्ति बिस्तर पकड़ लेता है। चलने-फिरने की शक्ति खो बैठता है। इन परिस्थियों का सामना स्त्रियों को इक्कीस, बयालिस और सैंतालिस वर्ष की आयु में करना पड़ता है। (चित्र संख्या 10 देखो)।

छोटे नाखून

कम और छोटे नाखून उन तमाम परिवारों में मिल जायेंगे जिनको हृदय रोगों की प्रवृत्ति होती है। (चित्र संख्या 11)

अगर नाखून अपनी जड़ से सपाट हों, जिनमें वक्र या आंशिक चन्द्राकार बना हो हृदय के अत्यन्त दुर्बल होने का निश्चित प्रमाण है। सामान्यतः इसका अर्थ हृदय रोग ही है।

बड़े चन्द्राकार से प्रगट होता है कि रक्त का दौरा स्वस्थ है।

जो नाखून स्पाट हों, जड़ में मांस के अन्दर धसे दिखाई दें वे स्वभाविक रोगों के चिन्ह हैं। (चित्र 11)

बहुत सपाट और कोरों पर बाहर की ओर मुड़कर आने वाले या उभर कर आने वाले छोटे नाखून पक्षाघात की पूर्व सूचना देते हैं। यदि वे सफेद भुरभुरे और स्पाट भी हों तो समझिए रोग काफी बढ़ गया है।

छोटे नाखून वालों में लम्बे नाखून वालों की अपेक्षा हृदय रोगों से तथा उन रोगों से जो धड़ और शरीर के निचले भागों पर कुप्रभाव डालते हैं ग्रसित होने की सम्भावना अधिक होती है।

लम्बे नाखून वालों को फेफड़े, छाती और सिर के रोग होने की सम्भावना अधिक होती है।

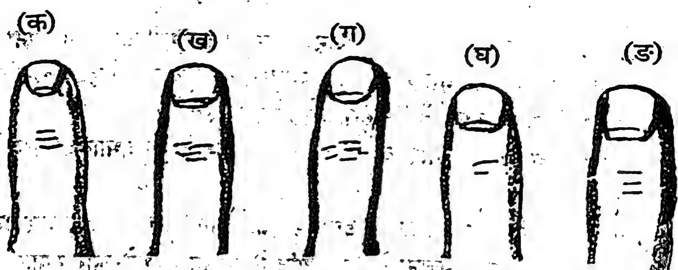
जिनके नाखून स्वाभाविक रूप से लम्बे हों वे जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं और जल्दी ही घबरा जाते हैं। उनकी स्नायु व्यवस्था बहुत ही भावनात्मक होती है। अगर नाखूनों पे धब्बे हों तो स्नायु मंडल की परीक्षा कराने की तत्काल आवश्यकता है।

पतले नाखून अगर छोटे हों तो स्वास्थ्य कमजोर होता है। अधिक संकीर्ण, लम्बे ऊँचे, और मुड़े हुए नाखून रीढ़ की हड्डी के रोग के द्योतक होते हैं। ऐसे लोगों से अधिक शारीरिक श्रम की आशा नहीं करनी चाहिए।

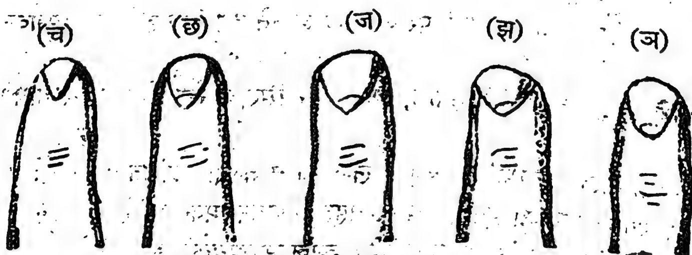
नाखून और मनोवृत्ति

लम्बे नाखून वाले व्यक्ति स्वभाव से छोटे नाखूनों वाले लोगों की अपेक्षा कम आलोचक और अधिक प्रभाव ग्रहणशील होते हैं उनका स्वभाव शान्त और विनम्र होता है

लम्बे नाखून वाले व्यक्ति हर क्षेत्र में तटस्थता और शक्ति का निर्देशन करते हैं हर बात को शान्तिपूर्वक ग्रहण करते हैं। वे महान आदर्शवाद के प्रतीक होते हैं। कलात्मक



रक्त प्रवाह में कमी तथा हृदय रोग की निशानी



स्नायुओं रोगों से प्रभावित होने की आशंका ।

चित्र— 11
नाखून

अभिरुचि होती है। वे काव्य, चित्रकला आदि कलाओं के शौकीन होते हैं। कल्पनाशील होते हैं। तथ्यों को ज्यों का त्यों ग्रहण करने से बचते हैं। यदि वे तथ्य अरुचिकर हों।

इसके विपरीत छोटे नाखून वाले कटु आलोचक होते हैं। स्वयं से सम्बन्ध और सम्पर्क में आने वाली हर वस्तु या विश्लेषण करते हैं। तर्क युक्ति और तथ्यों की और स्वाभाविक रुझान होता है। तर्क-वितर्क में विश्वास होता है। तर्क करते हुए अन्त तक डटे रहते हैं। उनकी बुद्धि सूक्ष्म प्रत्युत्परक होती है। हास्य प्रिय होते हैं। स्वभाव तेज और तीखा होता होता है। जो बात समझ में नहीं आती उस पर सन्देह करते रहते हैं।

अगर नाखून लम्बाई की तुलना में अधिक चौड़े हों तो उस व्यक्ति का स्वभाव झगड़ालु होता है।

नाखून अगर दांतों से काटने पर छोटे हुए हों तो इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति चिन्तित और अधीर रहता है।

14. हाथों पर बाल

यदि हस्तरेखा विशारद को पर्दे के पीछे बैठे किसी व्यक्ति के हाथ की परीक्षा करने का अवसर मिले तो उसके हाथ पर उगे बाल भले ही महत्वहीन, हों अत्यधिक महत्वपूर्ण और अध्ययन का विषय बन जाते हैं। इसलिए उन नियमों का उल्लेख करना अप्रांगिक न होगा जो बालों के उगने को नियन्त्रित करते हैं। प्रकृति शरीर में लाभकारी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बालों का प्रयोग करती है। इनमें से मैं केवल उन्हीं का उल्लेख करूंगा जो इस विशेष शास्त्र के अध्येयता के लिए आवश्यक हैं जैसे बालों के रंग का कारण क्या होता है। बाल मोटे या महीन क्यों होते हैं और व्यक्ति के स्वभाव की सूचना कैसे देते हैं।

हर बाल एक अत्यन्त सूक्ष्म ट्यब है जो त्वचा से जुड़ा है। और त्वचा स्नायुओं से। यह बाल शारीरिक विद्युत या निकास वाल्व है और रंग के द्वारा वे विद्युत के निकास को ग्रहण करते हैं जिससे अध्येता स्वभाव में कुछ ऐसे गुणों का निर्धारण करने में सक्षम होता है। अगर शरीर में लौह तत्व या रंग द्रव्य की अधिकता है तो बालों में से इस विद्युत का प्रवाह उसे इस टयूब में धकेलता है। और बालों को आवश्यक काला, भूरा, सुनहरा, पका हुआ या सफेद आदि रंग प्रदान करता है। इसलिए सुनहरे या उजले बालों वाले व्यक्तियों के शरीर में लौह तत्व और गहरे रगं द्रव्य की कमी होती है। नियमानुसार वे अधिक थके हताश और निराश व्यक्ति तथा अपने आस पास से अधिक प्रभावित होने वाले होते हैं। जबकि गहरे रंग वाले के बालों वाले ऐसे नहीं होते।

हल्के रंग के बालों वाले व्यक्तियों की तुलना में गहरे बालों वाले काम में कम उत्साहित होने के बावजूद अधिक आवेशयुक्त चिड़चिड़े और प्रेम सम्बन्धों में अधिक उत्साही होते हैं।

इसी प्रकार रंग के बारे में कहा जा सकता है। अगर हम बालों का निरीक्षण करें तो पायेंगे कि लाल रंग के बाल वाले, भूरे या सुनहरे बालों की तुलना में अधिक मोटे होते हैं। मोटे होने और लम्बे होने के कारण यह टयूब अधिक चौड़ी है इसलिए प्रदर्शित करती है की विद्युत का विकास इनके द्वारा अधिक मात्रा में होता है। इस प्रकार के स्वभाव वालों की सबसे अधिक विशुद्ध होती है। ऐसा नहीं है कि काले बाल वालों की तुलना में इन लोगों में रंग द्रव की अधिकता होती है। लेकिन विद्युत प्रवाह शक्ति की अधिकता वाले परिणाम स्वरूप वे लोग काले, भूरे, या सुनहरी बालों वालों की तुलना में अधिक भावावेश वाले होते

हैं वे बड़ी तेजी से अपने कार्य में जुट जाते हैं।

जब शरीर बूढ़ा होने लगता है या किसी रोग के कारण दुर्बल हो जाता है तो उसमें ज़ितनी भी विद्युत पैदा होती है उसका अधिक अंश सारा शरी में ही खप जाता है। रंग द्रव इन बालों अर्थात इन टयूबों में इक्ट्ठा होना बन्द हो जाता है। इसलिए बाल बाहरी सिरों पर सफेद होने शुरू हो जाते हैं और अन्त तक सफेद होते रहते हैं जब तक रुखे बाल या सारे टयूब सफेद नहीं हो जाते हैं।

अचानक लगने वाले झटके या दुख से भी बाल सफेद होने लगते हैं। बाल अपने सिरों पर स्नाविक विद्युत द्रव के इन टयूबों में प्रवाह की शक्ति से खड़े हो जाते है और तत्काल प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है और कभी-कभी कुछ घण्टों में ही बाल सफेद हो जाते हैं। ऐसा कुछ कम हो पाता है कि शरीर ऐसे बोझ को बर्दाशत कर सके जिसके कारण शायद ही कभी बाल अपने मूल रंग में वापस आ पाते हैं।

मेरा विचार है कि संसार के किसी अन्य देश की तुलना में अमेरिका के बाल अधिक सफेद होते हैं। ऐसा शायद उस उच्च तनाव के कारण है जिसमें अमेरिकन जिंदगी जीते हैं। लोगों के स्वभाव के सम्बन्ध में उस देश के वातावरण का बहुत बड़ा हाथ होता है। किसी देश के वातावरण का उजलापन, दमक, सर्दियों तक के हवा के विशेष स्नायुओं के लिए बल प्रदान करने का गुण यह सब मिलकर वहां के निवासियों में स्पर्द्धा की गहरी भावना भर देते हैं जिसका वे कार्य क्षेत्र या मनोरंजन के क्षेत्र में करते हैं मेरी जानकारी में बालों के रंग का यह सिद्धान्त इससे पहले शायद कहीं भी प्रस्तुत नहीं किया गया।



हाथ पर पर्वत चित्र—12

15. पर्वत, उनकी स्थिति और उनके अर्थ

किसी हाथ पर पाए जाने वाले पर्वतों का भी उतना ही महत्व है जितना हाथों का होता है। हालांकि शरीरिक श्रम का प्रभाव हाथ की त्वचा पर पड़ता है। काम करने से त्वचा भले ही कठोर और खुरदरी हो जाए लेकिन वे स्थान जिन्हें क्षेत्रों का नाम दिया गया है घटते या बढ़ते नहीं है। यह ग्रह क्षेत्र जन्मजात या वंशानुगत गुणों को प्रगट करते हैं। इन क्षेत्रों को नाम देने की परम्परा मान्यता प्राप्त कर गई है। जिनके अनुसार इनको विभिन्न ग्रहों से सम्बन्धित नाम दिये गए हैं सम्भव है इन क्षेत्रों पर उन ग्रहों का प्रभाव हो। लेकिन हाथ की परीक्षा के विषय के साथ-साथ हम ग्रहों के प्रभाव का विचार करना उचित नहीं समझते। लेकिन हम उन क्षेत्रों के नाम ग्रहों पर ही आधारित कर रहे हैं इससे पाठकों के लिए उनके गुणों को समझने में सुविधा हो जाएगी। (चित्र संख्या 12 देखें)

शुक्र पर्वत—प्रेम, सहानुभूति, उदारता, सौंदर्य परखना।

गुरु पर्वत—महत्वकांक्षा, गर्व, उत्साह, शक्ति।

शनि पर्वत—एकान्त प्रियता, शान्ति, काम के प्रति लगाव।

सूर्य पर्वत—चित्रकला, काव्य, साहित्य के प्रति लगाव।

बुद्ध पर्वत–प्रेम, रोमांच, तत्कालिक बुद्धि।

मंगल पर्वत–सहासा, आत्म नियन्त्रण।

चंद्र पर्वत–परिष्कृति, कल्याणशीलता, सुन्दर दृश्यों से प्रेम।

शुक्र क्षेत्र

शुक्र क्षेत्र अंगूठे के मूल स्थान के नीचे स्थित होता है। अगर यह असमान्य रूप से विकसित न हो तो स्त्री पुरुष के हाथों में अनुकूल चिन्ह है। यह पर्वत हाथ का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण रक्तकोष बनाता है। जो हथेली का बड़ा विकास है। यदि शुक्र पर्वत सुविकसित हो तो स्वास्थ्य उत्तम रहता है। अविकसित होने पर स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा विपरीत लिंग के प्रति कामोन्माद द्योतक है।

गुरु पर्वत

तर्जनी के मूल में जो उभार दिखाई देता है उसे गुरु पर्वत कहते हैं। विकसित होने पर महत्वकांक्षा एवं गर्व, प्रत्यनों में उत्साह और शान्ति की कामना का सूचक होता है।

शनि पर्वत

मध्यमा के मूल में मिलने वाला उभार शनि पर्वत कहलाता है। एकान्तप्रियता, शान्ति, प्रज्ञा, काम के प्रति लगाव, रहस्मय अध्ययन की ओर रुझान पवित्र और शास्त्रीय संगीत के प्रति लगाव आदि गुणों का द्योतक है।

सूर्य पर्वत

अनामिका के आधार में स्थित होता है। यदि सुविकसित हों तो व्यक्ति भले ही कलाकार न हो लेकिन कलाप्रिय अवश्य होता है।

बुध पर्वत

कनिष्ठा के मूल में स्थित होता है। परिर्वतन प्रियता, प्रेम, यात्रा, रोमांच, कुशल बुद्धि, विचारों की तत्काल अभिव्यक्ति आदि गुण पाए जाते हैं अगर हाथ अनुकूल हों तो ये गुण कल्याणकारी सिद्ध होते हैं लेकिन अगर प्रतिकूल हों तो दुर्भाग्यशाली होते हैं।

मंगल पर्वत

इस नाम का एक पर्वत गुरु पर्वत के नीचे और जीवन रेखा के भीतर शुक्र पर्वत की बगल में होता है। सक्रिय साहस, युद्ध में शौर्य की भावना आदि प्रदान करता है। यदि बहुत बड़ा दिखाई दे तो झगड़ालू और लड़ाकू स्वभाव का सूचक होता है।

दूसरा मंगल पर्वत बुद्ध और चन्द्र पर्वत के मध्य मिलता है। निश्चित साहस, आत्म नियंत्रण, निराशा और गलती के विरोध की क्षमता का सूचक है।

चन्द्र पर्वत

मंगल पर्वत के नीचे और शुक्र पर्वत के ठीक विपरीत दिशा में स्थित होता है।

यह व्यक्ति की कल्पना प्रवण आदर्शों के प्रति सन्धि, कला साहित्य के प्रति लगाव आदि का सूचक है।

पर्वतों का एक दूसरे के प्रति झुकाव

दो पर्वतों के एक दूसरे की ओर झुकने पर दोनों के गुण एक साथ मिलकर विकसित होते हैं। यदि शनि पर्वत गुरु पर्वत की ओर झुका हो तो वह उसे पवित्र वस्तुओं के प्रति अपने प्रेम का अंश प्रदान करता है। बुद्धिमत्ता और धार्मिक वृति पैदा हो जाती है। यदि शनि सूर्य की ओर झुका हो तो शनि के कुछ विचार और गुण कलात्मक रुचि से मिल जाते हैं। यदि सूर्य बुद्ध की ओर झुका हो तो कलात्मक व्यक्ति के व्यापारिक और वैज्ञानिक स्वभाव को प्रभावित करती है।

16. राष्ट्रों के हाथ

इस बात को सभी जानते हैं कि विभिन्न देशों के निवासियों और जातियों की शारीरिक बनावट, गठन और रंग-रूप में अन्तर होता है। कहा जाता है—प्रकृति का जो नियम ओस की बूंद को गोल बनाता है, वही संसार की रचना करता है। (The law which rounds a dew drops shapes a world) प्रकृति के कुछ नियम भिन्न प्रकार की सृष्टि करते हैं। इसीलिए वे भिन्न-भिन्न प्रकार के मानव शरीर और हाथ भी बनाते हैं। जिनके गुण अलग-अलग होते हैं।

सर्वाधिक निम्न श्रेणी का हाथ (The Elementary Hand)

इसे अविकसित हाथ भी कहते हैं। सभ्य जातियों में यह हाथ बहुत कम पाया जाता है। इस प्रकार के हाथ अत्याधिक ठन्डे स्थानों जैसे आइसलैंड, लेपलैंड, रूस के उत्तरी भाग में रहने वाले आदिम जातियों में पाए जाते हैं।

ये लोग भावशून्य होते हैं इनके शरीर के स्नायु केन्द्र उच्च विकसित अवस्था में नहीं होते। इसलिए अन्य जातियों की अपेक्षा इन्हें शारीरिक पीड़ा का अनुभव कम होता है। उनकी मनोवृत्ति पशुओं के समान होती है। विषय वासना में भी उनमें पाश्विकता पाई जाती है। उनके मन में कोई महत्वकांक्षा नहीं होती। वास्तव में मानवों में गणना होते हुए भी वे दो पैर वाले पशु होते हैं।

वर्गाकार हाथ (The Square Hand)

वर्गाकार हाथ अधिकतर स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी, इंग्लैंड, हालैंड और स्काटलैंड के निवासियों में पाए जाते हैं।

दार्शनिक हाथ (The Philosophic Hand)

इस प्रकार के हाथ अधिकतर पूर्वी देशों में पाए जाते हैं। धार्मिक नेताओं और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के हाथ ऐसे ही होते हैं। उनका ध्यान ईश्वर के रहस्यों को जानने में लगा रहता है। अपने धार्मिक सिद्धान्तों की रक्षा और उन्हें मान्यता दिलाने के लिए वे अपना सर्वस्व समर्पण करने को हर समय तैयार रहते हैं।

नुकीले हाथ (The Conic Hand)

यूरोप के दक्षिणी भागों में इस प्रकार के हाथ पाए जाते हैं लेकिन विवाह हो जाने के कारण अनेक जातियाँ मिल गई हैं इसलिए ये हाथ अब संसार के अनेक देशों में पाए जाने

लगे हैं। यूनान, इटली, स्पेन, फ्रांस और आयरलैंड वासियों में इस प्रकार के हाथ अधिक मिलते हैं। भावनात्मक इनका विशेष गुण होता है। विचार और कार्यशीलता में आवेश की मात्रा अधिक होती है। वे कला प्रिय होते हैं। अन्य हाथ वालों की अपेक्षा इनमें धनोपार्जन की क्षमता अधिक नहीं होती है क्योंकि उनमें व्यवहारिक कुशलता की कमी होती है।

चमचाकार हाथ (The Sparlate Hand)

अमेरिका—आजकोन अमेरिका के निवासी यूरोप की सभी जातियों के मिश्रण हैं। इसलिए चमचाकार हाथ यहां बहुत मात्रा में मिलते हैं। इन्हीं हाथों ने इस महान देश का निर्माण और विकास किया है। अमेरिका के समृद्धिपूर्ण इतिहास की रचना में इन हाथों का बहुत बड़ा योगदान है।

दार्शनिक हाथ (Psycihic Hand)

इस प्रकार का हाथ किसी विशेष जाति या देश तक सीमित नहीं है लगभग सभी देशों में इस प्रकार के हाथ पाए जाते हैं।

दूसरा खण्ड

हाथ की रेखाएं और उनके चिन्हों के लक्षण तथा प्रभाव

1. हाथ की परीक्षा और फलादेश के सम्बन्ध में कुछ विचार

हाथ की रेखाओं और लक्षणों के सम्बन्ध में कुछ बताने से पहले मैं कुछ आवश्यक बातें बतना चाहूंगा। ये बातें पाठकों और हस्तविज्ञान के छात्रों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगीं।

जिस प्रकार दो स्वभाव एक जैसे नहीं होते उसी प्रकार दो हाथ भी एक समान नहीं होते। हाथ का अध्ययन प्रकृति की पुस्तक की अध्ययन के समान है। बहुत ही जटिल और कठिन विषय है। लेकिन यदि पाठक हमारे आदेशानुसार परिश्रम अध्ययन करेंगे तो इस विषय की दक्षता बड़ी आसानी से प्राप्त कर लेंगे।

याद रखिए, प्रत्येक रेखा हर हाथ में एक जैसा फल नहीं देती। हाथों की बनावट तथा अन्य कारणों से भले ही उस रेखा का वैसा ही स्वरूप क्यों न हो। उसका प्रभाव बदल जाता है।

उदाहरण के लिए शीर्ष रेखा को लीजिए। अगर शीर्ष रेखा वर्गाकार हाथ में चन्द्रक्षेत्र की ओर यानि नीचे की ओर झुकी हुई हो तो उसके गुण में और दार्शनिक या नुकीले हाथ की शीर्ष रेखा के गुण में बहुत अन्तर होगा।

रेखाओं के सम्बन्ध में अनेक मत हैं। लेकिन जब हम इन मतों का परिक्षण करते हैं तो हमें यथार्थ और सच्चाई का ज्ञान होता है। डाक्टर को लीजिए। प्रत्येक डाक्टर के निदान और उपचार का ढंग भिन्न होता है। इस लिए उसी पुस्तक का अध्ययन कीजिए जिसे आप विश्वसीनिय समझते हों, फिर अपनी बुद्धि और तर्क से उसके नियमों को समझिए इसके बाद उन्हें व्यवहारिक रूप से परखिए। आपको तभी सफलता मिलेगी।

कौन सी घटना कब होगी, उसके काल निर्णय की हमने जो प्रणाली अपनाई है मनोरंजक भी है और युक्तिसंगत भी। प्रकृति के नियमों के अनुसार हम जीवन को सात भागों में विभाजित करते हैं। हमने रेखाओं द्वारा काल निर्णय के लिए यही नियम अपनाया है।



चित्र— 13
हाथ की रेखाएं

2. हाथ की रेखाएं

सामान्य रूप से हाथ में सात प्रधान और सात अन्य रेखाएं होती हैं। देखें (चित्र संख्या 13)

निम्नलिखित रेखाएं प्रधान रेखाएं मानी जाती हैं—

1. जीवन रेखा—जो शुक्र क्षेत्र को घेरे हुए होती है।

2. शीर्ष रेखा—जो हाथ के बीचों बीच एक छोर से दूसरे छोर तक जाती है।

3. हृदय रेखा—जो उंगलियों के मूल स्थल के नीचे शीर्ष रेखा के समानान्तर चलती है।

4. शुक्र मुद्रिका—जो हृदय रेखा से ऊपर होती है और सूर्य तथा शनि क्षेत्रों को घेरे हुए होती है।

5. स्वास्थ्य रेखा—जो बुद्ध क्षेत्र से आरम्भ होकर हाथ में नीचे की ओर चली जाती है।

6. सूर्य रेखा—जो हाथ के बीच से चढ़ती हुई सूर्य क्षेत्र की ओर जाती है।

7. भाग्य रेखा—जो मणिबन्ध से आरम्भ होकर हाथ के बीच से गुजरती हुई शनि क्षेत्र को जाती है।

इसी प्रकार सात अन्य रेखाएं ये हैं :-

1. मंगल रेखा—जो प्रथम मंगल क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन रेखा के भीतरी भाग में जाती है।

2. वासना रेखा—जो स्वास्थ्य रेखा के समानान्तर होती है।

3. अतिन्द्रिय ज्ञान रेखा—जो अर्द्धवृत्ताकार रूप में बुध क्षेत्र से चन्द्र क्षेत्र की ओर जाती है।

4. विवाह रेखा—जो बुध क्षेत्र पर आड़ी रेखा के रूप में होती है।

5. तीन मणिबंध रेखाएं—जो हाथ और कलाई के जोड़ पर होती हैं।

जीवन रेखा को जीवनी या आयु की रेखा भी कहते हैं।

शीर्ष रेखा को मस्तक रेखा कहते हैं।

भाग्य रेखा को शनि रेखा भी कहते हैं।

सूर्य रेखा को प्रतिभा रेखा भी कहते हैं।

3. हाथ की रेखाओं की विशेषताएं

हाथ की रेखाएं वही अच्छी मानी जाती हैं जो स्पष्ट और सुअंकित हों। चौड़ी और पीली रेखाओं को अच्छा नहीं माना जाता। रेखाओं की टूटफूट, उन पर बने द्वीप चिन्ह या अन्य किसी भी प्रकार की अनियमितताएं अशुभ मानी जाती हैं।

अगर रेखाएं अत्यधिक निस्तेज हों तो उस व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उनका दुष्प्रभाव पड़ता है। उनमें न तो स्फूर्ति होती है न निर्णय लेने के क्षमता।

अगर रेखाएं लाल रंग की हों तो व्यक्ति उत्साही, आशावादी, स्थिर चित्त और कर्मशील होता है।

अगर रेखाएं गहरे रंग की (काली सी) हों तो व्यक्ति गम्भीर और उदासीन रहता है। हठधर्मी होता है। बदले की भावना उसके मन में हमेशा बनी रहती है। वह आसानी से किसी को क्षमा नहीं कर पाता।

रेखाएं धुंधली पड़ जाती हैं और बनती-बिगड़ती भी रहती हैं, हाथ की परीक्षा करते समय इस ओर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। हाथ देखने वाले का कर्त्तव्य है कि उसके हाथ के अशुभ लक्षणों को देखकर अनिष्टधारी प्रवृत्तियों के कारण आने वाले संकटों से सावधान कर दे। फिर यह उस व्यक्ति पर निर्भर है कि वह उन प्रवृत्तियों को सुधारता है या नहीं। भविष्यवक्ता उसे यह भी बता सकता है कि वह सुधार करेगा या नहीं।

हाथ में केवल एक अशुभ लक्षण देखकर किसी निर्णय पर पहुंच जाना अनुचित है। यदि अशुभ लक्षण महत्वपूर्ण होगा तो प्रत्येक प्रधान रेखा पर उसका प्रभाव दिखाई दे जायेगा। आवश्यक है कि दोनों हाथों की रेखाएं देखीं जायें। यदि अशुभ लक्षण की पुष्टि अन्य रेखाओं से हो जाये तो समझ लेना चाहिए के वह संकट अवश्य आयेगा। लेकिन अगर वह व्यक्ति कोशिश करे तो उस संकट से अवश्य बच सकता है।

मैंने हस्त परीक्षा कार्य आरम्भ किया ही था कि तभी एक ऐसी घटना हुई जो अभी तक याद है। उन दिनों घोड़ा गाड़ियों का प्रचलन था। एक प्रतिष्ठित महिला मेरे पास आई। मैंने उसकी हाथों की परीक्षा करके उसे चेतावनी दी की पशुओं द्वारा वह एक दुर्घटना की शिकार होगी। और जीवन के लिए अपाहिज हो जाएगी। यह दुर्घटना उसी आयु में होनी थी जो उस समय उसकी आयु थी। वह यह कह कर चली गई कि वह सावधान रहेगी।

एक सप्ताह बाद रात को घना कोहरा पड़ रहा था। कोहरे के कारण रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। तभी उसने कहीं जाने के लिए घोड़ागाड़ी तैयार करने का आदेश दिया। उसके

पति ने उसे बहुत समझाया कि इतने खराब मौसम में घोड़ा गाड़ी से जाना खतरे से खाली नहीं है। लेकिन वह नहीं मानी। क्योंकि उसके सिर पर तो होनी सवार थी। पति ने कहा कि गाड़ी चलाने वाला बिमार है इसलिए वह अपनी यात्रा स्थगित कर दे। वह फिर भी नहीं मानी और दूसरे नौकर को लेकर चली गई। वही हुआ। अंधेरे के कारण भीषण दुर्घटना हो गई उस महिला को इतनी अधिक चोट आई की जीवन भर के लिए अपाहिज बन गई।

जब किसी प्रधान रेखा (चित्र संख्या 16 AA)। अर्थात ऐसी रेखाएं हों जो उसके साथ-साथ चल रही हों तो प्रधान रेखा को उससे शक्ति प्राप्त होती है। और प्रधान रेखा के टूट जाने से संकट की जो सम्भावना होती है वह नष्ट हो जाती है, अगर ऐसी सहायक रेखाएं जीवन रेखा के अतिरिक्त किसी अन्य रेखा के अन्त में दो शाखाओं में बंट जाती हैं तो और अधिक शक्तिशाली हो जाती है। यदि शीर्ष रेखाएं अन्त में दो शाखाओं में विभाजित हो जायें तो मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है। लेकिन व्यक्ति का स्वभाव दोहरा रहता है।

जिस रेखा का अन्त गाय की पूँछ के अनुरूप हो (चित्र संख्या 16 BB) तो वह दुर्बलता की द्योतक होती है। इससे उस रेखा का अच्छा गुण नष्ट हो जाता है। यदि ऐसा जीवन के अन्तिम दिनों में यानि बड़ी उम्र में हो तो स्नायुतन्त्र दुर्बल और लगभग नष्ट हो जाता है।

अगर किसी रेखा में शाखाएं ऊपर की ओर उठ जाती हैं (चित्र संख्या 14 AA) तो उसमें प्रधान रेखा को शक्ति प्राप्त होती है। नीचे जाने वाली शाखाओं का फल विपरीत होता है।

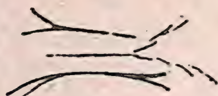
किसी व्यक्ति का विवाह जीवन सफल होगा या नहीं यह जानने के लिए हृदय रेखा को देखिए। अगर हृदय रेखा के आरम्भ में यह शाखाएं हों तो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। ऊपर उठती हुई शाखाएं प्रेम की गरिमा प्रकट करतीं हैं (चित्र संख्या 17 AA)। नीचे जाने वाली रेखाएं विपरीत फल देती हैं।

शीर्ष रेखा पर ऊपर उठती हुई शाखाएं (चित्र संख्या 17 AA) चतुरता, प्रवीणता और महत्वाकांक्षा का संकेत देती हैं। भाग्य रेखा पर उठती हुई रेखाएं व्यवसाय में सफलता की प्रतीक होती हैं। जब कोई शाखा ऊपर उठती हो तो उसी आयु में व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है।

रेखा का श्रंखलाकार होना उसे निर्बल बनाता है। (चित्र संख्या 14) रेखा का किसी स्थान पर टूटना असफलता का द्योतक होता है। (चित्र संख्या 17 AA)।

लहरदार रेखा निर्बल होती है। (चित्र संख्या 17 BB)

केशकीय रेखाएं—सूक्ष्म रेखाएं होती हैं जो प्रधान रेखाओं के साथ-साथ चलती हैं। कभी-कभी उससे जुड़ भी जाती हैं। कभी-कभी प्रधान रेखाओं से जुड़कर नीचे की ओर



(a) दो मुंही रेखाएं



(b) सहयोगी रेखाएं



(c) रेखा पर बिन्दु



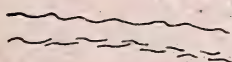
(d) द्वीप



(e) गाए की पूंछ जैसी



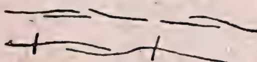
(f) ऊपर की उठती हुई या नीचे को गिरती हुई रेखाएं



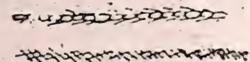
(g) लहरदार रेखाएं



(h) गुच्छे जैसी रेखाएं



(i) टूटी हुई रेखाएं

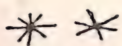


(j) जंजीरदार रेखाएं



(k) रेखा पर चतुर्भुज

चित्र— 14
रेखाओं की बनावट



(a) स्टार या नक्षत्र



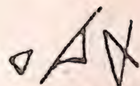
(b) द्वीप



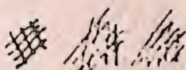
(c) बिन्दु



गुणन



(e) त्रिकोण



(f) जाली



(g) चतुर्भुज

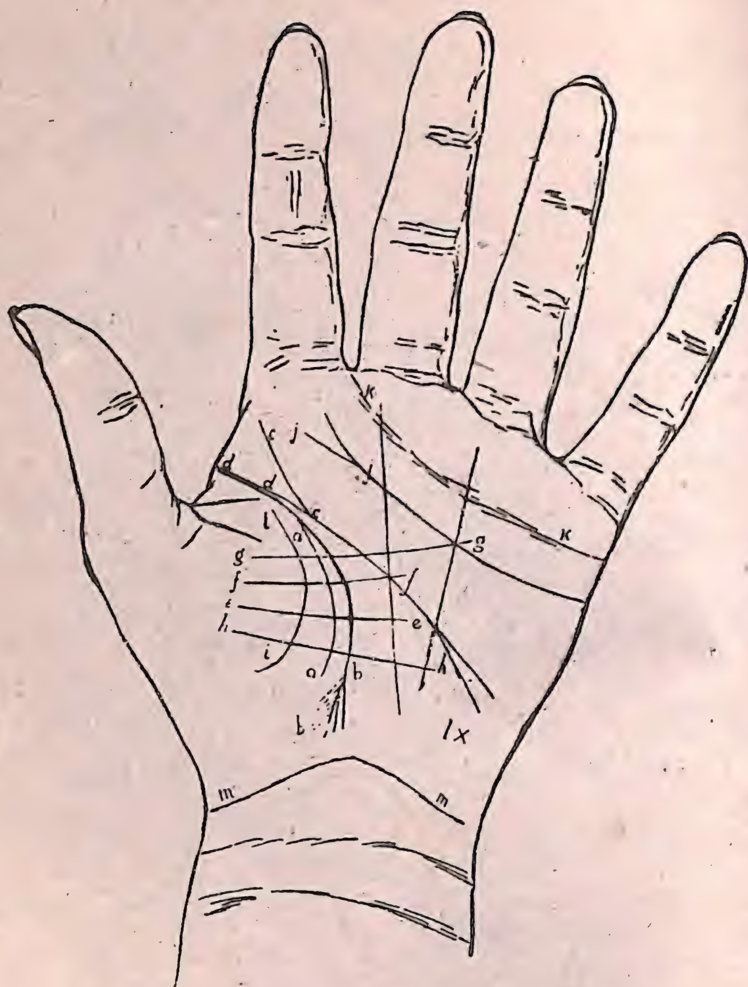


(h) वृत्त

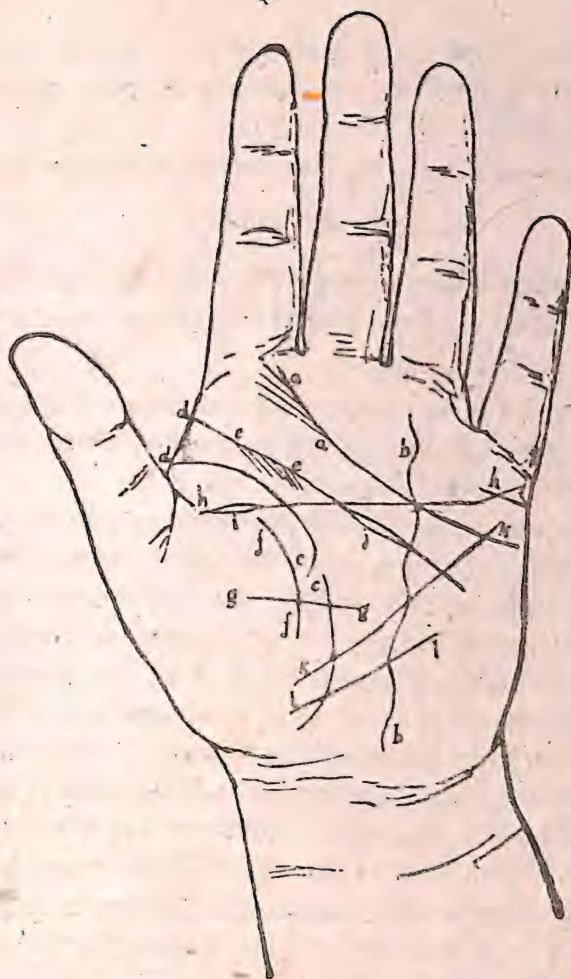


(i) त्रिशूल एवं तीर

चित्र— 15
हाथ में पाए जाने वाले चिन्ह



चित्र— 16 हाथ की प्रमुख रेखाएं



चित्र— 17
हांथ की प्रमुख रेखाएं

चली जाती हैं। (चित्र संख्या 14) इस प्रकार की रेखाएं प्रधान रेखा को शक्तिहीन बनाती हैं।

अगर हाथ लगभग सभी दिशाओं में जाने वाली अनेक रेखाओं से भरा हो तो व्यक्ति चिन्तापूर्ण स्वभाव का होता है। वह जल्दी घबरा जाता है। साधारण सी बात से उसकी भावनाएं आहत होती हैं।

छोटी से छोटी बात पर ध्यान देने से ही हस्तविज्ञान में निपुर्णता प्राप्त होती है।

दायां और बायां हाथ

दांये और बांयें हाथ के अन्तर को समझना हस्त परीक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य के दोनों हाथ एक दूसरे से भिन्न होते हैं यह अन्तर अधिकतर रेखाओं के रूपों, उनकी स्थितियों और चिन्हों के कारण होता है।

यूं तो दोनों हाथों का ही अध्ययन आवश्यक है लेकिन दायें हाथ से जो सूचना मिले उसे अधिक विश्वसनीय मानना चाहिए। धारणा है कि बायां हाथ व्यक्ति को जन्म से मिलता है और दायें हाथ का निर्माण वह स्वयं करता है।

बायां हाथ व्यक्ति के प्राकृतिक स्वभाव को प्रभावित करता है जबकि दायें हाथ में जन्म के बाद मिलने वाले प्रशिक्षण, अनुभव और जीवन में जिस वातावरण का सामना किया हो उसके अनुसार रेखाएं और चिन्ह होते हैं। मध्यकालीन युग में बांयें हाथ को देखने की प्रथा थी ऐसा विश्वास किया जाता है कि हृदय के निकट होने के कारण वह व्यक्ति के जीवन का प्रतिबिम्ब दिखाने का सच्चा दर्पण है। मैं इसे अन्धा विश्वास मानता हूँ। इसी के कारण हस्तविज्ञान की अवन्नति हुई है। लेकिन वास्तविकता यह है कि व्यक्ति दायें हाथ को प्रयोग में लाता है इसलिए बायें हाथ की अपेक्षा मांस पेशियों में तथा स्नायुओं में उसका अधिक विकास होता है। मस्तिष्क के विचारों और आदेशों का पालन जितना अधिक दायां हाथ करता है, उतना बायां हाथ नहीं करता। मानव शरीर एक धीमे लेकिन विकास की दौर से गुजरता है। और उसमें जो भी परिवर्तन होता है उसके प्रभाव की छाप शरीर की सारी व्यवस्था पर पड़ती है इसलिए उचित यही होगा कि उन परिवर्तनों को देखने के लिए दायें हाथ की परीक्षा करनी चाहिए। क्योंकि भविष्य में जब भी विकास से या अविकास से परिवर्तन होंगे इसी हाथ द्वारा प्रदर्शित होंगे।

इसीलिए दोनों हाथों की साथ-साथ परीक्षा करना आवश्यक है।

जो लोग बायें हाथ से काम करते हों उनका बायां हाथ ही रेखाओं का अविकास-विकास प्रदर्शित करेगा। इसलिए उनके दायें हाथ को जन्मजात गुणों का हाथ समझना होगा। कुछ

लोगों में परिवर्तन इस सीमा तक होता है कि बायें हाथ की कोई भी रेखा दायें हाथ की रेखाओं से नहीं मिलती। कुछ लोगों में परिवर्तन इतना धीमे-धीमे होता है कि रेखाओं में बहुत कम अन्तर दिखाई देता है। जिस हाथ में परिवर्तन अधिक हो समझ लेना चाहिए कि उस व्यक्ति का जीवन अत्यन्त घटनापूर्ण रहा है। यदि हाथ का ध्यान से अध्ययन किया जाए तो व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, विचारों, कार्यों में होने वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध में पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त हो सकती है।

4. जीवन रेखा

प्रकृति ने जिस प्रकार हमारे चहरे पर नाक कान के स्थान निर्दिष्ट किए हैं उसी प्रकार हाथ में जीवन रेखा, शीर्ष रेखा आदि अन्य चिन्हों के स्थान भी निश्चित किए गए हैं। इसलिए यदि रेखाएं यदि अपने प्राकृतिक स्थानों से हटकर असाधारण स्थितियां ग्रहण कर लें तो असाधारण परिणामों की आशा करना युक्तिसंगत होगा। अगर मनुष्य के स्वाभाविक गुणों में इस प्रकार के परिवर्तनों का प्रभाव पड़ सकता है तो उसके स्वास्थ्य पर क्यों नहीं पड़ेगा। कुछ लोग जो हस्तविज्ञान को महत्व नहीं देते इस बात पर विश्वास नहीं करते कि हस्तविज्ञान रोग और मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर सकता है। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में ऐसे कीटाणु या प्रवृत्तियां होती हैं जो किसी भी समय उसकी मृत्यु का कारण बन सकती हैं। यह कीटाणु स्नायुओं के तालमेल को दूषित करते हैं। उनका प्रभाव स्नायु के माध्यम से हाथ पर पड़ता है।

जीवन रेखा (चित्र संख्या 13) बृहस्पति क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होकर बीच की ओर जाती है और शुक्र क्षेत्र को घेर लेती है। इस रेखा पर जीवन की अवधि, रोग और मृत्यु अंकित होती है और अन्य रेखाओं का जो पूर्वाभास प्राप्त होता है। जीवन रेखा उसकी पुष्टि करती है।

जीवन रेखा लम्बी, संकीर्ण, गहरी अनियमितताओं से रहित, बिना टूटफूट के और क्रास चिन्हों से रहित होनी चाहिए। इस प्रकार की दोषहीन रेखा दीर्घआयु, बेहतर स्वास्थ्य, जीवन शक्ति और प्राणवान होने की सूचक होती है।

यदि जीवन रेखा श्रंखलाकार हो तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य कमजोर होता है विशेषरूप से जब हाथ मुलायम हो। जब रेखा नियमित या सम हो जाती है तो स्वास्थ्य ठीक रहता है।

अगर जीवन रेखा बायें हाथ में टूटी हो और दायें हाथ में पूरी हो तो वह किसी गम्भीर बिमारी का सूचक होती है। अगर दोनों हाथों में टूटी हुई हो तो प्रायः मृत्यु की सूचक होती हैं। अगर एक टूटा हुआ भाग शुक्र क्षेत्र के अन्दर की ओर मुड़ जाए तो मृत्यु होना निश्चित है। (चित्र संख्या 17 CC)

अगर जीवन रेखा हाथ के अन्दर की ओर के बजाय बृहस्पति क्षेत्र के मूल स्थान से आरम्भ हो तो यह समझना चाहिए की वह व्यक्ति आरम्भ से ही महत्वकांक्षी है।

अगर जीवन रेखा घनिष्टता से शीर्ष रेखा से जुड़ी हो तो जीवन का मार्ग दर्शन युक्ति संगत और बुद्धिमानी से होता है। लेकिन वह व्यक्ति उन सभी बातों में और कामों में सावधानी बरतता है। जिनका सम्बन्ध स्वयं उसी से होता है। (चित्र संख्य 16 DD)

जब जीवन रेखा और शीर्ष रेखा के बीच में दूरी मध्यम हो तो व्यक्ति अपनी योजनाओं और विचारों को कार्यान्वित करने में अधिक स्वतन्त्र होता है। ऐसी स्थिति उसे स्फूर्तिवान और जीवट वाला बनाती है। (चित्र संख्या 17 DD)

लेकिन अगर दूसरी दूरी अधिक हो तो उस व्यक्ति को अत्याधिक आत्मविश्वास होता है। वह दुस्साहसी, आवेशात्मक और जल्दबाज बन जाता है। युक्तिसंगतता उसके लिए कोई अर्थ नहीं रखती।

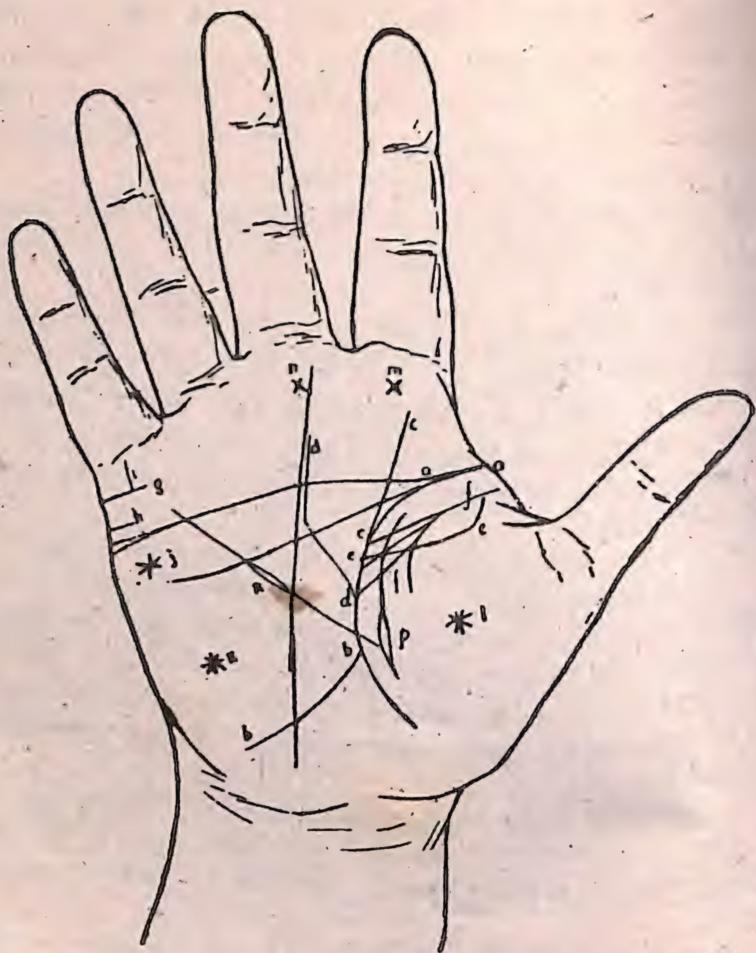
जीवन रेखा, शीर्षरेखा और हृदय रेखा का एक साथ जुड़ा होना (चित्र संख्या 18 AA) हाथ में अत्यन्त दुर्भाग्य सूचक चिन्ह है। वह इस बात की सूचना देता है कि अपनी बुद्धिहीनता के या आवेश में आकर वह व्यक्ति अपने आपको संकट और महाविपत्ति में डाल लेगा। यह चिन्ह इस बात का भी द्योतक है कि उस व्यक्ति को अपने ऊपर आने वाले संकटों की या उन संकटों को जो दूसरों को साथ व्यवहार करने से आ सकते हैं, बिल्कुल अनुभूति नहीं होती।

जब जीवन रेखा अपने मध्य में विभाजित हो जाती है और शाखा चन्द्र क्षेत्र के मूल स्थान को जाती है (चित्र संख्या 18 CC) तो एक अच्छी बनावट के दृढ़ हाथ का व्यक्ति अस्थिर और अधीर होता है। वह एक स्थान में टिककर नहीं बैठ सकता। यात्राओं से उसे चैन मिलता है। अगर इस प्रकार का योग पिलेपिले मुलायम हाथ में हो तो जिसमें शीर्ष रेखा झुकी हुई हो तो भी वह व्यक्ति आधीर और अस्थिर होता है। उत्तेजना पूर्ण अवसरों के लिए लालायित रहता है। लेकिन इस प्रकार की उत्तेजना किसी दुष्कर्म या शराब पीने से शान्त होती है।

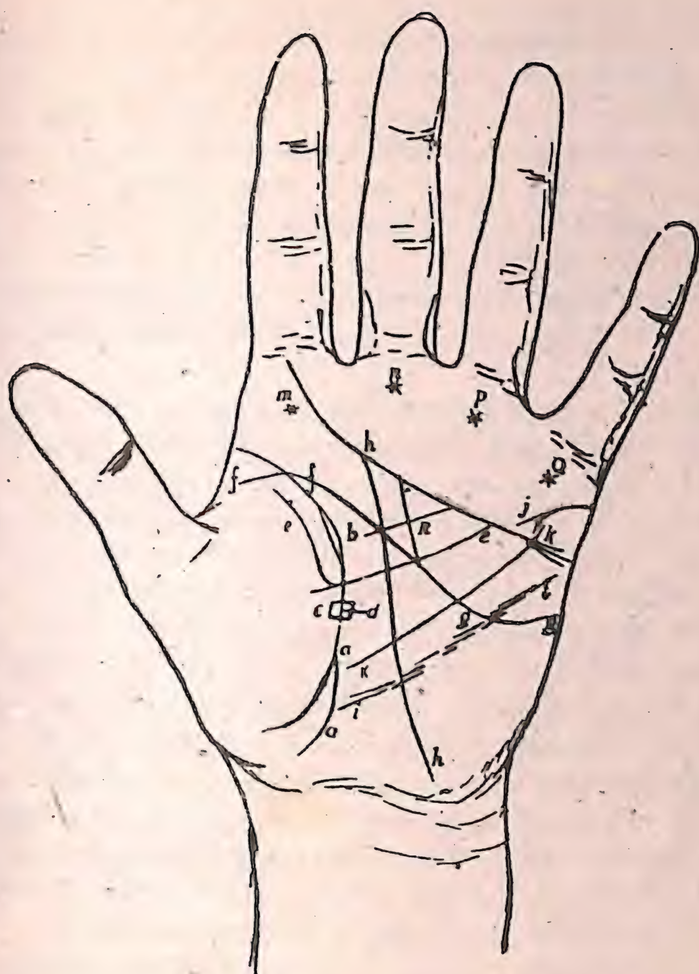
अगर जीवन रेखा से बाल जैसी सूक्ष्म रेखाएं नीचे की ओर गिरती हों या उससे जुड़ी हों तो जिस आयु में वे दिखाई दें उसी आयु में जीवन शक्ति कम होती है। ऐसी रेखाएं अधिकतर जीवन रेखा के अन्त में दिखाई देती है और जीवन शक्ति के विघटन की सूचक होती हैं।

जो रेखाएं जीवन रेखा से निकलकर ऊपर की ओर जाती हैं वे अधिकारों में वृद्धि, आर्थिक लाभ और सफलता की सूचक होती हैं।

अगर ऐसी कोई रेखा बृहस्पति क्षेत्र की ओर चली जाए (चित्र संख्या 18 CC) तो जिस आयु पर ऐसा योग बने उसी आयु में पद या व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होती है। यह योग महत्वाकांक्षा पूरी करता है। अगर ऐसी रेखा शनि क्षेत्र की और जाए और भाग्य रेखा में आकर चलने लगे तो धन लाभ होता है। सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति होती है। लेकिन दृढ़



चित्र— 18
हाथ की प्रमुख रेखाएं



चित्र— 19
हाथ की प्रमुख रेखाएं

निश्चय और परिश्रम आवश्यक होता है। (चित्र संख्या 18 CC)

अगर ऊपर की ओर जाती हुई रेखा जीवन रेखा से निकलकर सूर्य क्षेत्र की ओर जाए तो हाथ के गुणों के अनुपात में व्यक्ति को विशिष्टता प्राप्त होती है।

अगर ऐसी रेखा बुद्ध क्षेत्र की ओर जाए तो हाथ के गुणों और बनावट के अनुसार व्यापार और विज्ञान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा वर्गाकार हाथ में योग होने पर होता है। यदि हाथ चमचकार हो तो उसे किसी खोज या आविष्कार में सफलता प्राप्त होती है। नुकीले हाथ वाले को आर्थिक मामलों में सफलता मिलती है जो जुए, सट्टे या व्यापार में खतरा मोल लेने पर मिलती है।

अगर जीवन रेखा अन्त पर दो शाखाओं में विभाजित हो जाए और दोनों शाखाओं के बीच दूरी अधिक हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु अपने जन्म स्थान से कहीं दूर होती है। (चित्र संख्या 19 AA)

यदि जीवन रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो वह तब तक बना रहता है जब तक वह व्यक्ति किसी रोग से पीड़ित रहता है। (चित्र संख्या 19 B)। और यदि द्वीप का चिन्ह रेखा के आरम्भ में हो तो समझ लेना चाहिए कि उस व्यक्ति का जन्म रहस्यपूर्ण है।

यदि जीवन रेखा पर वर्ग बना हो तो वह मृत्यु से रक्षा करता है। यदि द्वीप वर्ग से घिरा हो तो अस्वस्थता से भी रक्षा हो जाती है। यदि हथेली के बीच से आने वाली कोई रेखा जीवन रेखा को काटे और उस स्थान को वर्ग घेरता हो तो दुर्घटना से रक्षा होती है।

जीवन रेखा पर वर्ग अत्यन्त शुभ और सुरक्षा का लक्षण होता है।

जीवन रेखा की सहायक रेखा (चित्र संख्या 13) जो अन्दर की ओर होती है मंगल रेखा कहलाती है। जो सुगठित व सम रेखाएं जीवन रेखा के साथ चलती हैं जीवन पर शुभ प्रभाव डालती हैं। (चित्र संख्या 17 FF) लेकिन जो आड़ी-तिरछी रेखाएं जीवन रेखा को काटती हैं, विरोधियों और उस व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप करने वालों के कारण चिन्ता और बाधा पैदा करने की सूचक होती हैं। (चित्र संख्या 17 BB) इन रेखाओं का अन्त कहां और किस प्रकार होता है इस पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। यदि वे केवल जीवन रेखा को काटती हैं। (चित्र संख्या 17 BB) तो समझ लीजिए कि उस व्यक्ति के सम्बन्धी उसके परिवारिक जीवन में दखल देकर उसे परेशान कर रहे हैं।

जब ये रेखाएं जीवन रेखा को काटकर भाग्य रेखा पर बढ़ती हैं (चित्र संख्या 16 CC) तो सम्बन्धी व्यावसायिक और सांसारिक क्षेत्र में तथा अन्य सांसारिक मामलों में विरोध करेंगे और उसे हानि पहुंचायेंगे।

यदि ऐसी रेखा शीर्ष रेखा तक पहुंच जाए तो इसका निष्कर्ष होता है—विरोधी उसके प्रेम के मामले में दखल अन्दाजी करेंगे। बाधाएं डालेंगे। जीवन रेखा के कटने के स्थान से जान लेना चाहिए कि यह घटना कब होगी।

अगर ऐसी रेखाएं सूर्य रेखा को काटें तो विरोधी प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचायेंगे। बदनामी होगी। अपमान का मुंह देखना पड़ेगा। ऐसा कब होगा, उस समय का निर्धारण वहीं से करें जहां कोई रेखा सूर्य रेखा को काटती हो। (चित्र संख्या 16 HH)

जब कोई रेखा सारे हाथ को काटकर विवाह रेखा का स्पर्श करे तो विवाह सम्बन्ध टूट जाता है। (चित्र संख्या 17 HH)

यदि उस रेखा में द्वीप या द्वीप जैसे चिन्ह हों तो जीवन में बदनामी, विरोध और अपमान का समाना करना पड़ेगा। (चित्र संख्या 17 I)

लेकिन अगर वह रेखा जीवन रेखा के समानान्तर चलती हो तो उस व्यक्ति के जीवन पर दूसरों का प्रभाव अधिक पड़ता है।

5. मंगल रेखा

मंगल रेखा (चित्र संख्या 13) जीवन रेखा की सहायक होती है। इसे भीतरी जीवन रेखा भी कहते हैं। यह पहले मंगल क्षेत्र से निकलती है और फिर जीवन रेखा के साथ-साथ चलती है। लेकिन जीवन रेखा के अन्दर की अन्य रेखाएं मंगल रेखा से भिन्न होती हैं।

यदि मंगल रेखा वर्गाकार और चौड़े हाथ में हो तो बेहतर स्वास्थ्य की सूचक होती हैं। ऐसे लोग बुद्धिजीवी होते हैं। सेना और पुलिस के कामों में उनकी दिलचस्पी होती है। स्वास्थ्य की प्रबलता उनमें इतनी स्फूर्ति भर देती है कि वे हर जगह पैर जमाते हैं। और झगड़ा करने को तैयार हो जाते हैं यदि यह रेखा किसी सेना के अधिकारी के हाथ में हो तो सौभाग्य सूचक होती है।

यदि मंगल रेखा की कोई शाखा चन्द्र क्षेत्र की ओर जाए तो वह व्यक्ति शराब और अन्य नशों के चक्कर में पड़ जाता है।

लम्बे-संकीर्ण हाथ में जो मंगल रेखा पाई जाती है वह जीवन रेखा के साथ होती है वह कमजोर और फीकी होती है। यह जीवन रेखा की निर्बलता और अभाव की पूर्ति करती है।

यदि जीवन रेखा कहीं पर टूटी हो तो वह मृत्यु की सूचक होती है लेकिन अगर उस स्थान पर मंगल रेखा पुष्ट हो तो मृत्यु की सम्भावना नहीं रहती।

6. शीर्ष रेखा

शीर्ष रेखा का मुख्य रूप से व्यक्ति की मनोवृत्ति, विचारधारा या विचार पद्धति से सम्बन्धित होता है। वह बौद्धिक शक्ति, योग्यता आदि गुणों की दिशा सूचित करती है।

जो शीर्ष रेखा किसी नुकीले हाथ में नीचे की ओर झुककर चलती है वह अन्य हाथों की तुलना में आधी भी प्रभावशाली नहीं होती।

शीर्ष रेखा तीन स्थानों से आरम्भ होती है—बृहस्पति क्षेत्र के मध्य से, जीवन रेखा के आरम्भ से और जीवन रेखा के भीतर मंगल क्षेत्र से।

अगर शीर्ष रेखा बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ हो (चित्र संख्या 20 CC) और जीवन रेखा को स्पर्श करती हो, साथ ही लम्बी हो तो अत्यन्त शक्तिशाली मानी जाती है। ऐसे व्यक्ति महत्वाकांक्षी होते हैं और उसे पूरा करने के लिए उनमें स्फूर्ति, क्षमता, योग्यता, दृढ़ निश्चय और युक्ति संगतता होती है। वह दूसरों पर शासन करता है। अपनी प्रत्येक छोटी-बड़ी योग्यता पर सावधानी से काम करता है। अपनी प्रशासन क्षमता पर उसे गर्व होता है। अनुशासनप्रिय होता है लेकिन किसी पर अन्याय नहीं करता।

यदि शीर्ष रेखा बृहस्पति क्षेत्र से निकलती हो लेकिन जीवन रेखा से कुछ अलग हो तो उस व्यक्ति में भी वही गुण होते हैं। लेकिन प्रशासन और कूटनीति के गुण कुछ कम होते हैं। उतावलापन होता है। इसलिए निर्णय लेने में जल्दबाजी करते हैं। और कार्य की मात्रा कम होता है। लेकिन संकटकाल में नेतृत्व की क्षमता दिखाने का उसे पूरा अवसर मिलता है। शीघ्र निर्णय लेने की प्रवृत्ति के कारण आसानी से स्थिति को नियन्त्रण में ले आता है। लेकिन अगर शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच की दूरी अधिक हो तो वह दुस्साहसी और अहंवादी होता है। बिना सोचे समझे संकट में कूद पड़ता है।

अगर जीवन रेखा के आरम्भ में शीर्ष रेखा जुड़ी हो (चित्र संख्या 16 DD) तो उसके स्वभाव में विनम्रता और संवेदनशीलता होती है। हर बात में सावधानी बरतना, खूब सोच-विचारकर काम में हाथ डालना उसका स्वभाव होता है।

अगर शीर्ष रेखा पहले मंगल रेखा के अन्दर से आरम्भ हो (चित्र संख्या 19 FF) तो विशेष शुभ नहीं मानी जाती। ऐसी रेखा वालों व्यक्तियों का दिमाग चिड़चिड़ा होता है। अस्थिर स्वभाव, हर समय चिन्तित रहने वाला होता है पड़ौसियों से लड़ता

झगड़ता रहता है। दूसरों के काम में उसे दोष ही दोष दिखाई देते हैं।

अगर शीर्ष रेखा सीधी और स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति में व्यवहारिक बौद्धिकता और यथार्थ प्रियता पाई जाती है।

अगर शीर्ष रेखा पहले सीधी चले और फिर हल्का सा ढलान ले ले तो वह व्यक्ति व्यवहारिकता और कल्पना में संतुलन स्थापित कर लेता है। वह न तो कल्पना की धाराओं में बहता है और न व्यावहारिकता पर अड़ा रहता है।

अगर सम्पूर्ण शीर्ष रेखा ढलान लिए हो तो व्यक्ति का झुकाव उन्हे कार्यों की ओर होता है जिनके लिए कल्पना शक्ति की आवश्यकता होती है। जैसे साहित्य, चित्रकारी, कल-पुर्जों का आविष्कार। जब शीर्ष रेखाओं में ढलना बहुत अधिक हो तो वह व्यक्ति रोमांटिक तबियत का और नए विचारों का होगा। जब शीर्षरेखा ढलान के साथ चन्द्र क्षेत्र पर अन्त में दो भागों में बंटकर समाप्त हो जाए तो वह अपनी कल्पना शक्ति की सहायता से साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

यदि रेखा अत्यन्त सीधी और लम्बी होकर हाथ के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंच जाए तो उस व्यक्ति में सामान्यत से अधिक बौद्धिक क्षमता होती है। लेकिन वह उसका उपयोग केवल अपने स्वार्थ के लिए ही करता है।

अगर शीर्ष रेखा सीधी जाए या दूसरे मंगल क्षेत्र पर कुछ ऊपर की ओर मुड़ जाए तो व्यक्ति को व्यापारिक क्षेत्र में आशा से अधिक सफलता मिलती है अतः वह अपना महत्व जानता है और बड़ी तेजी से धन इकट्ठा कर लेता है। अपने मातहतों से कड़ा परिश्रम कराता है।

यदि शीर्ष रेखा छोटी हो और कठिनाई के साथ बीच में पहुंचे तो उस व्यक्ति में कल्पना शक्ति की कमी होती है। पूर्ण रूप से व्यवहारिक होता है।

यदि शीर्ष रेखा असाधारण रूप से छोटी हो तो उसकी युवावस्था में ही अचानक मृत्यु हो जाती है। मृत्यु मानसिक रोग से होती है।

यदि शीर्ष रेखा शनि क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो अचानक युवावस्था में उसकी मृत्यु हो जाती है।

शीर्ष रेखा श्रृंखलादार हो या छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो तो उस व्यक्ति का मन अस्थिर होता है। उसमें निर्णय लेने की क्षमता नहीं होगी।

शीर्ष रेखाओं में छोटे-छोटे द्वीप हों और सूक्ष्म रेखाएं हों तो सिर में तीव्र पीड़ा एक स्थायी रोग बन जाती है। मस्तिष्क रोग से पीड़ित होने की अशंका रहती है।

शीर्ष रेखा अपने समान्य स्थान से ऊँची स्थित होकर और हृदय रेखा से दूरी कम हो तो मन का हृदय पर पूर्ण अधिकार होता है।

यदि शीर्ष रेखा अन्तिम छोर पर मुड़ जाए या नीचे की ओर जाते समय उसमें से कोई

शाखा किसी ग्रहक्षेत्र में चली जाए तो जिस क्षेत्र में वह जायेगी। उसके गुण शीर्ष रेखाओं में समाविष्ट हो जायेंगे।

यदि वह चन्द्र क्षेत्र की ओर जायें तो कल्पना शक्ति और रहस्यवादिता में वृद्धि होगी। गुप्त विद्या तन्त्र मन्त्र की और झुकाव होगा।

यदि बुध क्षेत्र की और जायेगी तो व्यापार और विज्ञान की रुचि पैदा होगी।

यदि सूर्य क्षेत्र की ओर जायेगी तो बदनाम होने की प्रवृत्ति पैदा हो जाएगी। बुरे काम पर अपराध करने की प्रेरण मिलेगी।

यदि शनि क्षेत्र की ओर जायेगी तो धर्म और संगीत कलाओं की ओर गम्भीरता से झुकाव पैदा होगा। बृहस्पति क्षेत्र की ओर जाने से आत्माभिमान और अधिकार प्राप्त करने की लालसा पैदा होगी।

यदि कोई रेखा शीर्ष रेखा से निकलकर हृदय रेखा में जा मिले मन में किसी के प्रति इतना आकर्षण उत्पन्न हो जाएगा कि वह उचित अनुचित का ध्यान न करके अपने बुद्धि विवेक को त्याग कर संकट में कूद पड़ेगा।

दोहरी शीर्ष रेखा कुछ ही कम देखने में आती है। लेकिन यदि है तो मस्तिष्क और मानसिक शक्ति दो गुणा हो जाती है। स्वभाव भी दो हो जाते हैं। एक स्वभाव नम्र और संवेदनशील होता है। दूसरा आत्मविश्वास और गारिमा से पूर्ण क्रूर। ऐसे व्यक्तियों में विशेष रूप से सर्वोमुखी गुण होते हैं। भाषा पर पूर्ण अधिकार होता है। इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय प्रबल होता है।

यदि शीर्ष रेखा दोनों हाथों में टूटी हो तो ऐसी हिंसात्मक आघात या दुर्घटना का पूर्वाभास देती है जिसमें सिर में चोट आए।

शीर्ष रेखा पर द्वीप निर्बलता का चिन्ह होता है (चित्र संख्या-17-3) यदि रेखा द्वीप से आगे न बढ़े तो वह व्यक्ति जीवनभर मानसिक रोग से मुक्ति न पा सकेगा।

यदि शीर्ष रेखा स्वयं या उसकी कोई शाखा बृहस्पति क्षेत्र पर किसी नक्षत्र चिन्ह से जा मिले तो सारी योजनाएं और सारे प्रयास सफल होते हैं।

जिस व्यक्ति की शीर्ष रेखा पर से बहुत सी सूक्ष्म रेखाएं हृदय रेखा की ओर उठ रही हो वह प्रेम का ढोंग करता है, वास्तविक प्रेम नहीं।

शीर्ष रेखा पर वर्ग हो तो हिंसात्मक आक्रमण या दुर्घटना से वह व्यक्ति अपने साहस तथा चैतन्यता से अपनी रक्षा कर लेगा।

यदि शीर्ष रेखा और जीवन रेखा में दूरी अधिक न हो तो शुभ होता है। मध्यम हो तो व्यक्ति में अद्भुत स्फूर्ति और आत्म विश्वास होता है। विचार शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है। (चित्र संख्या 21 F) वकीलों, अभिनेताओं और धार्मिक उपदेश देने वालों के हाथ में ऐसा योग अत्यन्त शुभ होता है। लेकिन स्वभाव में जल्दबाजी और अधीरता होती है। उससे

काम बिगड़ सकता है।

यदि शीर्ष रेखा जीवन रेखा से घनिष्टता से जुड़ी हो और यह झुकाव हाथ में नीचे की और हो तो आत्म विश्वास की कमी होती है। जिससे काम बिगड़ जाता है।

यदि शीर्ष रेखा जीवन रेखा के बीच दूरी कुछ अधिक हो तो व्यक्ति उतावला और उत्साही होता है। आत्मविश्वास सीमा को लांघ जाता है।

यदि शीर्ष रेखा जीवन रेखा से घनिष्टता से जुड़ी हो और यह झुकाव हाथ में नीचे की ओर हो तो उस व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है। अत्याधिक संवेदनशील होने के कारण कष्ट उठाता है। और सामान्य बातों से उसका मन दुखी हो जाता है।

7. सात प्रकार के हाथों से शीर्ष रेखा का सम्बन्ध

हाथ की बनावट के अनुसार ही शीर्ष रेखा होती है। व्यवहारिक हाथ में व्यवहार युक्त रेखा होती है और कलाप्रिय हाथ में कला रुचि को प्रभावशाली बनाने वाली रेखा होती है। यदि शीर्ष रेखा हाथ की बनावट के अनुसार न हो तो उसके प्रभावों को जानना महत्वपूर्ण होता है। शीर्ष रेखा की इस प्रकार की विविधताएं तभी होती हैं जब मस्तिष्क अपने स्वाभाविक नियम के अनुसार काम न करे। मस्तिष्क की कार्यशीलता मनुष्य के विकास के साथ बदलती रहती है। बीस वर्ष की अवस्था में जो मस्तिष्क का विकास होता है उसके कारण तीस वर्ष की अवस्था में पहुंचने तक उसके सारे जीवन में परिवर्तन हो सकता है। मस्तिष्क का यह विकास स्नायुजाल के द्वारा हाथ पर प्रभाव डालता है। इस तरह विचारधारा और कार्यशीलता की प्रवृत्ति का संकेत हाथ में वर्षों पहले दिखाई दे जाता है।

निम्न श्रेणी के हाथ में शीर्ष रेखा छोटी, सीधी और भारी होती। यदि उसमें असाधारण रूप से विकास हो तो व्यक्ति में असाधारण गुण दिखाई देते हैं।

यदि शीर्ष रेखा चन्द्र क्षेत्र की ओर झुक जाएं तो व्यक्तियों में कल्पनाशीलता आ जायेगी। जिससे अन्ध विश्वास की भावना पैदा हो जायेगी जो क्रूर और पाश्विक प्रवृत्तियों के प्रतिकूल होगी। यही कारण है कि आदिम जातियों में अन्धविश्वास की मात्रा अधिक होती है।

शीर्ष रेखा और वर्गाकर

वर्गाकार हाथ उपयोगी और व्यवहारिक होता है। विज्ञान के प्रति रुचि, व्यवस्था और युक्ति संगतता उसके विशेष गुण होते हैं।

इस प्रकार के हाथ में शीर्ष रेखा सीधी-लम्बी और हाथ के अनुरूप होती है। यदि उसका झुकाव नीचे की ओर है तो कल्पनाशीलता में वृद्धि हो जाती है उस व्यक्ति से भी अधिक जिसका हाथ कुछ नुकीला या अधिक नुकीला हो। लेकिन दोनों प्रकार के व्यक्तियों की कार्यप्रणाली में उनकी मानसिक प्रवृत्तियों के कारण काफी अन्तर होगा। वर्गाकार हाथ में झुकी हुई शीर्ष रेखा ही कल्पनाशीलता का मूल आधार होगी। नुकीले हाथ में शीर्ष रेखा के झुकाव से व्यक्ति में कोरी कल्पनाशीलता और प्रेरणात्मक प्रवृत्तियां होंगी। यह अन्तर विशेष रूप से लेखकों, चित्रकारों, संगीतकारों आदि के हाथों में देखने में आता है।

शीर्ष रेखा और चमचाकार हाथ

सक्रियता आविष्कार की प्रवृत्ति, स्वतन्त्रता, आत्म निर्भरता और मौलिकता इस प्रकार के हाथ के विशेष गुण होते हैं। ऐसे हाथ में स्वाभाविक रूप से शीर्ष रेखा लम्बी, सुस्पष्ट और हल्की सी झुकी होती है। यदि झुकाव की मात्रा कुछ कम हो जाए तो उपर्युक्त गुण दो गुणे हो जाते हैं। यदि शीर्ष रेखा सीधी हो तो व्यक्ति के व्यवहारिक विचार और योजनाएं दूसरों पर इतना नियन्त्रण रखेंगी कि उनका कार्यान्वित होना कठिन हो जाएगा। स्वभाव में अधीरता, चिड़चिड़ापन और असन्तोष आ जाएगा।

शीर्ष रेखा और दार्शनिक हाथ

विचारशीलता, पाठन, मनन, ज्ञान की खोज दार्शनिक हाथ की विशेषता होती है। ये व्यक्ति अपने विचारों को कार्यान्वित करने में कल्पनाशील और सनकी होते हैं। ऐसे हाथ में शीर्ष रेखा लम्बी होती है और जीवन रेखा से जुड़ी होती है। हाथ में कुछ नीचे की ओर स्थित होती है साथ ही नीचे की ओर झुकी भी होती है। यदि रेखा सीधी हो और ऊपर की ओर स्थित हो तो व्यक्ति हर बात में दूसरों की आलोचना करने वाला, अनावश्यक विश्लेषण करने वाला और दूसरों के दोषों को देखने वाला बन जाएगा। अपने साथियों के अध्ययन का उद्देश्य ज्ञान वृद्धि नहीं बल्कि उनकी कमी या दोष खोजना होगा। वास्तविक को अवास्तविक और अवास्तविक को वास्तविक समझेगा। निडर होगा। कभी कल्पनाशील बन जाएगा और कभी यथार्थवादी प्रतिभाशाली और विशिष्ट व्यक्ति होगा। दार्शनिक बनकर दर्शन शास्त्र का मजाक उड़ाएगा।

शीर्ष रेखा और नुकीला हाथ

जिन लोगों के हाथ नुकीले होते हैं वे कलाप्रिय और भावुक होते हैं उनके हाथ की शीर्ष रेखा धीरे-धीरे झुकती हुई चन्द्र क्षेत्र में पहुंच जाती है। ऐसी स्थिति में सौन्दर्य प्रेमियों को बन्धन मुक्त होकर घुमक्कड़ बनने की आजादी मिल जाती है। उनमें भावुकता, रोमांस और आदर्शवाद के गुणों की अधिकता होती है। कलाकृत्तियों के प्रति आकर्षण होता है। लेकिन कला सम्बन्धी अपने सच को साकार नहीं कर पाते। लेकिन अगर शीर्ष रेखा सीधी हो तो व्यवहारिक बन जाते हैं। अपने विचारों और योग्यताओं को क्रियान्वित करने में सफल हो जाते हैं। अपनी इच्छाशक्ति और दृढ़ निश्चय से अपनी आराम तलबी की आदत को बदल देते हैं। जब तक झुकी हुई रेखा वाला एक चित्र बनाएगा वे दस बना देंगे। उन्हें बेचने में भी सक्षम हो जायेंगे।

शीर्ष रेखा और बहुत ही नुकीला हाथ

बहुत नुकीले हाथ की शीर्ष रेखा स्वभाविक रूप से बहुत ही झुकी हुई होती है। ऐसे व्यक्ति स्वपन लोक में विचरण करते रहते हैं। ऐसे हाथों में सीधी शीर्ष रेखा बहुत कम पाई जाती है। यदि हो तो दांये हाथ में होती है। यदि हो तो समझ लेना चाहिए कि परिस्थितियों से विवश हो वह व्यक्ति व्यवहारिक बन गया है। सीधी रेखा कला के क्षेत्र में उसे अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का पूरा अवसर प्रदान करेगी। अपनी कला की योग्यता को व्यवहारिक और व्यवसायिक बनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहन की अत्यन्त आवश्यकता होगी।

यदि विभिन्न प्रकार के हाथों में शीर्ष रेखा अपना स्वाभाविक रूप बदल ले तो उसके बदले हुए गुणों का अर्थ निकालना चाहिए। आप समझ ही गए होंगे। शीर्ष रेखा अनेक रूप धारण कर सकती है। शीर्ष रेखा के बदले हुए रूपों को हाथों के अन्य चिन्हों से अधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिए।

8. हृदय रेखा

हाथ के अध्ययन में हृदय रेखा को भी एक महत्वपूर्ण और आदर्शपूर्ण स्थान प्राप्त है। जीवन के नाटक में पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति आकर्षण स्वभाविक है। स्त्री-पुरुष के आपसी प्रेम की भावनाओं का परिचय हाथ से ही प्राप्त होता है। और यह भूमिका निभाती है हृदय रेखा। (चित्र संख्या 13) जो बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होकर हाथ के ऊपरी भाग में शनि और सूर्य क्षेत्रों के मूल स्थान को पार करती हुई बुध क्षेत्र के स्थान तक पहुंच जाती है।

गहरी, सुस्पष्ट और अच्छे रंग की हृदय रेखा उत्तम होती है। उसके आरम्भ होने के स्थान सभी हाथों में एक नहीं होते। वह कभी बृहस्पति क्षेत्र के मध्य भाग से, कभी तर्जनी और मध्यमा के मध्य भाग से और कभी शनि क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होती है।

यदि यह रेखा बृहस्पति क्षेत्र के मध्य भाग से (चित्र संख्या 20 DD) आरम्भ हो तो व्यक्ति आदर्श प्रेमी होता है और जिसे प्रेम करता है उसकी अराधना करता है। प्रेम में दृढ़ और विश्वसनीय होता है। वह चाहता है कि वह जिस स्त्री को प्रेम करे या करता हो, वह महान कुलीन और प्रतिष्ठित हो। वह अपने स्तर से निम्न स्तर की स्त्री के साथ कभी विवाह नहीं करता। यदि हृदय रेखा शनि क्षेत्र से आरम्भ होती हो तो कभी विवाह नहीं कर पाता। या फिर बहुत ही कम लोग विवाह करते हैं।

कभी-कभी हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र के या तर्जनी के नीचे से आरम्भ होती है (चित्र 20 CC) तो गुणों में अधिकता हो जाती है। व्यक्ति प्रेम में अन्धा हो जाता है। उसे अपने प्रेम पात्र में कोई कमी दिखाई नहीं देती। इस प्रकार के लोग प्रेम में धोखा खा जाते हैं और दुखी रहते हैं। जब प्रेम पात्र वैसा नहीं होता जैसा वह चाहते हैं तो उनकी आत्माभिमान को ऐसी चोट लगती है कि उसके प्रभाव से वे कभी उभर नहीं पाते।

यदि हृदय रेखा तर्जनी और मध्यमा के मध्य से आरम्भ हो (चित्र 20 FF) के व्यक्ति सच्चे मन से प्रेम करता है लेकिन शान्त रहता है। बेचैन नहीं होता। बृहस्पति क्षेत्र के आदर्श और आत्माभिमान, शनि क्षेत्र से प्राप्त उत्तेजना और गरिमा दोनों के बीच के गुण ग्रहण कर लेता है।

यदि हृदय रेखा शनि क्षेत्र से आरम्भ हो तो उस व्यक्ति के प्रेम में वासना अधिक होती है। इसलिए प्रेम के सम्बन्ध में वह स्वार्थी होता है। लेकिन प्रेम का उतना प्रदर्शन नहीं करता



चित्र— 21
हाथ की प्रमुख रेखाएं

जितना बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होने वाली रेखा वाले करते हैं।

यदि हृदय रेखा मध्यमा के मूल स्थान से आरम्भ हो तो वासना और रतिक्रिया की ओर प्रवृत्ति अत्याधिक हो जाती है। मान्यता है कि वासना के वशीभूत व्यक्ति बहुत स्वार्थी होता है यह दुर्गुण उन लोगों में बढ़ जाता है।

यदि हृदय रेखा अपनी स्वभाविक लम्बाई से अधिक लम्बी हो और हाथ के एक छोर से दूसरे छोर तक चली जाए तो प्रेम की भावनाओं में बाढ़ आ जाती है। वह ईर्ष्यालु हो जाता है। वह प्रवृत्ति और अधिक तब बढ़ जाती है जब हृदय रेखा आरम्भ से चलकर तर्जन के मूल स्थान में पहुंच जाए।

जब कई सूक्ष्म रेखाएं नीचे से चलकर हृदय रेखा पर धावा बोल दें (चित्र 20) तो वह व्यक्ति प्रेम का जाल इधर उधर फैंकता फिरता है। वह टिककर किसी से प्रेम नहीं कर पाता, वह व्यभिचारी हो जाता है।

शनि क्षेत्र से आरम्भ होने वाली हृदय रेखा यदि चौड़ी और श्रृंखलादार हो तो वह स्त्री या पुरुष विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित नहीं होते। एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

यदि हृदय रेखा का रंग चमकीला लाल हो तो वासना हिंसात्मक हो जाती है। वासनापूर्ति के लिए वह हिंसा (बलात्कार) भी कर सकता है।

हृदय रेखा नीचे हो और शीर्ष रेखा के निकट हो तो हृदय मन की कार्यशीलता (विचारों) में हस्तक्षेप करता है।

हृदय रेखा का रंग फीका हो तो व्यक्ति निराश स्वभाव का होता है। प्रेम आदि में उसकी विशेष दिलचस्पी नहीं होती।

यदि हृदय रेखा ऊँची हो और शीर्ष रेखा उठकर हृदय रेखा के निकट पहुंच जाए तो फल विपरीत होता है। मन हृदय की भावनाओं के नियन्त्रण करने में समर्थ होता है। इसलिए व्यक्ति हृदयहीन ईर्ष्यालु और अनुदार होता है।

यदि हृदय रेखा छिन्न-भिन्न हो तो प्रेम में निराशा मिलती है। यदि रेखा शनि के नीचे टूटी हो तो न चाहते हुए भी प्रेम सम्बन्ध टूट जाता है। यदि रेखा सूर्य क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो प्रेम में कटुता या विच्छेद व्यक्ति की मूर्खता, लालच और विचारों की संकीर्णता के कारण ऐसा होता है।

यदि हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र पर दो छोटी शाखाओं के साथ आरम्भ हो तो (चित्र 16 JJ) व्यक्ति निसन्देह है सच्चे दिल का ईमानदार और प्रेम के क्षेत्र में उत्साही होता है।

यदि हृदय रेखा नीची हो और शीर्ष रेखा की ओर ढली हो तो व्यक्ति को प्रेम में प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती।

यदि हृदय रेखा आरम्भ में दो शाखाओं में बंट जाए और उसकी एक शाखा बृहस्पति क्षेत्र पर, और दूसरी तर्जनी तथा मध्यमा के मध्य चली गई हो तो व्यक्ति प्रेम में सन्तुलित, प्रसन्नचित्त, सुखी और सौभाग्यशाली होगा। यदि एक शाखा बृहस्पति क्षेत्र में और दूसरी शनि क्षेत्र में चली जाए तो व्यक्ति का स्वभाव अनिश्चित रहेगा। विवाहित जीवन को अपने ही कारण दुखी बना लेगा।

यदि हृदय रेखा शाखाहीन और पतली हो तो व्यक्ति रुखे स्वभाव का होता है। उसके प्रेम में गरिमा नहीं होती।

हृदय रेखा की समाप्ति पर कुछ क्षेत्र के नीचे हाथ पर शाखाएं न हों तो उस व्यक्ति में सन्तान पैदा करने की क्षमता नहीं होती।

यदि शीर्ष रेखा से निकलकर सूक्ष्म रेखाएं हृदय रेखा को स्पर्श करें तो वे उन प्रभावों का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं जिनका प्रभाव हृदय सम्बन्धी विषयों पर पड़ता है। यदि ऐसी रेखाएं हृदय रेखा को काट दें तो प्रेम सम्बन्धों पर दुष्प्रभाव डालकर हानि पहुंचाती हैं।

यदि हृदय रेखा, शीर्ष रेखा और जीवन रेखा जुड़ी हुई हो तो बहुत ही अशुभ होता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम सम्बन्धी अभिलाषा पूरी करने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है।

यदि हाथ में हृदय रेखा न हो या नाममात्र को हो तो उस व्यक्ति में घनिष्ट प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता नहीं होती।

यदि हाथ मुलायम हो तो व्यक्ति अत्याधिक वासना प्रिय होता है।

यदि हाथ कठोर हो तो वासना नहीं होती। प्रेम के मामले में वह व्यक्ति नीरस होता है।

यदि किसी के हाथ में अच्छी हृदय रेखा है लेकिन बाद में फीकी पड़ जाए तो प्रेम में भीषण निराशाओं का सामना करना पड़ेगा। जिसके कारण वह हृदयहीन और प्रेम विमुख हो गया है।



चित्र— 22
हाथ की प्रमुख रेखाएं

9. भाग्य रेखा

भाग्य रेखा को (चित्र 13) शनि की रेखा भी कहते हैं। वह हाथ में नीचे से ऊपर तक जाती है।

इस रेखा पर विचार करने में हाथ की बनावट कुछ महत्वपूर्ण है। अत्यन्त सघन लोगों के हाथों में वर्गाकार और चमचाकार हाथों में यह रेखा दार्शनिक, नुकीले बहुत नुकीले हाथों की अपेक्षा कम अंकित होती है। पहली श्रेणी के हाथ में वर्गाकार हाथ की छोटी रेखा की अपेक्षा लम्बी रेखा का महत्व बहुत कम होता है।

रहस्पूर्ण बात यह है कि दार्शनिक, नुकीले और बहुत नुकीले हाथों में भाग्य रेखा लम्बी और स्पष्ट रूप से अंकित होती है। वे लोग भाग्य पर विश्वास नहीं करते हैं। लेकिन वर्गाकार और चमचाकार हाथ वाले व्यक्ति भाग्य में नहीं कर्म में आस्था रखते हैं। इसलिए उनके हाथों में भाग्य रेखा छोटी होती है या बिल्कुल नहीं होती।

भाग्य रेखा का मनुष्य के सांसारिक जीवन से सम्बन्ध होता है हमें सफलता मिलेगी या असफलता, कौन हमारे कैरियर को प्रभावित करेगा। उसके प्रभाव शुभ होंगे या अशुभ, जीवन पथ में कैसी बाधाएं और कठिनाइयां आयेंगी, उनका परिणाम हमारे जीवन पर क्या होगा—ये सारी सूचनाएं हमें भाग्य रेखा से मिलती हैं।

भाग्य रेखा मुख्य रूप से जीवन रेखा से, मणिबन्ध से, चन्द्र क्षेत्र से, शीर्ष रेखा से या हृदय रेखा से निकलती है।

यदि भाग्य रेखा जीवन रेखा से आरम्भ हो और वहीं से सबल हो तो सफलता और धन आदि व्यक्ति की अपनी योग्यता से प्राप्त होता है। लेकिन यदि वह मणिबन्ध के पास जीवन रेखा से जुड़ी हुई ऊपर उठे तो उस व्यक्ति के जीवन का प्रारम्भिक भाग उसके माता-पिता और सम्बन्धियों पर आधारित होगा। (चित्र संख्या 20 GG)

यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से आरम्भ हो और सीधी शनि क्षेत्र तक पहुंच जाए तो अत्यन्त सौभाग्य और सफलता की सूचक होती है।

यदि भाग्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से निकले तो व्यक्ति का भाग्य और सफलता दूसरों की उसके प्रति रुचि, झुकाव और उनकी मौज पर निर्भर होती है। अर्थात दूसरों की सहायता या प्रोत्साहन से ही उसे सफलता मिल सकती है, प्रायः राजनितिज्ञों सामाजिक कार्यकर्ताओं के हाथों में ऐसी रेखा होती है।

यदि भाग्य रेखा सीधी जा रही हो और चन्द्र क्षेत्र से आकर कोई रेखा उसमें जुड़ जाए

तो वह व्यक्ति इच्छानुसार सफलता प्राप्त करनें में सहायता प्रदान करेगा। लेकिन दूसरों की सहायता पर निर्भर न रहकर अपनी योग्यता और परिश्रम पर ध्यान देना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के हाथ में चन्द्र क्षेत्र से आने वाली इस प्रकार की रेखा यदि भाग्य रेखा के पास पहुंचकर उसके साथ ऊपर की ओर चलती हो तो उसका विवाह किसी धनवान पुरुष से होगा। या किसी धनवान व्यक्ति से सहायता प्राप्त होगी। (चित्र संख्या 20 HH)

यदि जीवन रेखा की राह में से किसी स्थान से कोई शाखा निकलकर शनि को छोड़कर अन्य ग्रह क्षेत्र को चली जाए तो उस क्षेत्र के गुण व्यक्ति के जीवन पर प्रभुत्व रखेंगे। उसका जीवन उन्हीं गुणों के अनुसार प्रगति करेगा।

यदि भाग्य रेखा स्वयं शनि या अन्य ग्रह क्षेत्र में चली जाए तो उस क्षेत्र के गुणों से निश्चित दिशा में सफलता मिलेगी।

यदि भाग्य रेखा बृहस्पति क्षेत्र में पहुंच जाए तो व्यक्ति को अधिकार और विशिष्टता प्राप्त होती है। प्रशासन में उच्च पदाधिकारी बनता है। मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। राजनैतिक क्षेत्र में हो तो मन्त्री, प्रधानमन्त्री, राज्यपाल या राष्ट्रपति बनता है। यदि हाथ में अन्य शुभ लक्षण भी हों तो और भी सहायक सिद्ध होते हैं। यदि रेखा का अन्त त्रिशूल के रूप में हो तो राजयोग अत्यन्त शक्तिशाली होता है।

यदि भाग्य रेखा की कोई शाखा बृहस्पति क्षेत्र में पहुंच जाए तो जीवन रेखा से जिस अवस्था में जन्म लेगी, जीवन वृत्ति में उस समय असाधारण रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि भाग्य रेखा शनि क्षेत्र में पहुंच जाए तो अति उत्तम योग होता है। महत्वकांक्षा की पूर्ति होती है।

यदि भाग्य रेखा हाथ को पारकर के मध्यमा में पहुंच जाए तो लक्षण शुभ नहीं होता। व्यक्ति हर बात में सीमा का उलंघन कर जाता है। यदि वह कमांडर होगा तो उसके मातहत अफसर उद्दंड हो जायेंगे और उसके आदेशों की अवहेलना करेंगे। और शत्रु के बजाय अपने कमांडर पर ही टूट पड़ेंगे।

यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा पर ही रुक जाए तो प्रेम भावनाओं के कारण बाधा पड़ेगी। लेकिन यदि हृदय रेखा से जुड़कर बृहस्पति क्षेत्र में पहुंच जाए तो अपने प्रेम सम्बन्ध की सहायता से अपनी उच्चतम अभिलाषा पूर्ण करने में सफल हो जाएगा। (चित्र संख्या 19 HH)

यदि भाग्य रेखा शीर्ष रेखा द्वारा आगे बढ़ने से रुक जाए तो व्यक्ति की अपनी मूर्खता या बहुत बड़ी भूल से सफलता में बाधा पड़ेगी।

यदि भाग्य रेखा मंगल पर्वत से आरम्भ हो तो अनेक कठिनाइयों, संघर्षों और संशयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन अगर आगे बढ़ती हुई शनि क्षेत्र पर चली जाए तो कठिनाइयों और बाधाओं पर विजय पाने में समर्थ हो जायेगा। उसका शेष जीवन बिना

किसी व्यवधान के बीतेगा। धैर्य, कठिन श्रम और लगन से सफलता मिलती है।

यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा से आरम्भ हो तो कठिन परिश्रम करने पर भी सफलता बिलम्ब से मिलती है। ऐसा लगभग पचास वर्ष की आयु के बाद होगा।

यदि आरम्भ से भाग्य रेखा की एक शाखा का चन्द्र क्षेत्र में और दूसरी शुक्र क्षेत्र में हो तो भाग्य और कल्पनाशीलता पर और प्रेम तथा आवेशात्मक भावनाओं पर आधारित होगा। (चित्र संख्या 21 MM)

यदि भाग्य रेखा छिन्न-भिन्न और अनियमित हो तो कैरियर निश्चित नहीं होता। उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

भाग्य रेखा जिस स्थान पर टूटी हुई होती है उसी आयु में आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। यदि टूटी हुई रेखा का दूसरा भाग पहले भाग से आरम्भ हो तो जीवन में नया परिवर्तन आता है। यदि भाग्य रेखा का दूसरा भाग सबल हो और स्पष्ट हो तो परिवर्तन इच्छानुसार होता है। नवीन क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। (चित्र संख्या 21 AA)

यदि भाग्य रेखा दोहरी हो तो शुभ लक्षण है। व्यक्ति दो प्रकार के कैरियर अपनाएगा और सफलता प्राप्त होगी।

यदि भाग्य रेखा पर चिन्ह हो तो व्यापार में होने वाली हानियों से रक्षा हो जाती है। यदि भाग्य रेखा को छूता हुआ वर्ग चिन्ह मंगल पर्वत पर जीवन रेखा की ओर हो तो घरेलू जीवन में किसी दुर्घटना का पूर्वाभास होता है। (चित्र संख्या 21 B) यदि वर्ग चिन्ह चन्द्र क्षेत्र की ओर हो तो यात्रा में दुर्घटना की सम्भावना होती है। इन्हीं स्थानों पर यदि क्रास का चिन्ह हो तो वही फल देता है। यदि क्रास भाग्य रेखा पर भी हो तो अशुभ होता है।

भाग्य रेखा पर द्वीप चिन्ह दुर्भाग्य, हानि और दुखद परिवर्तनों का सूचक होता है। (चित्र संख्या 21 D) कभी कभी द्वीप चिन्ह चन्द्र रेखा से आने वाली किसी प्रधान रेखा से जुड़ा होता है। तो प्रेम और विवाह में कठिनाइयां आती हैं। जिससे व्यवसाय और आर्थिक क्षेत्र में हानि होती है। कलंक भी लग सकता है।

जिनके हाथ में भाग्य रेखा का नाम भी नहीं होता वे जीवन में काफी सफल होते हैं। लेकिन जीवन में कोई विशेष चमक-दमक सरसता नहीं होती। वे खाते-पीते और सो जाते हैं। उनमें भावुकता नाम मात्र के लिए नहीं होती। उन्हें सुखी नहीं कहा जा सकता।

10. सूर्य रेखा

सूर्य रेखा (चित्र 13) को सफलता और प्रतिभा की रेखा भी कहा जाता है। उसमें गुणों और प्रभाव में भी भाग्य रेखा के समान, और हाथ की बनावट के अनुसार भिन्नता होती है। विशेष रूप से दार्शनिक, नुकीले और अत्यन्त नुकीले हाथों में भारी रूप से अंकित होती है लेकिन जितनी वर्गाकार और चमचाकार हाथों में प्रभावशाली होती है उतनी प्रभावशाली नहीं होती।

सूर्य रेखा एक अच्छी भाग्य रेखा से मिलकर सफलता में वृद्धि करती है प्रसिद्धि और विशिष्टता दिलाती है। लेकिन तभी जब हाथ की अन्य रेखाओं से कैरियर और कार्यक्षेत्र के अनुकूल संकेत हों। अन्यथा मनोवृत्ति कला की ओर झुकी होती है।

सूर्य रेखा के आरम्भ होने के मुख्य स्थान हैं–जीवन रेखा, भाग्य रेखा, चन्द्र क्षेत्र, मंगल पर्वत और शीर्ष तथा हृदय रेखा।

यदि हाथ में कलाप्रियता के लक्षण हों तो सूर्य रेखा के जीवन रेखा से आरम्भ होने से व्यक्ति पूर्ण रूप सौंदर्योपासक होता है। यदि अन्य रेखाएं शुभ हों तो कला क्षेत्र में काफी सफलता मिलती है।

यदि सूर्य भाग्य रेखा से आरम्भ हो तो वह भाग्य रेखा से व्यक्त सफलता में वृद्धि होती है। जिस आयु में भाग्य रेखा से उठती है उसी आयु में अधिक विशिष्टता और कैरियर में उन्नति प्राप्त होती है। राजयोग के समान लाभप्रद है। कला के क्षेत्र में सफलता देती है। धनवान और समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

यदि यह रेखा चन्द्र रेखा से आरम्भ हो तो सफलता और विशिष्टता दूसरों की सहायता पर निर्भर होती है। सफलता सदा निश्चित नहीं होती क्योंकि व्यक्ति दूसरों पर निर्भर रहता है।

यदि शीर्ष रेखा चन्द्र क्षेत्र पर झुकी हो तो सफलता प्रायः काव्य और उपन्यास आदि लिखने में मिलती है। कल्पनाशीलता से प्रेरणा मिलती है।

यदि सूर्य रेखा हथेली से आरम्भ हो तो कठिनाइयों और संघर्षों के बाद सफलता मिलती है।

यदि शीर्ष रेखा से आरम्भ हो तो व्यक्ति को अपने बौद्धिक क्षमता के द्वारा सफलता प्राप्त होती है। लेकिन 35 वर्ष के बाद मिलती है।

यदि सूर्य रेखा हृदय रेखा से आरम्भ हो तो प्रतिभा और विशिष्टता जीवन के अन्तिम भाग में 50 वर्ष के बाद प्राप्त होती है।

यदि अनामिका लम्बाई में मध्यमा के बराबर हो और सूर्य रेखा लम्बी हो तो योग्यता, धन और जीवन में प्राप्त अवसरों के साथ वह व्यक्ति जुआ खेलेगा। ऐसे व्यक्ति हर काम में रिस्क लेने को तैयार रहते हैं।

यदि सूर्य रेखा स्पष्ट रूप से अंकित हो तो संवेदनशीलता की प्रवृत्ति अधिक होती है। यदि शीर्ष रेखा बिल्कुल सीधी हो तो धनवान बनने और सामाजिक क्षेत्र में मान सम्मान तथा अधिकार प्राप्त करने की और झुकाव बढ़ जाता है।

यदि सूर्य क्षेत्र पर अनेक रेखाएं हों तो व्यक्ति अत्यन्त कलाप्रिय होता है लेकिन उसके दिमाग में इतनी कल्पनाएं और योजनाएं होती हैं कि वह किसी को भी कार्यान्वित नहीं कर पाता। (चित्र संख्या 21)

इस रेखा पर नक्षत्र का होना अत्यन्त शुभ माना जाता है। व्यक्ति को सुख, सौभाग्य और सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

सूर्य रेखा पर यदि वर्ग चिन्ह हो तो मान प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने का प्रयत्न करने वाले विरोधियों और शत्रुओं से रक्षा होती है। (चित्र संख्या 21 G)

यदि सूर्य रेखा पर द्वीप चिन्ह हो तो द्वीप भी अधिकतम मान-मर्यादा को क्षति पहुंचाती है। व्यक्ति पदच्युत होता है। द्वीप के अदृश्य हो जाने पर यदि रेखा सामान्य बनी रहे तो मान प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर लेता है (चित्र संख्या 21 H)

यदि सूर्य रेखा पर गड्ढा हो तो वह बिल्कुल शक्तिहीन हो जाती है यदि सूर्य रेखा न हो तो कितना भी परिश्रम करें योग्यता को मान्यता नहीं प्राप्त होगी। मान सम्मान के योग्य और अधिकारी होने पर भी उससे वंचित रह जाते हैं। मृत्यु के पश्चात उन्हें सम्मान प्राप्त होता है। जीवित होते हुए उन्हें योग्यता और गुणों का पुरस्कार नहीं मिलता।

11. स्वास्थ्य रेखा

स्वास्थ्य रेखा के उद्गम स्थान के सम्बन्ध में हस्तज्ञान विशारद एकमत नहीं हैं। लेकिन अपने वर्षों के अनुभव के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इस रेखा का उद्गम बुध क्षेत्र है। यहां से निकलकर यह रेखा नीचे के ओर बढ़ती है और जीवन रेखा की ओर जाती है। रोग और अस्वस्थता के लक्षण इसमें होते हैं। जीवन रेखा तक पहुंचने पर अपनी चरम अवस्था पर पहुंच जाते हैं। जीवन रेखा आयु की अवधि सूचित करती है। यदि स्वस्थ्य रेखा जीवन रेखा जैसी पुष्ट हो तो जहां उसका मिलना होता है वहीं जीवन का अन्त होता है। जीवन रेखा कितनी ही लम्बी हो स्वास्थ्य रेखा पर असाधारण लक्षण मृत्यु का कारण बन जाते हैं।

स्वास्थ्य रेखा (चित्र 13) वही अच्छी मानी जाती है जो सीधी रेखा के रूप में नीचे की ओर जाती है।

हाथ में स्वास्थ्य रेखा का न होना शुभ माना जाता है। स्वास्थ्य सबल रहता है। शरीर की गठन पुष्ट होती है। लेकिन रेखा होने पर स्वास्थ्य बिगड़ने के दोष होते हैं।

जब यह रेखा हथेली को पार करके किसी स्थान पर जीवन रेखा को स्पर्श करे तो समझ लेना चाहिए कि किसी रोग ने जड़ जमा ली है। उससे शरीर के गठन और स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। (चित्र संख्या 17 KK)

यदि स्वास्थ्य रेखा बुध क्षेत्र से नीचे हृदय रेखा से आरम्भ हो और नीचे आकर जीवन रेखा को काट दे तो हृदय की कमजोरी या हृदय रोग का पूर्वाभास समझना चाहिए। यदि रेखा फीकी और चौड़ी हो तो रक्त संचार में दोष और हृदय की कमजोरी की सूचक होती है। यदि रेखा का रंग लाल हो, नाखून छोटे और चपटे हों तो समझ लें कि हृदय रोग पैदा हो चुका है। यदि वह रेखा जगह-जगह लाल रंग की हो तो जिगर विकार की सूचक होती है।

यदि रेखा उभरी हुई अनियमित हो तो पित्त दोष और जिगर की खराबी की सूचक होती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटी हो तो पाचन शक्ति दुर्बल होती है। (चित्र संख्या 19 II)

यदि स्वास्थ्य रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप हों और नाखून वादक की तरह उठे हुए हों तो वह

छाती और फेफड़ों की दुर्बलता की ओर संकेत करती है। (चित्र संख्या 20 II)

यदि स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट हो और शीर्ष रेखा तथा हृदय रेखाओं से मिलती है तो मानसिक ज्वर होने की सम्भावना होती है।

यदि रेखा आड़ी न जाकर सीधी नीचे उतर चले तो शुभ होती है। संकट अत्यन्त सबल शारीरिक गठन तो नहीं देती लेकिन स्वास्थ्य के सम्मान्य रूप से ठीक रहती है।

इस रेखा से स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सूचना मिलती है। लेकिन जीवन रेखा, शीर्ष रेखा और हृदय रेखा से अधिक स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है।

12. वासना रेखा और अतीन्द्रिय रेखा

वासना रेखा

वासना रेखा को स्वास्थ्य रेखा की सहायक रेखा माना जाता है। यह एक छोटी सी रेखा होती है और बहुत कम हाथों में पाई जाती है। हाथ के नीचले भाग से मणि बंध तक चली जाती है। इस रेखा को शुभ नहीं मानते क्योंकि यह वासना और मद्यपान की आदतों को बढ़ावा देती है। यदि यह जीवन रेखा को काटकर शुक्र क्षेत्र में चली जाए तो व्यक्ति अधिक कामुक हो जाता है। अधिक मदिरापान करने लगता है जिससे आयु कम हो जाती है। (चित्र संख्या 13)

अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा

यह रेखा अधिकतर दार्शनिक नुकीले और अत्यन्त नुकीले हाथों में पाई जाती है। अन्य श्रेणी के हाथों में कम पाई जाती है। यह अर्धवृत्ताकार होती है। और बुध से चन्द्र क्षेत्र तक जाती है। अत्यन्त संवेदनशील और प्रभाव, स्वभाव की सूचक होती है। व्यक्ति अपने चारों ओर के वातावरण और प्रभाव को अनुभव करने में कुछ तेज होता है। किसी अज्ञात शक्ति या ज्ञान के द्वारा दूसरों के साथ घटने वाली घटनाओं का उसे पूर्वाभास हो जाता है। प्रायः सपनों या ध्यान मग्न होने की स्थिति में घटनाओं का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। (चित्र संख्या 12)

13. शुक्र, शनि मुद्रिकाएं और मणिबन्ध रेखायें

शुक्र मेखला

शुक्र मेखला पूरी या टूटी हुई अर्धवृताकार रेखा होती है जो तर्जनी और मध्यमा के मध्य से आरम्भ होकर अनामिका और कनिष्टका उंगली के बीच समाप्त होती है।

में अनुभव में इस रेखा द्वारा कामुकता की वृद्धि का अवगुण कभी नहीं आता। हालांकि अनेक लेखकों ने मनुष्य की कामुकता की अधिकता का दोष इस रेखा को दिया है। हां, यदि हाथ मोटा हो तो यह रेखा अवगुण प्रदर्शित करती है।

अधिकतर यह रेखा नुकीले और अत्यन्त नुकीले हाथों में देखी जाती है। इस रेखा का प्रधान गुण संवेदनशीलता का अधिक होना है। इस रेखा के नुकीले हाथ वाले व्यक्ति का मूड परिवर्तनशील बन जाता है। साधारण सी बात का बुरा मान जाता है। तुनुक मिजाज का बन जाता है। उसकी नसों में इसलिए तनाव बना रहता है। साधारण या मामूली कारण से चिन्तित हो उठता है। यदि यह रेखा पूरी हो तो व्यक्ति निराशावादी बन जाता है। उदासीनता हर समय घेरे रहती है और हिस्टीरिया जैसे रोगों का शिकार बन जाता है।

इस रेखा में एक विशेष गुण है—क्षणभर में ही यह लोगों जोश और उत्साह भर देती है। लेकिन दूसरे ही क्षण में एकदम हतोत्साहित हो जाते हैं। उनकी मनोदशा एक जैसी नहीं रह पाती।

यदि शुक्र मेखला हाथ के किनारे की ओर बढ़ कर विवाह रेखा से मिल जाए (चित्र 16 KK) तो स्वभाव की विविधताओं और परिवर्तनशीलता के कारण दाम्पत्य सुख नष्ट हो जाता है। ऐसे लोगों का साथ निभाना अत्यन्त कठिन होता है। ऐसी रेखा वाला पुरुष पत्नी में उतने सदगुण देखना चाहेगा जितने आकाश में तारे होते हैं।

शनि मुद्रिका

शनि मुद्रिका (चित्र संख्या 12) कुछ कम हाथों में पाई जाती है। यह रेखा तर्जनी और मध्यमा उंगली के मध्य से आरम्भ होकर गोलाई लिए शनि क्षेत्र को घेरती हुई अनामिका और मध्यमा के बीच समाप्त होती है। यह रेखा शुभ नहीं मानी जाती। हमने किसी ऐसे व्यक्ति को सफल होते नहीं देखा। यह शनि क्षेत्र को इस प्रकार काट देती है कि उनका

परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। अभिलाषा पूरी नहीं होती। बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाते हैं। आरम्भ करते हैं लेकिन अधूरा छोड़ देते हैं।

मणिबन्ध की रेखाएं

हम मणिबन्ध की रेखाओं को (चित्र संख्य 13) महत्वपूर्ण नहीं मानते। मणिबन्ध के सम्बन्ध में एक बात ऐसी है जिसे अनुभव से हमने सत्य पाया है। वह है प्रथम मणिबन्ध रेखा के सम्बन्ध में। जब यह रेखा हाथ की ओर ऊपर उठी हुई हो और मेहराब रूप धारण कर ले (चित्र संख्या 16 MM) तो शरीर के आन्तिरक अंगों में विकार की सूचक होती है। स्त्री के हाथ में सन्तानोत्पादक और प्रसव में कष्ट और कठिनाई की सूचक होती है। पहले हम इस प्रकार के संकेत को अंधविश्वास समझते थे। लेकिन अनुभव से इसे सत्य पाया है। यदि तीनों मणिबन्द रेखाएं स्पष्ट रूप से अंकित हों तो व्यक्ति का स्वास्थ्य बहुत अच्छा होता है। शरीर का गठन सशक्त होता है।

14. विवाह रेखा

विवाह रेखा के नाम से जानी जाने वाली रेखाएं बुध क्षेत्र पर अंकित होती हैं। (चित्र संख्या 13) यह रेखाएं विवाह संस्कार को भले ही वे धार्मिक नीति से हो या कोर्ट मैरिज हो मान्यता नहीं देती। केवल हमारे जीवन पर दूसरे लोगों के प्रभावों को अंकित करती है। यह भी बताती है कि वे प्रभाव किस प्रकार के हैं और उनका क्या परिणाम होता है।

विवाह व्यक्ति के जीवन की एक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण घटना है। इस रेखा के द्वारा यह बाताया जा सकता है कि विवाह कब होगा। मैंने प्रेम सम्बन्धी रेखाओं में विवाह की वास्तविक रेखा को भी पाया है। कभी-कभी यह रेखा ऐसे सम्बन्ध की भी सूचक होती है जो विवाह के समान ही घनिष्ट हो। विवाह होने या न होने के लिए समय क्यों निश्चित होता है इसका उत्तर वे रहस्य ही दे सकते हैं जिन्होंने अपने जीवन को आच्छादित कर रखा है।

कमरे में एक स्थाई चुंबक पत्थर रखने से हर लोहे की वस्तु में चुंबक शक्ति क्यों पैदा हो जाती है ? यदि कोई यह कह सकता है कि वह शक्ति क्या है और उससे लोहे की वस्तु का क्या सम्बन्ध है तो वह यह भी बता सकता है कि विवाह के लिए विधाता ने कोई समय क्यों निश्चित किया है। जब तक हम प्रकृति में सभी नियमों और उसकी शक्तियों के रहस्य का उद्‌गम करने में असमर्थ रहेंगे तब तक हमें यही स्वीकार करना होगा कि ऐसा ही होता है।

विवाह के सम्बन्ध में विचार करने के लिए विवाह की रेखाओं के साथ-साथ अन्य चिन्हों और संकेतों का भी विचार करना जरूरी है। इस सम्बन्ध में हमने खण्ड दो प्रकरण 11 में भाग्य रेखा की ओर आनेवाली प्रभाव रेखाओं की चर्चा की है। ऐसा ही जीवन रेखा की ओर आनेवाली प्रभाव रेखाओं के बारे में भी लिखा था। दूसरे खण्ड के पाँचवें अध्याय में।

अब हम बुध क्षेत्र पर अंकित विवाह रेखाओं पर आते हैं। विवाह रेखाएं या तो बुध क्षेत्र पर किनारे की ओर से निकल कर आती हैं या बुध क्षेत्र पर ही स्थित होती हैं।

केवल लम्बी रेखाएं ही विवाह की सूचक होती हैं। (चित्र संख्या 18 G) छोटी रेखाएं केवल प्रेम के आकर्षण या विवाह करने की इच्छा को प्रदर्शित करती हैं। (चित्र संख्या 18 H) यदि विवाह होता है तो भाग्य रेखा या जीवन रेखा पर इसकी पुष्टि मिलती है और

वहीं यह सूचना प्राप्त होती है कि विवाह से जीवन में और जीवन स्थिति में कैसा परिवर्तन आएगा। बुध क्षेत्र पर स्थित विवाह रेखा से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विवाह किस उम्र में होने की सम्भावना है। जब विवाह रेखा हृदय रेखा के बिल्कुल निकट हो विवाह 14 से 18 वर्ष की उम्र में होना चाहिए। यदि विवाह रेखा बुध क्षेत्र के मध्य में हो तो 21 से 28 वर्ष की उम्र में होता है। यदि रेखा बुध क्षेत्र पर तीन चौथाई ऊँचाई पर हो तो विवाह 28 से 35 वर्ष की उम्र में होता है। लेकिन यह बात भाग्य रेखा या जीवन रेखा से ठीक-ठीक जानी जा सकती है कि जीवन में परिवर्तन किस उम्र में होगा।

यदि विवाह रेखा बुध क्षेत्र पर पुष्टता से अंकित हो और कोई प्रभाव रेखा चन्द्र क्षेत्र से आकर भाग्य रेखा में मिले तो व्यक्ति विवाह के बाद धनवान हो जाता है। लेकिन जब रेखा पहले चन्द्र क्षेत्र पर सीधी पड़ जाए और फिर मुड़कर भाग्य रेखा से मिले तो विवाह सम्बन्ध में सच्चे प्रेम की भावना नहीं होती केवल दिखावा होगा। जब प्रभाव रेखा व्यक्ति की भाग्य रेखा से अधिक शक्तिशाली हो तो वह व्यक्ति स्त्री या पुरुष जिससे विवाह करेगा उससे अधिक प्रभावशाली होगा। उसका व्यक्तित्व भी अधिक उच्च स्तर का होगा।

भाग्य रेखा पर सबसे अधिक सुख प्रदान करने वाली यह प्रभाव रेखा भाग्य रेखा के बिल्कुल निकट स्थित होती है। और उसके साथ-साथ चलती है। (चित्र संख्या 20 II)

बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा सीधी, बिना टूट फूट के या क्रास चिन्ह के बनी होनी चाहिए।

जब यह रेखा नीचे मुड़कर हृदय रेखा की ओर चली जाती है तो इस बात की सूचक होती है कि उस व्यक्ति के जीवन साथी (या संगिनी) की पहले मृत्यु होगी। (चित्र संख्या 20 J) स्त्रियों के हाथ में ऐसी रेखा उनकी विधवा होने और पुरुष के हाथ में विधुर होने का योग बनाती हैं।

यदि विवाह रेखा ऊपर की ओर मुड़ी हो तो व्यक्ति अविवाहित रहता है।

विवाह रेखा स्पष्ट हो और उसमें से सूक्ष्म रेखाएं हृदय रेखा की ओर गिरती दिखाई दें तो जीवन साथी की अस्वस्थता का सूचक होती हैं।

विवाह रेखा यदि नीचे की ओर एकदम झुक जाए और उसके मोड़ पर क्रास का चिन्ह हो तो जीवन साथी की मृत्यु अचानक या दुर्घटना में होगी। यदि रेखा धीरे-धीरे नीचे की ओर मुड़े तो जीवन साथी की मृत्यु कुछ समय अस्वस्थ रहने के बाद होती है।

विवाह रेखा के बीच या किसी अन्य स्थान पर द्वीप का चिन्ह हो तो विवाहित जीवन में विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जब तक द्वीप बना रहता है दोनों अलग रहते हैं।

जब विवाह रेखा अन्त पर हाथ के बीच तक पहुंच जाए और दो शाखाओं में बंट जाए तो आपस में तलाक हो जाता है। (चित्र संख्या 19 J) यह बात तब और भी निश्चित हो जाती है जब एक शाखा मंगल पर्वत तक पहुंच जाए। (चित्र संख्या 19 KK)

यदि विवाह रेखा द्वीप चिन्हों से भरी हो और उसमें से सूक्ष्म रेखाएं नीचे की ओर गिरती हों तो उस व्यक्ति को विवाह नहीं करना चाहिए। क्योंकि उसका विवाहित जीवन बहुत ही दुखदायी होगा। यदि रेखा द्वीपों से भरी है और अन्त में दो मुखी हो जाए तो भी विवाहित जीवन अत्यन्त दुखद होता है।

यदि रेखा के दो टुकड़े हो जाएं तो विवाह सम्बन्ध सहसा टूट जाता है।

यदि विवाह रेखा की कोई शाखा सूर्य क्षेत्र की ओर जाए और सूर्य रेखा से मिल जाए तो किसी विशिष्ट व्यक्ति से विवाह होता है। इसके विपरीत यदि रेखा नीचे जाकर सूर्य रेखा को काट दे तो विवाह के बाद वह अपने उच्च पद को खो बैठता है।

यह कोई गहरी रेखा कुछ क्षेत्र के ऊपर के भाग से नीचे उतर कर विवाह रेखा को काट दे तो विवाह में बहुत बाधा पड़ती है। उसका बहुत विरोध होता है। (चित्र संख्या 18 J)

यदि कोई बहुत पतली रेखा विवाह रेखा को लगभग छूती हुई उसके समानान्तर चलती हो तो विवाह के बाद वह अपने जीवन साथी से बहुत प्रेम करता है।

15. सन्तान रेखाएं

किसी व्यक्ति के कितने बच्चे हो चुके हैं और भविष्य में कितने होंगे यह ठीक ठीक बताना आश्चर्यजनक लगता है। लेकिन इससे भी आश्चर्यजनक यह है कि प्रधान रेखाओं द्वारा यह बात बताई जा सकती है। इसके लिए ध्यानपूर्वक अध्ययन, अनुभव और सूक्ष्म परीक्षण की आवश्यकता होती है।

इस विषय में मुझे जो सफलता मिली उसी के कारण लोगों के निरन्तर अनुरोध पर इस पुस्तक को लिखने को मैं बाध्य हुआ हूँ। मेरा प्रयत्न है कि इस पुस्तक के अध्ययन के बाद उनके ज्ञान में कोई कमी न रहे।

सन्तान के सम्बन्ध में विचार करते समय हाथ के अन्य सम्बन्धित भागों की परीक्षा करना जरूरी है। उदाहरण के लिए अगर शुक्र क्षेत्र जीवन रेखा के कारण संकीर्ण हो गया है और समुचित रूप से उन्नत नहीं है तो उस व्यक्ति में उस व्यक्ति की अपेक्षा सन्तान की उत्पादन शक्ति कम होती है जिसका शुक्र क्षेत्र विस्तृत और उन्नत हो।

हाथ में सन्तान रेखाएं वे होती हैं जो विवाह रेखा के अन्त में उसके ऊपर स्थित होकर ऊपर जाती हैं। कभी-कभी यह इतनी सूक्ष्म होती है कि परीक्षा के लिए मैग्नीफाइंग ग्लास की मदद लेनी पड़ जाती है। लेकिन ये रेखाएं बहुत फीकी होती हैं तो हाथ की अन्य रेखाएं भी वैसी ही होती हैं। इन रेखाओं की स्थिति और यह जानकर कि वे शुक्र क्षेत्र के किस भाग को छूती हैं, यह ठीक तरह से मालूम हो सकता है कि उस व्यक्ति की सन्तान कोई प्रभावशाली या महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी या नहीं। यह भी मालूम हो सकता है कि पुत्र होगा या पुत्री और वह स्वस्थ होंगे या नहीं।

इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य मुख्य बातें ये हैं–

1. चौड़ी रेखा पुत्र की सूचक होती है और संकीर्ण पतली रेखा पुत्रियों की।

2. यदि रेखाएं स्पष्ट रूप से अंकित हों तो बच्चे स्वस्थ होंगे यदि फीकी और लहरदार हों तो अस्वस्थ होते हैं।

3. अगर रेखा के पतले भाग में द्वीप चिन्ह हो तो बच्चे आरम्भ में बहुत निर्बल होंगे। यदि बाद में स्पष्ट रूप अंकित हों तो स्वस्थ हो जायेंगे।

4. यदि रेखा के अन्त में द्वीप चिन्ह हों तो बच्चा जीवित नहीं रहेगा।

5. जब एक रेखा अन्य रेखा उससे बड़ी और अधिक सशक्त हो तो उस रेखा से

सूचक-बच्चा माता-पिता के जीवन में अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक महत्वशाली होगा।

यदि पुरुष के हाथ में सन्तान रेखाएं उतनी ही स्पष्ट हों जितनी उसकी पत्नी के हाथ में हैं तो पुरुष अपने बच्चों को बहुत प्यार करता है। उसका स्वभाव बहुत स्नेही होता है परन्तु स्त्री के हाथ में प्रायः रेखाएं अधिक स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं।

यदि किसी व्यक्ति की हृदय रेखा बुध क्षेत्र पर दो या तीन शाखाओं में विभाजित हो जाए तो वह सन्तानहीन नहीं होगा।

जिस स्त्री के हाथ में मछली का चिन्ह स्पष्ट रूप से अंकित हो वह सन्तानहीन नहीं होती। यदि यह चिन्ह न हो, शुक्र क्षेत्र अत्याधिक उन्नत हो, हृदय रेखा शनि से आरम्भ हो और नीचे की ओर जाती हो, साथ में शुक्र मेखला भी अंकित हो, नुकीली उंगलियां हों, निर्बल इच्छा शक्ति का सूचक अंगूठा हो तो वह स्त्री व्याभिचारिणी और सन्तानहीन होगी। जिन स्त्रियों और पुरुषों के हाथ चौड़े होते हैं और सारे प्रधान रेखाएं स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं, सन्तानहीन नहीं होते।

16. नक्षत्र चिन्ह

हाथ में नक्षत्र की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। हम यह नहीं मानते कि यह चिन्ह हमेशा संकट का ही सूचक होता है और ऐसा संकट जिससे रक्षा नहीं हो सकती। वास्तव में एक दो स्थानों के अलावा यह चिन्ह सौभाग्य सूचित करता है। इसका शुभ-अशुभ होना उसकी स्थिति पर आधारित होता है।

जब नक्षत्र चिन्ह बृहस्पति क्षेत्र पर हो तो उसके दो अर्थ होते हैं। जब नक्षत्र ग्रह क्षेत्र के उच्चतम स्थान पर स्थित हो तो उस व्यक्ति को उच्च पद, अधिकार और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। जिस क्षेत्र में कार्य करता है सम्मान प्राप्त करते हुए शिखर पर पहुंच जाता है। उसकी महत्वकांक्षाएं पूरी होती हैं। सभी योजनाओं में सफलता मिलती है (चित्र संख्या 19 M) यदि इस नक्षत्र चिन्ह के साथ शीर्ष, भाग्य और सूर्य रेखाएं भी सबल हों तो उसे इतनी उन्नति और सफलता मिलेगी जिस की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। यह चिन्ह प्रायः अत्यन्त महत्वकांक्षी स्त्रियों और पुरुषों के हाथ में पाया जाता है जिनका ध्येय उच्चतम स्थान और अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त करना होता है।

बृहस्पति क्षेत्र पर नक्षत्र का दूसरा स्थान या तो तर्जनी के मूल स्थान में होता है या हाथ के किनारे पर या उससे भी कुछ आगे होता है। क्योंकि इन परिस्थितियों में नक्षत्र चिन्ह बृहस्पति क्षेत्र को कम प्रभावित करता है फलस्वरूप व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है और उसका सम्पर्क विशिष्ट व्यक्तियों के साथ होता है। लेकिन महत्वपूर्ण या विशेष सफलता तभी प्राप्त होती है जब हाथ के अन्य लक्षण शुभ और सहायक होते हों।

शनि क्षेत्र पर नक्षत्र

यद्रि नक्षत्र चिन्ह शनि क्षेत्र के मध्य में स्थित हो तो वह व्यक्ति भयानक रूप से भाग्यवादी होता है। (चित्र संख्या 19 N) प्राचीन हस्तशास्त्रियों ने इसे हत्या का चिन्ह बताया है। लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मेरे अनुसार इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति भयानक रूप से भाग्य के हाथों का खिलौना है। दूसरे शब्दों में भाग्य या विधाता ने उसे किसी विशेष भूमिका अभिनीत करने के लिए जन्म दिया है। लेकिन उसका सारा जीवन और कैरियर एक दुखान्त नाटक की तरह भयानक रूप से अपने अन्तिम चरणों में पहुंचेगा।

वह प्रतिभाशाली होगा। राजा होगा लेकिन सब कुछ नष्ट हो जाएगा। उसके सारे कार्य, जीवन कैरियर नाटकीय होगा। और उसका अन्त भयानक होगा।

शनि क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह की दूसरी स्थिति है क्षेत्र के बाहर, किनारे पर या उंगलियों को काटते हुए। इस प्रकार के बृहस्पति क्षेत्र के नक्षत्र चिन्ह के समान इसका फल यह होगा कि वह व्यक्ति ऐसे लोगों के सम्पर्क में आयेगा जो इतिहास बनाते हैं। लेकिन यह विशिष्टता भाग्य के भयानक खेल द्वारा ही प्राप्त होती।

सूर्य क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

यदि सूर्य क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह हो (चित्र संख्या 19 P) तो उस व्यक्ति को प्रतिभा, पद और धन प्राप्त होते ही हैं लेकिन उसे सुख शान्ति नहीं मिलती। धन या प्रतिष्ठा इतनी देर से प्राप्त होती है कि तब तक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। उसकी शान्ति समाप्त हो जाती है। ऐसा चिन्ह अपार धन देता है लेकिन सुख शान्ति और सन्तोष नहीं देता। यदि नक्षत्र चिन्ह क्षेत्र के किनारे पर हो तो व्यक्ति धनी और प्रतिभाशाली लोगों के सम्पर्क में तो आता है लेकिन स्वयं धनी या शक्तिशाली नहीं बनता।

यह नक्षत्र चिन्ह सूर्य रेखा से जुड़ा हो या उससे बना हो तो व्यक्ति को अपनी योग्यता और कला द्वारा बहुत प्रसिद्धि प्राप्त होती है। लेकिन यह चिन्ह ऊँचाई पर नहीं होना चाहिए। रेखा के बीच कुछ ऊपर की स्थिति श्रेष्ठतम होती है।

बुध क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

अगर नक्षत्र बुध क्षेत्र के मध्य हो (चित्र संख्या 19 Q) तो वह व्यक्ति व्यापार या विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिभाशाली होता है। अपूर्व सफलता प्राप्त करता है। ओजस्वी वक्ता होता है। यदि नक्षत्र क्षेत्र के किनारे पर हो तो इन क्षेत्रों के सफल लोगों के सम्पर्क में आता है।

मंगल क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

यदि नक्षत्र चिन्ह बुध क्षेत्र के नीचे वाले मंगल क्षेत्र पर अंकित हो (चित्र 18 J) तो व्यक्ति सन्तोष, धैर्य और सहनशीलता के साथ परिश्रम करके स्थान और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

यदि बृहस्पति क्षेत्र के नीचे वाले मंगल क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह हो तो जातक को सैनिक जीवन या पुलिस क्षेत्र में विशिष्टता और ख्याति प्राप्त होती है। ऐसे नक्षत्र चिन्ह होने पर सैनिक परमवीर चक्र, अशोक चक्र जैसे उच्च श्रेणी प्राप्त करते हैं।

चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह होता है (चित्र संख्या 18 K) तो वह व्यक्ति अपनी कल्पना शक्ति के गुणों द्वारा बहुत ख्याति प्राप्त करता है। कुछ लोगों का मत है कि यह चिन्ह जल में डूबकर मृत्यु हो जाने का सूचक होता है, मैं उससे सहमत नहीं हूं। इसके अशुभ होने को इस स्थिति में माना जा सकता है जब शीर्ष रेखा झुक कर चन्द्र क्षेत्र में आ गई हो और नक्षत्र का चिन्ह अन्त में हो। ऐसी दशा में कल्पना शक्ति सीमा का उल्लंघन कर जाती है। और व्यक्ति अपना मानसिक सन्तुलन खो देता है और पागल हो जाता है। आत्महत्या करने वालों के हाथों में इस प्रकार का योग देखा जाता है। आत्म हत्या के लिए लोग पानी में डूबने के बजाय अधिक मात्रा में नींद की गोलियां खाने जैसे उपाय काम में लाते हैं।

शुक्र क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

शुक्र क्षेत्र के शिखर पर नक्षत्र का चिन्ह (चित्र संख्या 18 I) शुक्र होता है और सफलता दिलाता है लेकिन प्रेम के मामलों में धन के मामले में नहीं। पुरुष और स्त्री दोनों के हाथों में प्रेम सम्बन्धी मामलों में अपूर्व सफलता का चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति प्रेम में सफलता के लिए समस्त विरोधों और ईर्ष्या को कुचल देते हैं। यदि नक्षत्र का चिन्ह क्षेत्र के किनारे पर होता है ऐसे लोगों के सम्पर्क में आता है जो प्रेम में सफल होते हैं।

उंगलियों पर नक्षत्र चिन्ह

यदि उंगलियों के सिरे पर या पहली पोर पर नक्षत्र चिन्ह हो तो व्यक्ति जिस काम में हाथ लगायेगा उसमें सफलता प्राप्त होती है। जब अंगूठे की पहली पोर में नक्षत्र चिन्ह हो तो वह इच्छा शक्ति द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

नक्षत्र चिन्ह के द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए हाथ में प्रदर्शित प्रवृत्तियों और अन्य लक्षणों की परीक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि किसी हाथ में शीर्ष रेखा और अंगूठा कमजोर हो तो शुभ नक्षत्र निरर्थक नहीं होता।

17. क्रास चिन्ह

क्रास चिन्ह का गुण नक्षत्र चिन्ह के विपरीत होता है। बहुत कम हालातों में शुभ या अनुकूल फल देता है। यह चिन्ह कष्ट, विनाश, संकट और कभी-कभी जीवन की परिस्थितियों में परिवर्तन का सूचक होता है। लेकिन बृहस्पति क्षेत्र पर क्रास अत्यन्त शुभ फल दायक होता है। (चित्र संख्या 18 M) यहां इस बात का सूचक होता है कि व्यक्ति के जीवन में एक वास्तविक और घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित होगा। विशेष रूप से जब भाग्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होती है। क्रास चिन्ह में एक विचित्र गुण है। वह इस बात की सूचना देता है कि किसी अवस्था में प्रेम सम्बन्ध का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ेगा जब क्रास जीवन रेखा के आरम्भिक स्थान के निकट होता है तो प्रेम सम्बन्ध का प्रभाव जीवन के प्रथम भाग में अनुभव होता है। यदि क्रास क्षेत्र के शिखर पर हो तो बीच की उम्र में और मूल स्थान पर हो तो जीवन के अन्तिम भाग में पड़ता है।

यदि क्रास शनि क्षेत्र पर हो (चित्र संख्या 18 N) और भाग्य रेखा को छूता हो तो किसी दुर्घटना या हत्या से जीवन का अन्त होता है। यदि शनि क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति अत्यन्त भाग्यवादी, निरूत्साही और निराशावादी बन जाता है।

यदि क्रास सूर्य क्षेत्र पर हो तो प्रयत्नों के बावजूद असफलता मिलती है।

बुध क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति बईमान होता है। कहता कुछ है करता कुछ है।

यदि बुध क्षेत्र के नीचे मंगल क्षेत्र में क्रास हो तो बहुत से शत्रुओं के विरोध का सामना करना पड़ता है। बृहस्पति क्षेत्र के नीचे मंगल क्षेत्र में हो तो लड़ाई-झगड़े या कत्ल द्वारा मृत्यु होगी।

यदि यह चिन्ह शुक्र क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से अंकित हो तो प्रेम सम्बन्ध के कारण इतना कष्ट उठाता है कि मृत्यु तक हो सकती है। यदि क्रास छोटा हो और जीवन रेखा के निकट हो तो सम्बन्धियों से विरोध रहता है।

यदि चन्द्र क्षेत्र पर शीर्ष रेखा के नीचे हो तो कल्पनाशीलता में सांकेतिक प्रभाव का सूचक होता है। (चित्र संख्या 16-1) ऐसा व्यक्ति स्वयं अपने आपको धोखा दे सकता है।

यदि मंगल पर्वत पर भाग्य रेखा के किनारे जीवन रेखा और भाग्य रेखा के बीच में हो तो सम्बन्धी कैरियर में बाधा डालते हैं। यदि चन्द्र क्षेत्र की ओर हो तो यात्रा में निराशा मिलती है। यदि शीर्ष रेखा से ऊपर हो और उसे स्पर्श करता हो तो किसी दुर्घटना का शिकार होता है। यदि भाग्य रेखा पर हो तो धन हानि होती है। हृदय रेखा पर हो तो प्रेमिका की मृत्यु हो जाती है।

18. वर्गाकार चिन्ह

वर्ग (रेखा चित्र संख्या 15) हाथ के अपेक्षाकृत कम महत्व के चिन्हों में अत्यधिक दिलचस्प है। इसे आमतौर पर 'रेखा का चिन्ह' कहा जाता है क्योंकि यह दर्शाता है कि इस स्थल विशेष पर व्यक्ति जो कोई खतरा मंडरा रहा है उससे सुरक्षित होगा।

जब एक सुविकसित वर्ग में से होकर भाग्य रेखा निकल रही हो तो यह व्यक्ति के भौतिक जीवन में आने वाले गम्भीरतम संकट की द्योतक होती है, जिसका सम्बन्ध आर्थिक दुर्घटना या हानि से है, लेकिन यदि भाग्य रेखा वर्ग से पार होकर सीधी बढ़ती हो तो खतरे टल जाते हैं। यदि वह रेखा वर्ग के भीतर टूट भी रही हो, तब भी यह किसी गम्भीर हानि से सुरक्षा का ही चिन्ह है।

जब वर्ग रेखा के बाहर हो और केवल इसे छू रहा हो और सीधे शनि के पर्वत के नीचे हो तो यह दुर्घटना से रक्षा का सूचक है।

जब मस्तिष्क रेखा एक सुनिर्मित वर्ग में से निकलती है तो यह स्वयं मस्तिष्क की शक्ति और सुरक्षा का चिन्ह है और साथ ही उस क्षण विशेष पर किसी कार्य से संबंधित भयंकर तनाव अथवा चिन्ता का भी द्योतक है।

जब वर्ग मस्तिष्क रेखा के ऊपर उठ रहा हो और शनि के नीचे हो तो यह सिर की किसी खतरे से रक्षा की भविष्यवाणी करता है।

जब हृदय रेखा किसी वर्ग में से गुजरती है तो यह प्रेम के कारण किसी भारी संकट का सूचक चिन्ह है। जब शनि के नीचे हो तो व्यक्ति के प्रेम विषय को किसी खतरे का चिन्ह है। (रेखा चित्र 21 O)

जब जीवन रेखा वर्ग में से गुजरती है तो यह इस बात का सूचक है कि भले रेखा उस बिन्दु पर टूटती हो, किन्तु व्यक्ति की मृत्यु से रक्षा होगी। (रेखा चित्र 21 A)

जीवन रेखा के भीतरी और शुक्र के पर्वत पर वर्ग का अर्थ है काम-संवेगों के कारण आने वाले संकट से रक्षा। (रेखा चित्र 21 A)। जब वर्ग शुक्र के पर्वत के केन्द्र में स्थित होता है तो इसका अर्थ है कि व्यक्ति काम-संवेगों के कारण हर तरह के खतरे में पड़ेगा किन्तु हमेशा बच निकलेगा।

और जब वर्ग जीवन रेखा के बाहर हो और मंगल क्षेत्र से आकर उसे छू रहा हो तो इस स्थान पर वर्ग का अर्थ या तो कारावास या शेष जगत् से अलग-अलग रहना होता है।

जब वर्ग किसी भी पर्वत पर होता है तो उस पर्वत के गुणों के कारण होने वाले किसी

भी अतिरेक से रक्षा का सूचक होता है।

गुरु पर होने से यह व्यक्ति की आकांक्षा से उसे रक्षा प्रदान करता है।

शनि पर होने से जीवन को जो खतरा हो उससे बचाता है।

सूर्य पर होने से प्रसिद्धि की इच्छा से बचाता है।

बुध पर होने से उदिग्नता, चंचलता वृत्ति से बचता है।

मंगल पर होने से शत्रुओं से होने वाले खतरों से बचाता है।

चन्द्र पर होने से कल्पनाधिक्य से या किसी अन्य रेखा के दुष्प्रभाव से बचाता है, उदाहरणार्थ भ्रमण की रेखा से।

19. द्वीप, वृत्त और बिन्दु

द्वीप

द्वीप अधिक सौभाग्यशाली चिन्ह नहीं है, किन्तु इसका सम्बन्ध जिस रेखा या हाथ के जिस भाग पर यह हो उसी हिस्से से होता है। यह जानना रोचक तथ्य है कि यह अधिकांशतः विरासत में मिली बुराइयों से संबंधित होता है, उदाहरण के लिए यदि हृदय रेखा पर सुविकसित द्वीप हो तो विरासत में मिले हृदय रोग का सूचक होती है।

जब यह मस्तिष्क रेखा के केन्द्र में एक स्पष्ट चिन्ह के रूप में हो तो यह मानसिकता से सम्बद्ध किसी पैतृक दुर्बलता का लक्षण है।

जब भाग्य रेखा पर हो तो सांसारिक मामलों में किसी भारी हानि का परिचायक समझना चाहिए।

जब जीवन रेखा पर हो तो उस बिन्दु विशेष पर किसी दुर्बलता या रोग का द्योतक है।

जब सूर्य रेखा पर हो तो यह प्रसिद्धि और हैसियत की हानि कि भविष्यवाणी करता है जो आमतौर पर किसी बदनामी के कारण होती है (रेखाचित्र 21 h)

जब स्वास्थ्य रेखा पर हो तो यह किसी गम्भीर रोग के प्रति आगाह करता है।

कोई रेखा या तो द्वीप में मिल रही हो या द्वीप बनाती हो तो यह हाथ के जिस भाग में है उसके संबंध में एक बुरा लक्षण है।

शुक्र के पर्वत पर एक सहायक रेखा अगर एक द्वीप में मिल रही हो तो यह जीवन को प्रभावित करने वाले स्त्री या पुरुष के लिए काम संवेगों के कारण बदनामी या मुसीबत की भविष्यवाणी करने वाला लक्षण है। (रेखा चित्र 18 p)

एक द्वीप बनाती रेखा जो शुक्र पर्वत से आती हुई हाथ को पार करके विवाह रेखा तक जा रही हो, इस बात की भविष्यवाणी करती है कि उस विशेष बिन्दु पर कोई दुष्प्रभाव जीवन पर पड़ेगा जो विवाह को बदनाम करेगा (रेखाचित्र 18 r)। यदि इसी प्रकार की कोई रेखा हृदय रेखा की ओर जाती हो तो कोई दुष्प्रभाव प्रेम-संबंधो को बदनामी और संकट में डालेगा। और जब मस्तिष्क रेखा की ओर जाती हो तो कोई प्रभाव व्यक्ति की प्रतिभा और नीयत को किसी बदनामी कार्य की दिशा में प्रेरित करेगा। और जब भाग्य रेखा से मिले और वह उसे वहीं रोक ले तो कोई दुष्प्रभाव व्यक्ति की सफलता में उस तिथि में बाधा

डालेगा। जब दोनों रेखाएं मिल रही हों।

किसी भी पर्वत पर पाया जाने वाला द्वीप उसके गुणों को हानि पहुंचाता है।

गुरु के पर्वत पर यह आत्माभिमान और आकांक्षा को दुर्बल करता है।

शनि पर व्यक्ति को दुर्भाग्य का शिकार बनाता है।

सूर्य के पर्वत पर कला के लिए प्रतिभा को दुर्बल करता है।

बुध पर व्यक्ति को इतना परिवर्तनशील बनाता है कि उसे सफलता मिल सके, विशेषतः व्यवसाय या विज्ञान के जुड़े किसी क्षेत्र में।

मंगल पर द्वीप का अर्थ है भावना की दुर्बलता और कायरता।

चन्द्र पर अर्थ है कल्पना की क्षमता को अमल में ला सकने में कमजोरी शुक्र पर यह व्यक्ति को कल्पना के खेल औरकाम संवेग से आसानी से प्रभावित और परिचालित होने वाल बताता है। (रेखाचित्र 20 h)

वृत्त

यदि वृत्त सूर्य के पर्वत पर हो तो शुभ लक्षण है। यही केवल एक स्थिति है कि जिसमें यह सौभाग्य का सूचक है। किसी अन्य पर्वत पर वृत्त व्यक्ति की सफलता के विपरीत लक्षण हैं।

चन्द्र के पर्वत पर वृत्त होने से डूबकर मृत्यु होने का भय होता है।

जब यह किसी महत्वपूर्ण रेखा को छू रहा हो तो यह इस बात का सूचक है कि उस विशेषस्थल स्थल पर व्यक्ति अपने को दुर्भाग्य से बचाने में सक्षम नहीं होगा—दूसरे शब्दों में, जैसा कि नियत है, वह गोल चक्कर में घूमता चला जाएगा और उस दुष्चक्र को भंग करके मुक्त होने के योग्य नहीं होगा।

बिन्दु

बिन्दु प्रायः अस्थायति रुग्णता का परिचाय है।

एक चमकीला लाल बिन्दु यदि मस्तिष्क रेखा पर हो तो किसी अघात या गिरने के कारण चोट या घायल होने का चिन्ह है।

एक काला अथवा नीला बिन्दु स्नायाविक रोग का चिन्ह है।

स्वास्थ्य रेखा पर चमकीला लाल बिन्दु प्रायः बुखार होने की सूचना देता है। और जीवन रेखा पर होने से यह किसी ऐसी बीमारी का द्योतक है जो ज्वर प्रकृति की हो।

20. जाल, त्रिकोण, रहस्य-क्रास, बृहस्पति मुद्रिका

जाल

जाल (रेखाचित्र 15) अकसर दिखाई दे जाता है और आमतौर पर हाथ के पर्वतों पर होता है। यह उस पर्वत विशेष की सफलताओं के मार्ग में बाधाओं का सूचक होता है और विशेष रूप से इसका अर्थ यह होता है कि ये बाधाएं हाथ के उस भाग के अनुसार जिस पर जाल है, व्यक्ति की अपनी प्रवृत्तियों के कारण आती हैं।

गुरु के पर्वत पर यह गर्व, घमंड और छा जाने वाली वृत्ति का सूचक है।

शनि के पर्वत पर यह दुर्भाग्य की भविष्यवाणी करता है। प्रवृत्ति बहुत उदास-एकान्त प्रियता युक्त और विकृत होती है।

सूर्य के पर्वत पर यह घमंड, मूर्खता और विख्यात होने की इच्छा पर प्रकट करता है।

बुध के पर्वत पर यह अस्थिर और कुछ सिद्धान्त-विहीन व्यक्ति का सूचक है।

चन्द्र के पर्वत पर इसका अर्थ है बेचैनी, असंतोष और कलान्ति। शुक्र के पर्वत पर काम संवेगों में बेलगामी बतलाता है।

त्रिकोण

त्रिकोण (रेखाचित्र 15) एक विचित्र चिन्ह है और प्रायः स्पष्ट और स्वच्छ रूप से अंकित होता है जो रेखाओं के संयोग से एक-दूसरे को काटने का कारण नहीं बना होता।

जब यह शुक्र के पर्वत पर सुविकसित रूप में होता है तो यह लोगों का प्रशासन चलाने में सामान्य से अधिक सफलता, उन्हें संभालने और यहां तक कि रोजमर्रा के कार्यों में सुव्यवस्था लाने आदि का सूचक होता है।

शनि के पर्वत पर यह रहस्यवादी कार्यों के प्रति अभिरूचि और प्रतिभा प्रदान करता है, गुह्य की तह तक जाने, मानवीय चुम्बकीयता का अध्ययन करने आदि की और झुकाव देती है।

सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का अर्थ है कला का व्यवहारिक उपयोग और सफलता व ख्याति की दिशा में शान्त प्रयत्न। सफलता ऐसे लोगों को कभी भ्रष्ट नहीं करती।

बुध के पर्वत पर यह इसकी अस्थिर वृत्तियों पर अंकुश लगाता है और व्यवसाय व आर्थिक मामलों में सफलता का संकेत करता है।

मंगल के पर्वत पर यह युद्धकला में वैज्ञानिकता, संकट के समय महान प्रशान्ति और खतरों में तुरंत बुद्धि प्रदान करता है।

चन्द्र के पर्वत पर त्रिकोण का अर्थ है कल्पना प्रेरित विचारों में वैज्ञानिक पद्धति ले आने की क्षमता।

शुक्र के पर्वत पर प्रेम में शान्ति और नपा-तुला व्यवहार, अपने ऊपर नियन्त्रण रखने की शक्ति प्राप्त होती है।

तिपाई या त्रिशुल (रेखाचित्र 15) जिस पर्वत पर भी हो, उसकी अद्भुत सफ़लता का सूचक है।

रहस्य-क्रास

यह विचित्र चिन्ह आमतौर पर चतुष्कोण का केन्द्र स्थल अपने लिए चुनता है (रेखाचित्र 19 r) किन्तु यह या तो उसके ऊपरी या बिल्कुल निचले भाग पर हो सकती है। यह भाग्य रेखा और मस्तिष्क रेखा से हृदय रेखा की ओर किसी रेखा के मिलने से भी बना हो सकता है और किसी मुख्य रेखा से किसी तरह संबंधित न होकर एक सुस्पष्ट चिन्ह के रूप में भी मौजूद हो सकती है।

यह रहस्यवाद, गुह्यवाद और अंधविश्वास का सूचक होता है।

ये तीनों गुण एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं, यद्यपि आमतौर पर एक-दूसरे का भ्रम पैदा करता है, इसलिए रहस्य-क्रास की स्थिति हाथ में किस जगह है, यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

जब यह हाथ पर बहुत ऊपर गुरु की ओर हो तो यह व्यक्ति के अपने जीवन को लेकर रहस्यवाद में विश्वास प्रदान करता है, लेकिन उसमें जितना अपने-आप से सम्बन्ध है, उसके आगे और अध्ययन की इच्छा नहीं होती। ऐसे लोग चाहते हैं कि उसका भविष्य बताया जाए, लेकिन जिज्ञासा से कारण अधिक कि वे जान सकें कि उनकी महत्वकांक्षाएं किस रूप में सामने आयेंगी, न कि उस गहन रुचि के कारण जो इस शास्त्र के अध्ययन हेतु आवश्यक होती है।

जब 'रहस्य-क्रास' मस्तिष्क रेखा की अपेक्षा हृदय रेखा के अधिक निकट स्थित होता है तो यह अंधविश्वासी प्रकृति प्रदान करता है और यह बात तब और भी अधिक होती है जब मस्तिष्क रेखा के केन्द्र पर अंकित होता है और वह रेखा तेजी से नीचे को वक्र हो रही होती है। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि मस्तिष्क रेखा की लम्बाई का उससे बहुत गहरा संबंध है। छोटी मस्तिष्क रेखा के साथ इस क्रास का होना लम्बी रेखा के मुकाबले

व्यक्ति को हजार गुना अधिक अन्धविश्वासी बनाता है, लम्बी गुह्यवाद की ओर अधिक ले जाती है, विशेषतः तब जब कि 'रहस्य-क्रास' मस्तिष्क रेखा पर एक स्वतन्त्र चिन्ह के रूप में अंकित हो।

जब यह क्रास भाग्य रेखा को छूता है या उससे निर्मित होता है तो रहस्यवाद पूरे भविष्य को प्रभावित करता है।

बृहस्पति मुद्रिका

बृहस्पति मुद्रिका (रेखाचित्र 12) भी एक ऐसा चिन्ह है जो गुह्यवाद के प्रति प्रेम का सूचक है, लेकिन जिस तरह 'रहस्य-क्रास' रहस्य की प्रति केवल लगाव दर्शाता है, उसकी अपेक्षा यह मुद्रिका एक अधिकारी व कुशल विद्वान की शक्ति बतलाने वाला चिन्ह है।

21. रेखाओं से भरा हाथ : हथेली की रंगत

जब पूरा हाथ महीन रेखाओं की बहुतायत से भरा हो मानों इसकी सतह पर कोई जाल फैला हो तो इससे पता चलता है कि व्यक्ति की प्रकृति अध्याधिक कातर और संवेदनशील है, लेकिन प्रकृति ऐसी कि छोटे-छोटे विचारों और संकटों को लेकर लगातार क्षुब्ध और चिन्तित रहे, जबकि उन बातों का दूसरों के लिए कुछ भी महत्व नहीं होता।

यह बात विशेष रूप से तब और भी सही है जब हथेली कोमल हो—ऐसे लोग बीमारी या मुसीबत आने पर हर तरह की बात सोच जाते हैं, किन्तु यदि हाथ कठोर और दृढ़ है तो यह स्फूर्ति से भरे उत्साही चरित्र का सूचक हैं, किन्तु ऐसे लोग दूसरों के मामले में कहीं अधिक सफल होते हैं, न कि स्वयं अपने मामल में।

सपाट हाथ

ऐसे सपाट हाथ जिन पर बहुत ही कम रेखाएं हों उन लोगों के होते हैं जो अपने स्वभाव में, बल्कि शारीरिक निर्माण में भी बहुत शान्त किस्म के होते है। वे शायद ही कभी चिन्ता में डूबते हों, गुस्सा तो उन्हें बहुत ही कम आता है, और जब आता है तो उन्हें कारण पता होता है कि वे क्यों क्रुद्ध हैं। उसमें पुनः हथेली के कोमल अथवा कठोर होने से परिवर्तन होता है। जब हथेली दृढ़ हो तो कोमल के मुकाबले यह नियन्त्रण और शान्ति का अधिक बड़ा चिन्ह है। कोमल होने की दशा में बात नियंत्रण की उतनी नहीं है, जितनी उदासीनता की है—व्यक्ति किसी मामले में इतनी रुचि ही नहीं लेगा कि गुस्से की नौबत आये—उसके लिए ऐसा करने में बहुत मेहनत पड़ जाएगी।

त्वचा

यदि हथेली की त्वचा स्वाभिक रूप से बहुत अच्छी और हलकी हो तो व्यक्ति मोटी त्वचा वाले की तुलना में अधिक समय तक युवावस्था का उत्साह और प्रकृति अपनाएं रहे गा। यद्यपि इस बात तपर व्यक्ति के कार्य का बहुत प्रभाव प ड़ता है, लेकिन मैं उस दशा में यह बात कह रहा हूं कि जब व्यक्ति ने कम परिश्रम या शारीरिक श्रम किया हो, तथापि जहां मामला शारीरिक श्रम का भी हो, वहां भी त्वचा पर उकेरी ऊंची-नीची मेंड का निरीक्षण किया जा सकता है। यह सिद्ध हो चुका है कि इस संबंध में भी कभी दो हथेलियां एक जैसी नहीं मिलतीं, परिणामतः कार्य त्वचा को मोटा भले ही कर दे, उसकी निजी विशेषता वही बनी रहती है।

हथेली की रंगत

हथेली की रंगत का बाहरी हाथ के रंग की तुलना में कहीं अधिक महत्व है। पहली नजर में तो यह विचित्र बात लग सकती है, किन्तु थोड़ी गहराई से देखने पर इस बात का सत्य प्रमाणित हो जाएगा।

हथेली स्नायुओं और स्नायु द्रव के तुरंत नियंत्रण व क्रिया के अधीन है। वैज्ञानिकों के अनुसार हाथ में शरीर के किसी अन्य भाग की तुलना में अधिक स्नायु हैं, और उसके भी आगे हाथ के भी किसी अन्य हिस्से के मुकाबले हथेली में अधिक स्नायु होते हैं। जहां तक स्नायु-द्रव का संबंध है एबरक्रोम्बी ने 1838 में लंदन में प्रकाशित हुए अपने ग्रंथ में लिखा है–"ज्ञानेंद्रियों से मस्तिष्क तक प्रभावों के संप्रेषण का श्रेय स्नायविक द्रव्यों की क्रियाओं को दिया गया है, जो कुछ नहीं विद्युत अथवा वैद्युतिकता से मिलता-जुलता एक अत्यन्त सुक्ष्मसार पदार्थ है।" इससे प्रमाणित होता है कि यह सुक्ष्मसार पदार्थ अवश्य शरीर के किसी अन्य भाग की तुलना में हथेली को अधिक प्रभावित करता है। इसलिए हर तरह से इसका महत्वपूर्ण कारण है कि हाथ के पिछले भाग के मुकाबले हथेली की रंगत अधिक महत्व क्यों रखती है।

यह देखा जा सकता है कि लगभग हर हथेली की अपनी स्पष्ट और अलग रंगत होती है जिसका श्रेणी विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है :

जब हथेली पीली या लगभग सफेद रंग की हो तो व्यक्ति अपने को छोड़ किसी अन्य बात में कोई रुचि नहीं लेता, दूसरे शब्दों में वह स्वार्थी अहंकारी और सहानुभूतिविहीन होता है।

जब हथेली पीली रंगत की हो तो व्यक्ति विकृत, उदास, अध पगला सा हो जाता है।

जब हथेली का रंग नाजुक-सा गुलाबी हो तो प्रकृति सुकोमल, आशावान और उत्फुल्ल होती है, और जब काफी लाल हो तो स्वास्थ्य सुदृढ़ होता है और मनोबल मजबूत, व्यक्ति भावावेगपूर्ण और त्वरित स्वाभावी होता है।

22. बृहत् त्रिकोण और चतुष्कोण

जिसे बृहत् त्रिकोण अथवा मंगल त्रिकोण कहा जाता है उसका निर्माण जीवन, मस्तिष्क और स्वास्थ्य रेखा से मिलकर होता है। (रेखाचित्र 22)

जैसाकि अधिकतर होता है, जब स्वास्थ्य रेखा पूरी तरह गायब हो तो इसकी पूर्ति त्रिकोण का आधार बनाने वाली एक काल्पनिक रेखा से करनी चाहिए या फिर (जैसाकि प्रायः देखा जाता है) आधार सूर्य रेखा बनाती है। (रेखाचित्र 22 aa)। यह बाद में उल्लिखित चिन्ह शक्तिशाली और सफलता का महानतम सूचक है, यद्यपि बल्कि उतना उदारचेता और उदार हृदय नहीं होगा जितना कि तब जब त्रिकोण का आधार स्वास्थ्य रेखा से बनता हो।

इस त्रिकोण का आकार व स्थिति को उन्हीं के आधार पर निर्धारित करना चाहिए, यद्यपि इसके ऊपरी, मध्य और निम्न तीन त्रिकोण हैं, जिन बातों की चर्चा बाद मे की जाएगी।

जब त्रिकोण का निर्माण भली प्रकार मस्तिष्क, जीवन और स्वास्थ्य रेखा से होता है तो इसे पर्याप्त चौड़ा होना चाहिए ताकि मंगल का पूर्ण क्षेत्र इसके दायरे में आ जाए। इस स्थिति में यह विचारों का खुलापन दर्शाता है, और उदारता व उन्मुक्त दृष्टि का द्योतक होता है। ऐसा व्यक्ति किसी एक के लिए नहीं बल्कि पूर्ण समाज की भलाई के लिए अपने को बलिदान करने को तैयार रहता है।

इसके विपरीत जब इसका निर्माण लहरदार, अस्थिर छोटी रेखाओं से होता है तो इससे व्यक्ति की भीरुता संकुचिता और कायरता का पता चलता है। ऐसा व्यक्ति हमेशा बहुसंख्या के साथ चलता है, भले ही वह अपने सिद्धान्तों के विरुद्ध जा रहा हो।

और जब इस त्रिकोण की एक अन्य निर्मिति में इसका आधार सूर्य रेखा बनाती है तो व्यक्ति के विचार संकुचित होते हैं, किन्तु साथ ही उसकी व्यक्ति-विशिष्टता अत्यधिक होती है और इरादा भी बहुत पक्का होता है। ऐसा चिन्ह अपने द्वारा प्रकट किये जाने वाले गुणों के कारण अंपने-आप में सांसारिक सफलताओं का बीच लिए होता है।

ऊपरी कोण

बृहत् त्रिकोण का ऊपरी कोण मस्तिष्क और जीवन रेखाओं से मिलकर बनता है (रेखा-चित्र 20 a)। यह कोण स्पष्ट, ठीक से नुकीला और सम होना चाहिए। ऐसा होने पर यह विचार और बुद्धि की परिष्कृति और दूसरों के प्रति विनम्रता का सूचक होती है।

जब यह अत्यधिक कुंठित हो तो इससे मन्द और काम से काम रखने वाली बुद्धि का ज्ञान होता है जिसमें अनुभूति और विनम्रता बहुत कम हो और कला या कलात्मक वस्तुओं या व्यक्तियों के प्रति प्रशंसा और जानकारी का भाव न के बराबर हो।

जब यह अत्यन्त चौड़ा और कुंठित हो तो इससे बहुत कुन्द और जल्दबाज प्रकृति का पता चलता है, वह व्यक्ति लगातार दूसरों को कुपित करता चला जाने वाला होगा। इससे अधीरता और अध्ययन को क्रियान्वित करने की अक्षमता का भी पता चलता है।

मध्यकोण

मध्यकोण मस्तिष्क और स्वास्थ्य रेखा के मेल से बनता है (रेखाचित्र 22 c)। यदि यह कोण स्पष्ट और सुविकसित हो तो यह त्वरित बुद्धि, जीवन्तता और अच्छे स्वास्थ्य का द्योतक होती है।

जब बहुत तीखा होता है तो यह कष्टकर रूप से व्यग्र प्रकृति और बुरे स्वास्थ्य का सूचक होती है।

और जब अत्याधिक कुंठित होता है तो बुद्धि की मन्दता और काम करने के चलताऊ-से ढंग का परिचायक होता है।

निम्नकोण

निम्न कोण (रेखाचित्र 22 d) जब बहुत तीखा और स्वास्थ्य रेखा से निर्मित हो तो दुर्बलता, जीवन्तता की कमी आदि का सूचक है, और जब कुंठित हो तो दृढ़ प्रकृति का परिचायक है।

जब सूर्य रेखा से बना हो और बहुत सीधा हो तो यह स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रदान करता है, किन्तु दृष्टिकोण बहुत संकुचित होता है।

जब कुंठित होता है तो उदारचेता और उदार हृदय बनाता है।

चतुष्कोण

जैसांकि नाम से स्पष्ट है, चतुष्कोण मस्तिष्क और हृदय रेखाओं के बीच की चतुष्कोण आयताकार जगह है (रेखाचित्र 22)। इसे आकार में सम, दोनों सिरों पर चौड़ा और केन्द्र में सकुचित नहीं होना चाहिए। इसका आन्तरिक भाग समतल और साफ हो जिसे बहुत सी रेखाएं भर न रही हों चाहें हृदय रेखा से आकर या मस्तिष्क रेखा से आकर। जब यह इस रूप में अंकित होता है तो यह बुद्धि की समता, मानसिक क्षमता और मित्रता व प्रेम में वफादारी का सूचक होता है।

अपने आप में यह स्थान अपने साथियों के प्रति व्यक्ति के रवैये को दर्शाता है। जब यह चतुष्कोण अत्याधिक संकरा हो तो विचारों की संकुचिति, सोचने का छोटापन, कट्टर पंथीपन—धर्म और नैतिकता के क्षेत्र में अधिक-‸-आदि का निदर्शन करता है, जबकि

त्रिकोण कार्य और व्यवसाय में सुरक्षा का सूचक होती है। धार्मिक लोगों के हाथ में यह एक अद्‌भुत चिन्ह है और किसी धर्मान्ध के हाथ में यह स्थान हमेशा बहुत संकरा होगा।

दूसरी ओर यह स्थान अत्यधिक चौड़ा भी नहीं होना चाहिए। यदि ऐसा होगा तो धर्म और नैतिकता को लेकर व्यक्ति के विचार इतने खुले होंगे कि उसके अपने हित में नहीं होंगे।

जब यह स्थान मध्य में इतना संकरा हो जाए जैसे कि कमर होती है तो इससे पूर्वाग्रह और अन्याय का बोध होता है। पुनः दोनों सिरे न्यायोचित रूप से समान और सन्तुलित होने जरूरी हैं। जब यह शनि के पर्वत की तुलना में सूर्य के पर्वत के नीचे कहीं अधिक चौड़ा हो तो व्यक्ति अपने नाम, हैसियत, कीर्ति आदि को लेकर बहुत लापरवाह होता है। जब स्थान संकरा हो तो इसके विपरीत का निदर्शन होता है।

ऐसी स्थिति में यह इस बात का चिन्ह है कि व्यक्ति दूसरों की राय को लेकर अध्यधिक चिन्तित रहता है—दुनिया क्या सोचती है, उसे अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए आदि।

जब यह आयत शनि अथवा गुरु के नीचे अत्यधिक चौड़ी हो और दूसरे सिरे पर संकुचित हो तो इस बात की सूचक है कि व्यक्ति अपने उदार विचारों से, मानसिक खुलेपन से संकुचित और पूर्वाग्रही होने की ओर जाएगा।

जब चतुष्कोण अपने पूरे आधार में असामान्य रूप से चौड़ा हो तो इससे मस्तिष्क में सुव्यवस्था की कमी का पता चलता है, विचारों और सोच में लापरवाही, प्रकृति का रुढ़िमुक्त होना और हर तरह से बुद्धिमत्ता की कमी होना आदि का ज्ञान होता है।

जब चतुष्कोण समतल और छोटी-छोटी रेखाओं से मुक्त होता है तो उससे शान्त स्वभाव का पता चलता है।

जब यह छोटी रेखाओं और गुणन चिन्हों से भरा पड़ा हो तो प्रकृति बहुत उद्विग्न और चिड़चिड़ी होती है।

चतुष्कोण के किसी भी भाग में नक्षत्र का होना एक बहुत अच्छा चिन्ह है, विशेषतः यह यदि किसी अनुकूल पर्वत के नीचे हो।

गुरु के नीचे यह गौरव और सत्ता दिलाता है।

शनि के नीचे होने पर सांसारिक मामलों में सफलता प्रदान करता है।

सूर्य के नीचे हो तो ख्याति की प्राप्ति में सफलता और कलाओं के माध्यमों से हैसियत दिलाता है और सूर्य तथा बुध के बीच होने पर विज्ञान और शोध के क्षेत्र में सफलता।

23. यात्राएं, समुद्र यात्राएं और दुर्घटनाएं

यात्रा और समुद्र यात्रा की भविष्यवाणी करने के दो स्पष्ट तरीके हैं। एक चन्द्र के पर्वत पर गहरी रेखाओं को देखकर और दूसरा उन महीन रेखाओं को देखकर जो जीवन रेखा निकलती हैं (रेखाचित्र 22 o)। यह संकेत उसी की भांति है जो हथेली मे जीवन रेखा के बंटने से मिलता है :

यदि एक शाखा शुक्र के गिर्द जाती है, और दूसरी चन्द्र पर्वत के आधार की ओर बढ़ती है तो यह इस बात की भविष्यवाणी है कि व्यक्ति अपने घर गांव से हटकर कोई बड़ा स्थान परिवर्तन करेगा। इससे यह परिणाम निकलता है कि जीवन रेखा के परिवर्तनों से जिन यात्राओं का पता चलता है, वे चन्द्र के ऊपर की रेखाओं से मिले संकेतों से कही अधिक महत्वपूर्ण, क्योंकि ये केवल व्यक्ति की सामान्य यात्राओं और परिवर्तनों की सूचक होती हैं। कभी-कभी यह भी देखने को मिलता है कि दीर्घ रेखाएं पहले मणिबंध से निकलती हैं (रेखाचित्र 22) और चन्द्र पर्वत तक ऊपर को जाती हैं। ये भी चन्द्र पर्वत पर अंकित यात्रा रेखाओं की तरह हैं, लेकिन उसकी तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। जब भाग्य रेखा उसी बिन्दु पर अत्याधिक और लाभकारी परिवर्तन दर्शाती है तो ये रेखाएं समृद्धिशाली और सौभाग्यशाली सिद्ध होती है लेकिन जब भाग्य रेखा उसी बिन्दु पर कोई विशेष लाभ अर्जित करती नहीं दीखती तो व्यक्ति की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता और सांसारिक मामलों में इससे उसे कोई लाभ भी बड़ी हद तक प्राप्त होता नहीं दिखता।

जब इस तरह की यात्रा रेखा गुणन चिन्ह के साथ समाप्त होती है तो यह यात्रा के निराशा में समाप्त होने की सूचना देती है। (रेखाचित्र 22 ee)

जब यात्रा-रेखा वर्ग के रूप में समाप्त होती है तो इससे यात्रा में खतरे का पता चलता है, किन्तु व्यक्ति सुरक्षित रहता है।

जब एक रेखा द्वीप के साथ समाप्त होती है, वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, यात्रा का परिणाम हानिकारक निकलता है (रेखाचित्र 22 f)।

पहले मणिबंध से उठकर चन्द्र के पर्वत पर आने वाली रेखाएं सर्वाधिक लाभकर हैं :

जब रेखा हाथ को पार करके गुरु पर्वत में प्रवेश करती है तो यात्रा से ऊंची हैसियत और पर्याप्त शक्ति हासिल होती है, और यात्रा बहुत लम्बी भी होती है।

जब भाग्य रेखा शनि के पर्वत की ओर जाती है तो किसी प्रकार की दुर्घटना पूरी यात्रा पर छायी रहती है।

जब यह सूर्य के पर्वत की ओर जाती है तो यह सर्वाधिक अनुकूल सिद्ध होती है जिससे समृद्धि और ख्याति प्राप्त होती है।

जब यह बुध के पर्वत की ओर जाती है तो अनपेक्षित और आकस्मिक धन दिलाती है।

जब चन्द्र पर्वत के ऊपर की लेटी रेखाएं पर्वत को पार करके भाग्य रेखा पर पहुंचती हैं तो यात्राएं अधिक लम्बी होती हैं और उनके मुकालबे अधिक महत्वपूर्ण भी जिनका पता उसी पर्वत की छोटी, भारी रेखाओं से चलता है, यद्यपि हो सकता है कि उनका सम्बन्ध स्थान परिवर्तन से न हो। (रेखाचित्र 22 gg)

जब यह भाग्य रेखा से मिल जाती है और उसी के साथ ऊपर को उठती हैं तो ये ऐसी यात्राओं का परिचायक होती हैं जिनसे व्यक्ति को पर्याप्त लाभ प्राप्त होगा।

जब इन छोटी रेखाओं में से किसी का भी समापन नीचे झूलाकार या कलाई की ओर नीचे को वक्र होकर होता है तो मात्र दुर्भाग्यपूर्ण होती हैं (रेखाचित्र 22 h)। जब ये ऊपर की ओर उठती हैं, कितनी ही छोटी क्यों न हों, यात्रा सफल होती है।

जब इनमें से कोई रेखा दूसरी रेखा को काटती है तो ऐसी यात्रा पुनः होती है और किसी महत्वपूर्ण कारण से होती है।

ऐसा किसी रेखा पर वर्ग खतरे का चिन्ह है, लेकिन दुर्भाग्य या दुर्घटना से सुरक्षा रहती है।

यदि यात्रा रेखा मस्तिष्क रेखा में जा मिलती है इससे एक बिन्दु बनता है या द्वीप बनता है या रेखा टूट जाती है तो इससे सिर को लगने वाली चोट या यात्रा से किसी अन्य संकट की भविष्यवाणी होती है (रेखाचित्र 22 hh)।

दुर्घटना

मैंने दुर्घटनाओं के बारे में यात्रा की चर्चा करते हुए यात्रा रेखा को लेकर पर्याप्त संकेत कर दिये हैं, किन्तु दुर्घटनाएं जीवन-रेखा और मस्तिष्क रेखा पर अन्य किसी स्थल की अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं।

पहली बात तो यह कि जीवन रेखा पर अंकित दुर्घटना मृत्यु का तात्कालिक खतरा बतलाती है, जो इस प्रकार है—

जब शनि के एक द्वीप से एक रेखा नीचे को गिरती है और जीवन रेखा से मिलती है तो घातक नहीं वरन् गंभीर संकट का निदर्शन होता है (रेखाचित्र 22 ii)।

जब ऐसी रेखा एक छोटे गुणन चिन्ह के रूप में समाप्त होती है, भले ही जीवन रेखा पर या उससे अलग तो इसका अर्थ होता है कि व्यक्ति किसी गम्भीर दुर्घटना से बाल-बाल बचेगा।

जब यही चिन्ह नीचे की ओर अंकित होता है—शनि के पर्वत के आधार पर तो दुर्घटना किसी अन्य कारण की अपेक्षा पशुओं के कारण अधिक होती है।

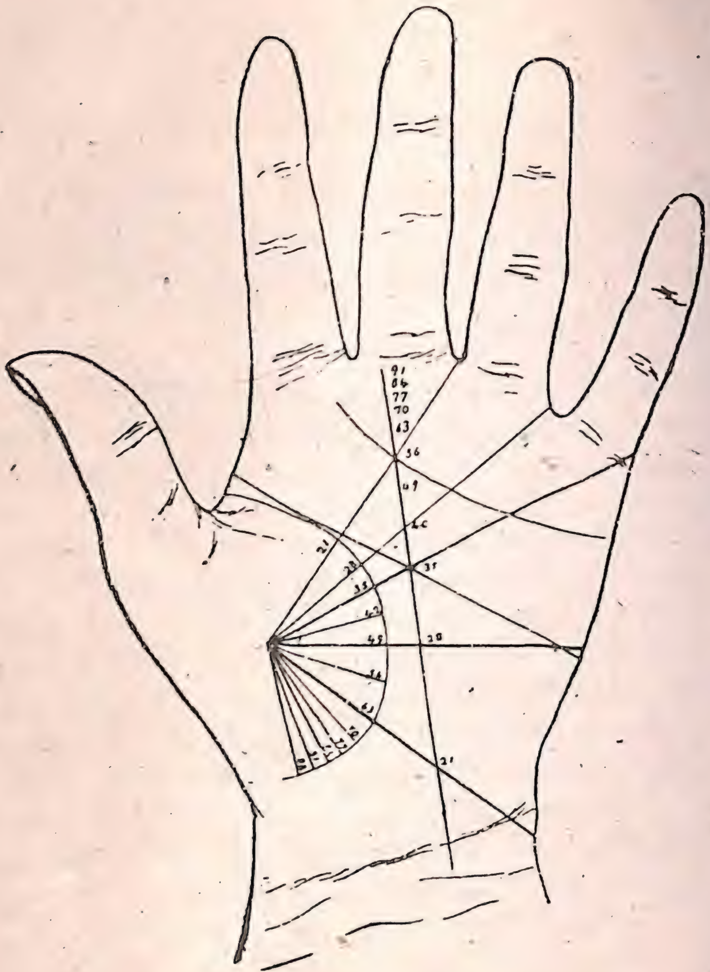
शनि से जीवन रेखा की ओर जाती सीधी रेखा किसी प्रकार के खतरे की सूचक है किन्तु वह उतना गम्भीर नहीं होगा, जितना कि दोषयुक्त रेखा से शनि पर जाती हो या उसके नीचे हो।

मस्तिष्क रेखा पर भी बिल्कुल यही नियम लागू होते हैं, अंतर केवल इतना ही है कि खतरा सीधे स्वयं सिर को ही होगा। किन्तु यदि दुर्घटना रेखा मस्तिष्क रेखा को काटती या उसमें अवरोध पैदा नहीं करती तो खतरा मृत्यु की ओर संकेत नहीं करता, जबकि जीवन रेखा पर अंकित होने की दशा में ऐसा ही है। इसका अभिप्रायः है सत्य यही है कि व्यक्ति के पास आने वाले संकटो को पहले ही देख लेने का समय है, और ऐसा चिन्ह मस्तिष्क को लगने वाले आघात और भय का संकेत है, लेकिन जब तक रेखा प्रभावित या टूटी न हो तो कोई गम्भीर परिणाम नहीं होगा।

24. समय-सात की पद्धति

अपनी पुस्तकों में मैं समय और तिथियों के बारे में एक पद्धति का उपयोग करता हूँ, जिसका मैंने अन्यत्र उल्लेख नहीं देखा है। यह ऐसी पद्धति है जिसे मैंने निरपवाद रूप से सत्य पाया है, इसलिए मैं उध्येताओं से स्वयं इस बात पर ध्यान देने की सिफारिश करूंगा। यह सात की पद्धति है और मैं इसका पोषण जीवन के सभी रहस्यमय कलापों में प्रकृति द्वारा पढ़ायी पद्धति के रूप में करता हूँ।

पहली बात यह है कि हम सात चिकित्सा और विज्ञान के दृष्टिकोण से गणना का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बिन्दु पाते हैं। हम देखते हैं कि सारी व्यवस्था हर सात वर्ष के बाद पूर्णरूपेण परिवर्तित हो जाती है, गर्भावस्था से पूर्व की सात स्थितियां हैं, मस्तिष्क भी मानवीय मस्तिष्क का अद्वितीय स्वरूप पाने के पूर्व सात रूपों में से गुजरना है, तथा इसी प्रकार अन्यत्र भी। फिर हम यह भी देखते हैं कि हर युग में सात की संख्या ने विश्व इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उदाहरण के लिए, मानव की सात जातियां, संसार के सात आश्चर्य, सात नक्षत्रों के साथ देवताओं की सात वेदियां, सप्ताह के सात दिन, सात रंग, सात खनिज, सात ज्ञानेन्द्रियों की परिकल्पना, शरीर के तीन भाग जिसमें से हरेक में साथ विभाग हैं और विश्व के सात प्रभाग। बाइबिल में भी सात सबसे महत्वपूर्ण संख्या है, किन्तु और आगे विवरण देना सतही हो जाएगा। इस विषय से अधिक संबंध रखने वाला बिन्दु यही है कि पूरी व्यवस्था में हर सात वर्ष में आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है। मेरा अपना निरीक्षण इस तथ्य का गोषण करता है (मात्र अध्योताओं द्वारा स्वयं दिये जाने हेतु) कि क्रमवार आने वाले सात शरीर की क्रियाओं में आने वाले परिवर्तनों के लगभग समान है। उदाहरण के लिए जो बालक सात वर्ष की आयु में नाजुक है पूरी सम्भावना है कि इक्कीस वर्ष की आयु में भी नाजुक हो जबकि सात वर्ष पर स्वस्थ और मजबूत बालक इक्कीस का होने तक वैसा ही स्वस्थ-मजबूत दिखाई देगा, इन बीच के वर्षों में वह कितना बीमार या परेशान रहा है, उससे फर्क नहीं पड़ता। स्वास्थ्य आदि के संबंध में भविष्य कथन के लिए यह एक दिलचस्प बिन्दु है,. जिसे मैंने न केवल दिलचस्प बल्कि सही और भरोसेमंद भी पाया है। हाथ की हरी रेखा ऐसे विभागों में बांटी जा सकती है जो कमोवेश सही-सही बता सकते हैं यद्यपि तिथियों को जानने के लिए सबसे अधिक देखी जाने वाली रेखाएं जीवन रेखा और भाग्यरेखा हैं। रेखा चित्र 23 में यह देखा जा सकता है कि मैंने



चित्र— 23
समय निर्धारित करने की विधि

भाग्य रेखा को तीन बड़े विभागों में बांटा है, जो क्रमशः इक्कीस, पैंतीस और उनचास को दर्शाते हैं और यदि अध्येता इसे ध्यान में रखे तो मानवीय हाथ पर वह स्वयं आसानी से उन विभागों का अंकन कर लेगा। तथापि एक बात मैं पूरा जोर देकर कहे बिना नहीं रह सकता कि छोटी से छोटी गणना करने के पूर्व या ऐसी कोशिश करने के पूर्व अध्येता को हाथ की श्रेणी या प्रकार को अच्छी तरह देख लेना चाहिए। यह तर्क संगत है कि वर्गाकार या चमंचाकार हथेली और मनोवैज्ञानिक प्रकार की हथेली जो तिथियां बतायेंगी उनमें निश्चित रूप से अत्यधित अन्तर देखने को मिलेगा। यदि अध्येता इस बात को ध्यान में रखेगा तो वह हथेली की लम्बाई के अनुसार अपने पैमाने को घटा या बढ़ा लेगा। जैसाकि दर्शाया गया है, उसके अनुसार रेखाओं को मानसिक रूप से विभक्त कर लेना सबसे सीधी और सही योजना है जिस पर कोई भी अध्येता अमल कर सकता है।

तिथियों की गणना में जब जीवन रेखा और भाग्य रेखा को एक साथ प्रयोग किया जा सकता है जो यह देखने को मिलेगा कि वे एक-दूसरे की पुष्टि करती हैं और घटनाओं को एकदम सही-सही बता देती है। इसलिए थोड़े अभ्यास के बाद यह तिथि बता देना कठिन नहीं है कि कब कोई बीमारी हुई थी या घटना घटी थी, या कब अमुक-अमुक बात होगी। अभ्यास किसी क्षेत्र में पूर्णता की ओर ले जाता है, इसलिए किसी अध्येता को निरुत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है, यद्यपि शुरु में ही वह रेखाओं को विभागों और उपविभागों में बांटने में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करने लगता है।

तीसरा खण्ड

1. आत्महत्या के सम्बन्ध में कुछ विचार

अब मैं कुछ ऐसे उद्धरणीय प्रकारों की चर्चा करूंगा जो रेखाओं, चिन्हों और निर्मितिओं के समूह मे अध्येता को यह समझाने में सहायक होंगे कि ये सब अलग व्यक्तिगत चरित्र कैसे दर्शाते हैं। ऐसा शायद ही कभी होता हो कोई एक स्पष्ट चिन्ह या विशिष्टता किसी एक प्रकृति को नष्ट या धुंधला कर देने की सामर्थ्य रखता हो। एक बुरा या खतरनाक चिन्ह प्रकृति के मामले में केवल इतना बताता है कि कोई विशिष्ट प्रकृति एक या दूसरी दिशा में ले जाने वाली है। एक घड़ी बनाने में कितनी तरह के चश्मों की आवश्यकता पड़ती है। इसी तरह किसी अपराधी या सन्त बनाने के लिए कई तरह की विशिष्टताओं की आवश्यकता पड़ती है। इस बात का अत्यन्त स्पष्ट उदाहरण वह प्रकार है जो आत्महत्या के विषय में ही कुछ एक बातें कहना चाहूंगा। मैं किसी भी नगर में रहूं, वहीं मेरी दिलचस्पी का केन्द्र एक ऐसी संस्था होती है जिसे मृत्यु का मन्दिर अस्पतालों में शव रखने का स्थान —कहा जा सकता है। क्यों न कहा जाए ? यदि कोई किसी भी अर्थ में जीवन का अध्ययन करता है तो उसे इसका अध्ययन उस 'अनजाने देश की सीमाओं तक करना चाहिए जहां से कोई यात्री लौटकर नहीं आया।' अर्धबर्बर और अर्धमानवीय विचार— जो आत्महत्या जैसे कृत्य ने अपने को घोषित करके जाति से स्वयं को बाहर कर दिया है—इस दुनिया में ही नहीं अगली दुनिया में भी उनकी पूरी तरह आलोचना क्यों की जानी चाहिए ? यहां तक कि आज के जागरूक युग में भी मैंने पादरियों को कब्र के सिरहाने जाने से इनकार करते देखा है। कुछ देशों में मैंने आधी रात को मुर्दों को कब्र खोदकर निकाले जाते और फिर समुद्र की रेत में गाड़े जाते देखा है। शवों के प्रति इस व्यवहार के विरुद्ध मैं आवाज नहीं उठा रहा हूं, मृतक को कुछ भी अनुभव नहीं होता, शव तो मिट्टी है—किन्तु मैं जो कह रहा हूं उसका कारण जीवित मनुष्यों की क्रूरता है।

आत्महत्या के इस पहलू पर मुझे पर्याप्त जोर डालकर अपनी बात कहनी जरूर चाहिए, भले ही अपने विचारों के कारण मेरी तीव्र आलोचना हो—क्योंकि जीवन का विश्लेषण करने के यत्न का लाभ ही क्या है, यदि कोई अपनी बात खुलकर और बिना अवरोध के

न कह सके ? मैं जानता हूं कि यह बात कहने के लिए मेरी आलोचना की जाएगी कि मैंने ऐसा नहीं देखा है कि आत्महत्या करने वाले आमतौर पर कमजोर मन के लोग होते हैं। इसके विपरीत, मैंने केवल इतना देखा है कि वे एक अलग मानसिक श्रेणी के लोग होते हैं और उनसे भिन्न होते हैं जो दुःख और दुर्भाग्य के बावजूद जीवन के किनारों से झूलते रहना पसंद करते हैं। सही क्या है और गलत क्या है, इनको लेकर कोई संकुचित रेखाएं खींच लेना मूर्खतापूर्ण है, यह जानकर तो और भी कि हम जीवन पर नियंत्रण करने वाले नियमों से अनजान हैं, हमेशा अनजान रहे हैं। जो नियम बच्चे के जन्म से लेकर व्यक्ति के निजी विकास तक लागू होते रहते हैं, जो एक व्यक्ति को ठीक जंचता है, हो सकता है, कि दूसरे के लिए वह पूरी तरह गलत हो, और ऐसा हमारे व्यवहार का निर्धारण करने वाले हमारे मानसिक दृष्टिकोण के कारण होता है। एक बहुपरिचित रोग है, मानसिक रोग, जिससे ज्ञानेन्द्रियां कुछ इस तरह प्रभावित होती हैं कि उस कमरे में कागज पर पेंसिल की आवाज रोगी को किसी रथ की घरघराहट जैसी लगती है और माचिस की तीली का जलना बिजली की चमक से भी ज्यादा चकमक कर देने वाला महसूस होता है। ठीक इसी प्रकार मानव मन इच्छा, दुःख, चिन्ता आदि के दबाव में 'क्रूर विधि के धुनिष-वाण' को लेकर कहीं अधिक संवेदनशील बन गया हो सकता है। तब ऐसे लोगों पर हम न्याय-व्यवस्था कैसे दे सकते हैं या इनकी आलोचना कैसे सकते हैं, जबकि सीधी-सी बात है ना तो हमने उनकी आंखों से कुछ देखा न उनके कानों से कुछ सुना और न उनकी मानसिक स्थिति से कुछ समझा ?

मैं न्यायालयों में आये दिन प्रयोग होने वाली इस उक्ति का भी पूरा समर्थन नहीं कर सकता कि अमुक ने 'मानसिक संतुलन बिगड़ने के कारण आत्महत्या कर ली', जो ऐसे सभी लोगों के संदर्भ में बोली जाती है, भले ही उनमें मानसिक असन्तुलन या पागलपन का कोई प्रमाण मिलता हो या न मिलता हो। यह विचार कि यदि किसी ने आत्महत्या की है तो निश्चित रूप से वह पागल ही होगा, पहली नजर में ही मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि यह बार-बार सिद्ध हो चुका है कि किसी व्यक्ति ने अपने विशेष मामले में ही इस निष्कर्ष पर पहुंचने के पूर्व कि मृत्यु की खोज ही उसके जीवन में महानतम वस्तु होगी, अच्छे से अच्छे तर्क और युक्ति को इस प्रकार के हर पहलू को संतुलित करने के लिए भलीभांति तोल लिया था। मैं आत्महत्या के कुछ ऐसे मामलों को भी जानता हूं जिनमें यथासंभव अधिक साहस, तीव्रतम सहनशक्ति और महानतम इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी तभी वे रहस्य के उस शक्तिशाली दूत (मृत्यु) का सामना कर सके जिसके लिए सारी उम्र उन्हें यही पढ़ाया गया था कि उससे बचें और डरें। मैंने खामोश शहीदी के कुछ ऐसे महान् कार्य भी देखे हैं जो उन लोगों ने किये जिन्हें बाद में ईसाई धर्म के अनुसार अन्तिम संस्कार का अधिकार भी शायद ही मिल पाया हो। मैं ऐसे एक-दो नहीं अनेक लोगों को जानता हूं जिन्होंने असाध्य बीमारी के शिकार होने के कारण अपनी सहज मृत्यु के कुछ महीने पहले

जीवन का अन्त कर लिया—क्यों ? इसलिए नहीं कि वे भयंकर कष्ट में थे, बल्कि इसलिए कि वे अपने बच्चों की परेशानी का कारण बने हुए थे। उन पर ऐसे व्यय का बोझ डाले हुए थे जिन्हें वे उठा नहीं सकते थे। तब भी मुझसे कहा जाता है कि ऐसे व्यक्तियों के लिए शान्ति के साम्राज्य में कोई जगह नहीं है—न जीते जी—न मरने पर, जो शान्ति कब्र की खामोशी के परे है, ऐसे में मैं पूछता हूं कि क्या उसे मनुष्य कहा जाए, या राक्षस या शैतान जो दूसरे मनुष्यों को परमेश्वर के अधिकार क्षेत्र में आनेवाली इच्छा या न्याय-व्यवस्था सुनाने का अधिकार लिए बैठा है ? उस सर्वशक्तिमान और अज्ञात का प्रवक्ता बनकर बोलने को अपना चुनाव करने का अधिकार मर्त्यलोक के किस मनुष्य को है ? इस बर्बर व्यवस्था में आत्मा को सदा मिलने वाले कष्ट का नामलेवा होकर न जाने कितनी आत्महत्याओं की आज्ञा दे डाली होंगी। न जाने कितनी माताओं ने इस तरह की प्रतीक निष्ठा को ऐसी ही विनाशकारी महाशक्ति के पहियों के नीचे तोड़ डाला होगा ? जाने कितनी बहनें रात के अंधेरे में रोयी-सुबकी होंगी ? जाने कितने भाई स्वर्गलोक की ओर अवमानता-भरी नजरों से देख चुके होंगे कि ऐसी भी होती है ?

इसलिए हे प्रभु ! तुम जो कि जीवन और मृत्यु की आत्मा हो, जो है, जो होगा उसकी जीवनी हो, हमें तुम्हारा नाम भी नहीं पता, तुम्हारा अस्तित्व, तुम्हारी रचना या वह अन्तिम लक्ष्य नहीं पता जिसके लिए तुमने मनुष्य की रचना की ओर अपने लक्ष्य को पूरा किये जाने की प्रक्रिया के लिए मनुष्य को बनाया। चूंकि हम कुछ नहीं हैं, इसलिए हम सबको क्षमा करो, चूंकि हम कुछ मांगते भी नहीं, इसलिए हमें वही प्रदान करो, जिसकी हमें आवश्यतकता है, और चूंकि हम कुछ भी हो नहीं सकते, इसलिए तुम्हीं हमारे लिए सर्वांग सम्पूर्ण, जीवन, मृत्यु, शाश्वत आत्मा आदि सब हो जाओ।

2. हाथ की विशिष्टाएं और आत्महत्या की प्रवृत्ति

ऐसा हाथ आमतौर पर लम्बा होता है, जिस पर मस्तिष्क रेखा ढलुवां होती है, और चन्द्र का पर्वत विकसित होता है, विशेषतः आधार पर। मस्तिष्क रेखा भी जीवन रेखा से पूरी तरह जुड़ी होती है और इस तरह व्यक्ति की अत्यन्त संवेदनशील प्रकृति को और बढ़ा देती है। सहज स्वाभाविक है कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति न तो विकृतिपूर्ण होगा, न आत्महत्या की प्रवृत्ति प्रदर्शित करेगा, किन्तु उसकी सहज प्रवृति, उतनी अधीक संवेदनशील और कल्पना प्रवण है कि कोई संकट, दुःख या बदनामी का कारण हजार गुणा अधिक गहन होकर सामने आता है, और ऐसे व्यक्ति की आत्मोत्सर्ग की भावना को स्वयं को हानि पहुंचाने या मारने से एक विचित्र संतुष्टि प्राप्त होती है जैसाकि चित्र 15 में दर्शाया गया है।

सुविकसित शनि पर्वत के संबंध में भी इसी प्रकार के संकेत मिलते हैं। वे भी अत्यंत संवेदनशील और रोग विकृत प्रवृति बतलाते हैं—ऐसे व्यक्ति की सूचना देते हैं जो दृढ़ निश्चय के साथ इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि किनहीं परिस्थितियों में जीवन जीने योग्य नहीं है—इसलिए थोड़ी भी उकसाहट, जो किसी निराशा या संकट के कारण हो, उसे चुपचाप और सब छोड़-छाड़कर उस अन्तिम पड़ाव की ओर बढ़ जाने को प्रेरित कर देती है जिसके बारे में वह बहुत दिनों से कल्पना करता, सोचता आ रहा था।

बहुत अधिक ढलवां मस्तिष्क रेखा (चित्र 15) जब किसी नुकीले या शंकु आकार के हाथ पर हो तो इसी तरह के परिणाम की द्योतक होती हैं, किन्तु किसी अकस्मात आये आदेश के कारण जो कि ऐसे हाथ की प्रकृत विशेषता है। ऐसे व्यक्ति के लिए कोई आघात या संकट आवेश दिलाने को पर्याप्त है क्योंकि स्वभाव शीघ्र उत्तेजित होने वाला है, और इस के पूर्व कि कुछ सोचने का अवसर हो, घटना तो घट भी चुकती है।

इस उत्तेजित विशेषता का विपरीत उस स्थिति में नजर आता है जब व्यक्ति मस्तिष्क रेखा के मान्य रूप से ढलुवां न होने पर भी आत्महत्या कर लेता है। ऐसे व्यक्ति के हाथ में निश्चय ही रेखा जीवन रेखा से निकट से निकट जुड़ी होती है। गुरु का पर्वत दबा हुआ होता है और शनि पूरी तरह विकसित होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन की निराशा को असमान्य सघनता के साथ अनुभव करता है, साथ ही उसका मस्तिष्क उदासी और

अकेलापन लिए हुए होता है, तथापि वह जीवन और मृत्यु के प्रश्न का हर पहलू तोल लेने में पर्याप्त तर्कसंगत भी होता है, और यदि वह इस निष्कर्ष पर पहुंच गया है कि वह अपने दृष्टिकोण के अनुरूप सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण ढंग से दुर्भाग्य को समाप्त करने चल पड़ेगा। ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचने के पहले इस प्रकार का व्यक्ति क्या-क्या भुगत लेता है, इसका अनुमान लगा पाना अत्यन्त दुष्कर है। हम सब अपने हितों को शोषण और धन्धों में कुछ इस तरह लिप्त हैं कि धीरज के साथ संकट से गुजरने वाले पीले, थके चेहरे को हम शायद ही कभी देखते हों, रात-रात जगी आंखों का खालीपन भूख से कुम्हला गये गाल शायद ही कभी नजर आते हों जो पल-भर के लिए हमारी बगल में ही आ खड़े हुए थे अब हमेशा के लिए गायब हो गए हैं।

3. हत्या की श्रेणियां

हत्या को बहुत-सी विभिन्न श्रेणियों में रखा जा सकता है। हाथ को देखकर जो मुख्य रूप से जाना जा सकता है, वह है अपराध की ओर असमान्य वृत्ति। स्वयं अपराध की श्रेणी का निर्धारण हाथ के प्रकार से होता है जिसके अनुसार व्यक्ति के रुझान और झुकाव जाने जाते हैं। मैं समझता हूं कि कुछ लोगों में हत्या करने के लिए सहज-प्रकृत वृत्ति होती है, इस पर संदेह नहीं किया जा सकता। कुछ पैदाइशी अपराधी भी होते हैं जैसे जन्मताज संत होते हैं। अपराधी प्रवृतियां विकसित होती हैं या नही यह वातावरण और परिस्थितियों के अनुसार इच्छाशक्ति के विकास पर निर्भर करती है। बच्चों द्वारा प्रदर्शित विनाशकारी वृत्तियां उनमें ज्ञान की कमी नहीं दर्शाती, बल्कि यह दर्शाती हैं कि उनमें विनाश करने की भीतरी शक्ति है और यह निदर्शन इसके पहले ही होता जाता है कि वे वृत्तियां परिणाम के डर, इच्छाशक्ति या वातावरण आदि के द्वारा प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभावों में दब सकें। इस दुनिया में जन्म लेने वाले लोगों में से कुछ में ऐसी संभावनाएं दूसरों की अपेक्षा कुछ अधिक होती हैं, उनके वातावरण का थोड़ा भी दोष बाद में उसमें पनप गए अपराधी के लिए उत्तरदायी होता है। मैं फिर कहूंगा कि मैं ऐसा नहीं मानता जो अपराधी किसी भावावेश अथवा लोभ के आगे समर्पण करता है, वह दुर्बल मानसिकता का व्यक्ति है। इसके विपरीत अपराध को केवल व्यक्ति के संबंध में जोड़कर ही देखा जा सकता है। एक के लिए जो लोभ है, वह दूसरे के लिए लोभ नहीं है। मेरा कहना यह नहीं है कि ऐसा होने के कारण अपराध के लिए दण्ड की व्यवस्था न हो, इस के उलट अपराध से तो समुदाय की रक्षा हेतु निबटना ही चाहिए, लेकिन मेरा कहना यह है कि अपराध के लिए दंड व्यक्ति के अनुसार दिया जाना चाहिए, न कि अपराध के अनुसार।

इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि अपराध का अध्ययन करते हुए स्वयं को जहां तक संभव हो अपराधी की स्थिति में रखकर देखना चाहिए। (यह जानना आश्चर्यजनक है कि एक ही चित्र को देखते हुए अलग-अलग कोणों से उसमें कितनी विभिन्न अभिव्यक्तियां नजर आ जाती हैं।)

जहां तक हाथ का संबंध है, इस हत्या को तीन स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

1. कोई व्यक्ति हत्या की सहज प्रेरणा से हत्यारा बना हो, भावावेश क्रोध या प्रतिशोध

की भावना से, जैसा कि उसकी बर्बर निर्मिति दर्शाती है।

2. कोई व्यक्ति लाभ प्राप्ति के लालच में हत्यारा बना हो। ऐसी प्रकृति जो अपनी लोलुप प्रकृति की तुष्टि के लिए किसी भी सीमा को नहीं मानेगीं।

3. पूर्णतः हृदयहीन स्वभाव जो दूसरों के दुःखों पर जीवित हैं, ऐसी प्रकृति जो अपने शिकार के साथ भी मित्रतापूर्ण संबंध बनाकर रह सकती है—जो थोड़ी-सी प्राप्ति के लिए मौत का सौदा करने वाली प्रकृति है, शिकार बने व्यक्ति के द्वारा जीवन जीने की जो तड़प दर्शायी जाती है, उसका जिस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, ऐसा व्यक्ति जो इसमें निहित खतरे अच्छी तरह जानता है, किन्तु उस खतरे में उसे आनंद की प्राप्ति होती है, और नैतिक जागरूकता के नितांत अभाव में जिसे इस हत्या से मिलने वाले लाभ की अपेक्षा, स्वयं हत्या में ही अधिक आनंद प्राप्त होता है।

पहली श्रेणी अतिसामान्य है। कोई स्त्री या पुरुष केवल परिस्थिति के कारण हत्यारे बन जाते हैं। ऐसा व्यक्ति पूरी तरह से भलामानुस, सहृदय व्यक्ति होता है, किन्तु कोई चीज पाशविक प्रकृति उनके अंधे क्रोध को उकसा देती है और जब घटना घट चुकी होती है, वह व्यक्ति प्रायः पश्चात्ताप के कारण पूरी तरह टूट और बिखर जाता है।

ऐसे मामलों में हाथ अनियंत्रित स्वभाव और बर्बर भावावेग के अतिरिक्त अन्य कोई बुरा चिन्ह नहीं दर्शाता। वास्तव में यह अविकसित प्रकार या उसके निकट का किसी प्रकार का हाथ होता है। मस्तिष्क रेखा छोटी, मोटी, लाल होती है, नाखून छोटे और लाल और हाथ भारी और कड़ा। सबसे अधिक अलग विशिष्टता अंगूठा होगा। अंगूठा हाथ में काफी नीचे स्थित होगा, देखने में छोटा, दूसरी पोर मे मोटा होगा और पहली पोर, तजिसे 'मुग्दर-अंगूठा' कहें, वैसी होगी (रेखाचित्र 8)। ऐसा अंगूठा बहुत छोटा, चौड़ा और वर्गाकार-चपटा होता है, इस तरह के लोगों में वह निरपवाद रूप से मिलता है। ऐसे मामलों में यदि शुक्र का पर्वत भी असामान्य रूप से बड़ा हो तो विनाशकारी तत्व काम संवेग होंगे। जब असामान्य रूप से विकसित न हो तो सबसे बड़ा अवगुण अनियंत्रित स्वभाव और क्राध का होगा।

दूसरी श्रेणी में इनमें से कुछ भी असामान्य नही होगा। सबसे अलग दीखने वाली विशिष्टता मस्तिष्क रेखा होगी जो गहन रूप से अंकित होगी, किन्तु निश्चित रूप से ऊपर को विकसित होती होगी (चित्र 16), यह कुछ असामान्य स्थिति में होगी, बुध की ओर ऊंची उठती हुई अथवा उस स्थिति में पहुंचने में बहुत पहले ही दायें हाथ पर अपना स्थान छोड़ चुकी होगी। ज्यों-ज्यों प्रकृतियां सबल होती जाती हैं, यह हृदय रेखा में प्रवेश कर लेती है, उस पर अधिकार जमा लेती हैं, और व्यक्ति की सभी उदार भावनाओं व दयार्द्र विचारों को पूरी तरह ढक लेती है। (दूसरे भाग के अध्याय 9 में मस्तिष्क रेखा विषयक पहले की टिप्पणियां भी देखें।) हाथ प्रायः सख्त होगा, अंगूठा असामान्य रूप से मोटा नहीं

होगा, लेकिन लम्बा, सख्त और अन्दर को सिकुड़ा होगा। यह पूरी निर्मिति लोलुपता की प्रवृत्तियां प्रदान करने वाली हैं, अन्तरआत्मा का नितान्त अभाव लेकर व्यक्ति लाभ के पीछे दौड़ता है।

मानवीय प्रकृति के अध्येता के लिए तीसरी श्रेणी सबसे रोचक है, यद्यपि यह सबसे अधिक भयावह हो सकती है।

ऐसा हाथ अपराध के संबंध में सबसे सूक्ष्म प्रकृति का है। स्वयं हाथ को लेकर कुछ भी असामान्य न्याय नहीं किया जा सकता। सभी विशेषताओं का पूर्ण निरीक्षण करने के बाहरी प्रकृति में जो कपटपूर्ण पक्ष है उसका उद्घाटन किया जा सकेगा। प्रमुख विशेषताएं होंगी—बहुत पतला कठोर हाथ, लम्बा, उंगलिया प्रायः थोड़ा भीतर की ओर वक्र, अंगूठा भी लम्बा जिसके दोनों पोर सुविकसित होंगे, जिससे दोनों गुण व्यक्ति को मिलेंगे—योजना बनाने की क्षमता भी और उसे कार्यरूप देने के लिए आवश्यक इच्छाशक्ति की दृढ़ता भी। अंगूठा शायद ही कभी बाहर को झुकाव लिए या मुड़ा हुआ मिले। यद्यपि ऐसा सबसे पहली श्रेणी के हाथों में कभी-कभी देखने को मिल जाता है।

मस्तिष्क रेखा अपनी उचित स्थिति पर भी हो सकती है और उससे अलग भी। हां, यह हाथ को पार करती हुई सामान्य से कुछ ऊपर स्थित होगी, लेकिन बहुत लम्बी और बारीक होगी जो कपटपूर्ण सहज भावनाओं का सूचक चिन्ह है। हाथ पर शुक्र का पर्वत या तो बहुत दबा हुआ या ऊपर उठा हुआ होगा। जब दबा हुआ होगा तो व्यक्ति केवल अपराध करने के लिए अपराध करेगा, जब उठा हुआ होगा तो पाशविक वासनाओं की दृष्टि के लिए ही अपराध किया जाएगा।

ऐसे हाथ अपराध जगत के कुशल कलाकारों के होते हैं। ऐसे लोगों के लिए हत्या और कुछ नहीं, एक कौशलपूर्ण कला है, जिसे पूरा करने के लिए वे एक-एक विवरण का सूक्ष्म अध्ययन करेंगे। वे अपने शिकार की हत्या शायद ही कभी हिंसा पूर्ण ढंग से करेंगे—उनकी दृष्टि में ऐसा करना अश्लील कार्य होगा—वे जिस साधन को अपनाएं, विष उनमें प्रमुख होगा, लेकिन उसे इतनी कुशलता से प्रयोग करेंगे कि अंतिम रूप से यही कहा जाएगा—'मृत्यु स्वाभाविक कारणों से हुई।'

4. पागलपन की विभिन्न अवस्थाएं

यह अक्सर कहा जाता है कि एक विशेष बिन्दु पर सभी मनुष्य पागल होते हैं। जब यह पागलपन समंकीपन का आधा रास्ता पार कर जाता है तो व्यक्ति को 'पागल' की उपाधि से बाकायदा विभूषित कर दिया जाता है। जिस प्रकार पागलपन के कई रूप हैं, उसी प्रकार हाथ को देखकर भी अनेक संकेत प्राप्त किये जा सकते हैं। जिन विभिन्न प्रकारों पर हम यहां विचार करेंग, वे निम्नलिखित हैं :

1. विषाद ग्रस्तता और धार्मिक उन्माद, दृष्टिभ्रम आदि।
2. पागलपन का विकास।
3. सहज रूप से पागल व्यक्ति।

विषादग्रस्तता और धर्मान्धता

पहली स्थिति में मस्तिष्क रेखा कुछ चौड़े हाथ पर तीव्र चाप बनाती हुई चन्द्र के पर्वत पर नीचे को उतरती है, अधिकतर आधार की ओर जो व्यक्ति की असामान्य रूप से कल्पना प्रधान प्रकृति की सूचक है। इसके अतिरिक्त, शुक्र का पर्वत सुविकसित नहीं होता, इस प्रकार व्यक्ति की रुचि सभी मानवीय और प्रकृत चीजों में कम कर देता है, और अन्ततः शनि का पर्वत आधिकारिक स्थित में होता है।

नियम यह है कि ऐसा हाथ धर्मोन्मादी व्यक्ति का होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन के आरम्भिक दिनों से ही सबल दृष्टि भ्रमों को लेकर चलता है जो उसकी अद्‌भुत कल्पना-शक्ति की देन होते हैं और उसकी कल्पना शक्ति यदि उचित मार्ग पर डाल दी जाए तो शायद अपने अतिरेक का उपयोग कर दिखाए और इस प्रकार शान्त रहे, किन्तु यदि उसके विपरीत हो तो आत्मपोषण करती चलती है और इस प्रकार की बढ़ती जाती है। आरम्भ में हो तो यह प्रवृत्ति कभी-कभी रुक-रुककर लक्षित होती है, फिर इसकी अवधि लम्बी से लम्बी होती जाती है और अन्ततः इसके सन्तुलन के क्षण बहुत कम और बहुत अन्तर देकर आने शुरू हो जाते हैं। यह धर्मोन्मादी का विकृत अथवा विषादग्रस्त प्रकार है।

पागलपन का विकास

इस प्रकार का पागलपन आमतौर पर दो विशिष्ट प्रकारों के साथ संयुक्त रूप में मिलता है—चमचाकार और दार्शनिक प्रकार के हाथों के साथ।

पहले प्रकार में अत्यधिक चपटे और चमचाकार हाथ पर एक बहुत ढलुवां मस्तिष्क रेखा विद्यमान रहती है। अपने आरंभ में यह बहुत वीरतापूर्ण मौलिकता के साथ दीखती है जो स्वयं अपनी शक्ति क्षीण कर देती है। जिसका कारण इसके मौलिक और आविष्कारक विचारों का वैविध्य होता है। मैं दोहरा रहा हूं कि ऐसा व्यक्ति यदि जीवन में किसी अच्छी स्थिति में पहुंच सके जहां वह अपने विचारों का उपयोग कर सके तो सब ठीक रहेगा। और हो सकता है कि वह विश्व को कोई ऐसी नयी खोज या आविष्कार भी प्रदान कर दे जिससे सारी मानवता का कल्याण हो। लेकिन किसी ऐसे व्यवसाय से जो उस व्यक्ति के स्वभाव के एकदम प्रतिकूल हैं, उसे कुचल डालने क" कोशिश कर देखिए, आप तुरन्त ही उसके पूर्ण विचार प्रवाह को किसी अद्भुत आविष्कार की ओर मोड़ देंगे जिसे वह गुप्त रूप से कार्यान्वित करने में लग जाएगा, जिसकी सफलता के वह स्वपन देखना शुरू कर देगा और सोचेगा कि उसकी सफला उसे उस दासता से मुक्त करायेगी जिसमें वह जकड़ा हुआ है। गुप्त रूप से काम करने को विवश हो जाना ही एक ऐसा तथ्य है एकान्तवास और विचारों की संकुलता, सघनता के कारण उसकी स्वाभाविक शक्ति का दुर्बल होना जिस भावावेश में वह कार्य कर रहा है, ये सब ऐसी बातें हैं जो उसके लिए वह प्रयोगशाला सिद्ध होंगी, जिसमें से अंत में जब वह निकलेगा तो पागल के रूप में होगा।

दूसरा प्रकार दार्शनिक प्रकार है। यह भी चन्द्र पर्वत पर मस्तिष्क रेखा के एक आकस्मिक चाप से प्रदर्शित होता है और एक गहन रूप से दार्शनिक निर्मित से पुष्ट होता है। इस स्थिति में सनकी और अन्ततः पागल व्यक्ति मनुष्यता की मुक्ति के मार्ग में अद्भुत होने की ओर रुझान दिखाता है। वह आरंभ से अन्त तक उद्देश्य ठीक ही लिए होता है। किन्तु वह जो भी बिन्दु, सिद्धान्त, विचार या पद्धति अपनाता है उसके मामले में पूरा कट्टर होता है। ऐसे व्यक्ति को सनकीपन के बीच रास्ते का चिन्ह लांघकर पागल हो जाने के लिए केवल कुछ प्रतिकूल परिस्थितियां, असफलताएं, और जनसाधारण की उपेक्षा-भर चाहिए।

अगर उसकी कमजोरी धर्म का विषय है तो वह विवादग्रस्तता वाली कमजोरी नहीं है, बल्कि इसके उलट वही केवल एक ऐसा व्यक्ति है जो स्वर्ग के साम्राज्य का रहस्य जानता है, और सब तो भटके हुए हैं। ऐसा नहीं है कि जब वह वहां पहुंचे तो अकेला ही पहुंचना चाहता है—बल्कि उसे असामान्य अथवा अपवाद स्वरूप बनाने में दूसरों के प्रति उसकी गहन चिन्ता ही है। इस उद्देश्य के लिए वह दिन-रात कार्य करता है, वह अपने को जीवन का आनंद उठाने से काट लेता है, भोजन तक में लिप्त नहीं होता। क्योंकि उसे अपनी इच्छा पूरी करने की अति उत्कट शीघ्रता है, उसका मस्तिष्क अधिक-से-अधिक संतुलन गंवाता जाता है और व्यक्ति पहले से अधिक पागल होता चला जाता है।

स्वभावतया पागल

मस्तिष्क का ठीक से निर्माण न होना इस प्रकार के लिए उत्तरदायी है। इसे हाथ का

अध्ययन करके दो स्पष्ट श्रेणियों में रखा जा सकता है—एक तो घोर मूढ़ की श्रेणी और दूसरी खतरनाक पागल की श्रेणी।

पहली श्रेणी में प्रायः हम एक चौड़ी, ढलुवां मस्तिष्क रेखा देखते हैं जो पूरी तरह से द्वीपों और छोटी महीन रेखाओं से बनी होती है। ऐसी रेखा से तो किसी भी तरह के तर्क और बुद्धिमत्ता की आशा ही नहीं की जा सकती और यह इस बात की परिचायक है कि व्यक्ति अविकसित मस्तिष्क लेकर दुनिया में आया है—चाहे परिणाम में या फिर गुणवत्ता—जो उसके शरीर का उचित नियंत्रण करता, और इसका परिणाम होता है—घोर मूढ़ता।

इस प्रकार के दूसरे विभाजन में मस्तिष्क रेखा एक निरन्तर रेखा होने के स्थान पर हर दिशा को लपकती छोटी लहरदार शाखाओं से बनी होती है। उनमें से अधिकांश जीवन रेखा के भीतर मंगल पर उठती हैं और हाथ की दूसरी ओर दूसरे मंगल तक जाती हैं। इस प्रकार की निर्मिति के साथ नाखून प्रायः छोटे और लाल होते हैं। ऐसा प्रकार किसी अन्य श्रेणी से कहीं अधिक झगड़ालू और खतरनाक पागल का सूचक है। ऐसी स्थिति में यह भी देखा जा सकता है कि अकसर स्वस्थ क्षण भी आते हैं लेकिन ये बहुत कम होते हैं और इन दो अन्तिम श्रेणियों को लेकर मैंने कभी सुधार होते नहीं देखा है।

5. कार्य पद्धति

सबसे पहले मैं अध्येता को परामर्श दूंगा कि वह व्यक्ति के ठीक सामने बैठे ताकि प्रकाश ठीक सीधे उसके हाथों पर पड़े। मेरा परामर्श यह भी है कि पास में किसी तीसरे व्यक्ति को खड़े होने देना या बैठने देना उचित नहीं है क्योंकि अनजाने में ही तीसरा व्यक्ति दोनों का—व्यक्ति का भी और हस्तरेखा शास्त्री का ध्यान बंटा सकता है। हाथों को सफलतापूर्वक पढ़ने के लिए कोई विशेष सामान कतई आवश्यक नहीं है। भारत में सूर्योदय के समय को विशेष महत्व दिया जाता है, लेकिन इसका कारण यह है कि हाथ-पैरों में सुबह के समय रक्त का संचालन अधिक प्रबल रहता है, जिसके फलस्वरूप रेखाएं अधिक आभायुक्त और स्पष्ट होती हैं। व्यक्ति को सीधे अपने सामने बैठाकर अध्येता दोनों हाथों को एक समय ठीक से निरीक्षण के अधीन लाने की बेतहर स्थिति में होता है। निरीक्षण का कार्य आगे बढ़ाते हुए पहले बहुत सावधानी से यह देखना चाहिए कि हाथ किस प्रकार के हैं, क्या उंगलियां हथेली के अनुरूप हैं या अपने-आपमें किसी विशिष्ट श्रेणी में आती हैं, इसके बाद सावधानी से बायां हाथ देखना चाहिए, तब दायें ओर आना चाहिए—यह देखने के लिए कि उसमें क्या-क्या परिवर्धन और परिवर्तन हुए हैं, और दायें को अपने निरीक्षण का आधार बना लेना चाहिए।

हर महत्वपूर्ण विषय—जैसे रोग, मृत्यु, धनहानि, विवाह आदि पर किसी एक या अन्य घटना के घटने का निष्कर्ष निकालने के पूर्व यह देखना चाहिए कि बायां हाथ क्या कह रहा है।

जिस हाथ का आप निरीक्षण कर रहे हैं, उसे दृढ़ता से अपने हाथों में पकड़ें, रेखा या चिन्ह को तब तक दबाते रहें जब तक उनमें रक्त का प्रवाह न आ जाए—इस तरह आप इनके विकास की प्रवृत्तियों को देख सकेंगे।

कुछ कहने से पहले हाथ के हर भाग—पीछे का भाग, सामने का हिस्सा, नाखून, त्वचा, रंग आदि का ठीक से निरीक्षण करें। अंगूठे का परीक्षण पहला पग होना चाहिए, देखें कि अंगूठा कितना लम्बा है, छोटा है या ठीक से विकसित नहीं हुआ है, इच्छाशक्ति वाली पोर दृढ़ है या लचकीली, यह मजबूत है या निर्बल है। तब अपना ध्यान हथेली पर लगाएं। देखें कि क्या हथेली कठोर है, कोमल है या थुलथुली है।

इसके आगे मेरा परामर्श है कि फिर उंगलियों पर ध्यान दें। —हथेली से उनका अनुपात

क्या है, वे लम्बी हैं या छोटी, मोटी हैं या पतली, कुल मिलाकर उनकी श्रेणी निर्धारित करें, किस प्रकार का वे प्रतिनिधित्व कर रही हैं, यदि वे मिश्रित हैं तो अकेली उंगली को अलग-अलग श्रेणी में रखते जाएं। फिर नाखूनों पर ध्यान दें ताकि उनसे मिजाज का पता लगे, स्वभाव, स्वास्थ्य आदि का ज्ञान हो। अन्त में सारे हाथ को सावधानी से परखकर अपना ध्यान पर्वतों पर लायें—देखें कि कौन-सी रेखा को पहले देखा जाए, इसके लिए कोई निर्धारित नियम नहीं है, अच्छी योजना यह है कि स्वास्थ्य रेखा और जीवन रेखा को एक साथ लेकर आरम्भ किया जाए, तब मस्तिष्क रेखा की ओर बढ़ना उचित है, फिर भाग्य रेखा, हृदय रेखा आदि आदि।

जो कुछ कहें ईमानदारी से, सचाई से, तथापि पूरी सावधानी से। आप सीधे से सीधा सत्य कह सकते हैं, किन्तु ऐसा करके अपने परामर्शकर्ता को न तो धक्का पहुंचाएं न दुःख। जैसे आप किसी अत्यन्त नाजुक और बेहतरीन मशीन के साथ सावधान रहकर पेश आते हैं, उसी तरह आपके सामने बैठी मानवता की अत्यन्त उलझी इकाई से पेश आना उचित है। सब बातों से बढ़कर आपकी सहानुभूति से परिपूर्ण होना आवश्यक है। जिस व्यक्ति का हाथ आप देख रहे हैं हर उस व्यक्ति में यथासंभव बाहरी रुचि लें, उसके जीवन में प्रवेश कर जाएं, उसकी भावनाओं में, प्रकृति में गहरे पैठ जाएं। आपकी कुल आकांक्षा कल्याण करने की होनी चाहिए, जो व्यक्ति आपसे राय ले रहा है, उसको कुछ लाभ पहुचाने की। यदि यह भावना आपके कार्य का मूलाधार बन जाए तो यह कार्य आपको न थकायेगा, न दुःख पहुंचायेगा, बल्कि शक्ति देगा। यदि आप मित्रों में मिलें तो उनके मैत्रीभाव के लिए उनके आभारी हों यदि शत्रुओं से मिलें तो बहस करने की खातिर बहस में न पड़ें। अपने कार्य के बारे में सबसे पहले, अपने बारे में सबके बाद में सोचें।

इन बातों से ऊपर इस ज्ञान की खोज में कभी धैर्यहीन न हों, कोई भी भाषा आप एक दिन में नहीं सीख सकते, उसी तरह आपको हस्तरेखा शास्त्री का घंटे भर में ज्ञान हो जाए, ऐसी उम्मींद नहीं करनी चाहिए। यदि आपको यह जितना सोचा था, उससे कठिन लगे तो हताश न हों। ध्यान से इस पर गौर करें—किसी दिल बहलाव की वस्तु के तौर पर नहीं बल्कि ऐसे कार्य के रूप में जिसके लिए विचार की गहराई, शोध का धैर्य और आप जो प्रतिभा इसे प्रदान कर सकते हैं, उस महानत प्रतिभा की आवश्यकता है। यदि हम इसे ठीक-ठीक पढ़ गए तो हमारे हाथ में जीवन के रहस्यों की कुंजी आ जाएगी। इसमें पैतृक नियम निहित हैं, पूर्वजों के पाप, अतीत का कार्य, कार्य का कारण, जो चीजें हो चुकी उनका संतुलन, जो होती हैं उनकी छाया—सब विद्यमान हैं।

इसलिए हमें इस ज्ञान के उचित उपयोग के प्रति सावधान होना अभीष्ट है। हम कार्य में एकाग्र हों और यदि हमें कार्य की सफलता का मुकुट पहनने को मिले तो विनीत रहें। पहले हम अपना निरीक्षण करें तब दूसरों का परीक्षण करें। यदि हम अपराध देखते हैं तो

यह भी देखें कि अपराधी के सामने लोभ क्या था। यदि हम दोष देखते है तो यह भी याद रखें कि हम भी पूर्ण नहीं है।

हम अवश्य सावधान रहें ताकि कही ऐसा न हो विज्ञान की खोज में हम जिसे अपने भीतर समझे बैठे हों उसी से घृणा करने लगें—हममें कुंछ भी नहीं है, कुछ भी सांझा नहीं है, क्योंकि सब कुछ मानवता का उद्देश्य निभाने के लिए है। ऐसा न सोचें कि सत्य कहीं है ही नहीं, क्योंकि हम जानते हैं ही नहीं, या ऐसा भी न सोचें कि चूंकि हमने सूर्य का प्रकाश देखा है तो सूर्य के रहस्यों को हमने मुट्ठी में बन्द कर लिया है। हम विनय पूर्ण रहें ताकि ज्ञान हमें ऊंचा उठाए, हम निरन्तर जिज्ञासु रहें ताकि हम प्राप्ति की ओर बढ़े।

चौथा खण्ड

1. 'विचार चित्र' के यन्त्र और 'मस्तिष्क शक्ति पंजिका'

इस पुस्तक के आरंभिक पृष्ठों में आप पाएंगे कि मैंने इस धारणा की ओर अनेक बार परोक्ष संकेत किए हैं कि मस्तिष्क एक अज्ञात शक्ति का स्फूरण करता है जो शरीर के माध्यम से केवल अपने विकीरण द्वारा शरीर में और शरीर के ऊपर चिन्हों और परिवर्तनों को ही अंकित नहीं करती अपितु वातावरण की वायव्यता के माध्यम से संसार का हर मनुष्य एक-दूसरे से थोड़ा-बहुत संपर्क में रहता और प्रभावित होता है।

वर्षों पूर्व जब मैंने यह विचार व्यक्त किया था तो ऐसा मैंने केवल एबरक्रौम्बी, हर्डर व अन्य वैज्ञानिकों के लेखों के आधार पर ही नहीं किया था, बल्कि मेरे पास ऐसी शक्ति के विद्यमान होने के ठोस प्रमाण थे जो मेरे मित्र जाने-माने फ्रांसीसी विद्वान श्री ई॰ सैवरी द ओदियर्दी द्वारा किये गए प्रयोगों से जुटाए गए थे। इस शक्ति के बारे में लिखने के अनेक वर्ष पूर्व मुझे मालूम था कि मेरे मित्र ने एक उपकरण ईजाद किया है जिसे पेरिस की विज्ञान अकादमी के समक्ष दर्शाया भी जा चुका था जिसमें कोई मजबूत इच्छा शक्ति वाला मनुष्य अपना ध्यान पूरी तरह एकाग्र करके दो से तीन फुट की दूरी से एक सुई को दस अंश के फासले तक हिला सकता था।

यह छोटा यंत्र अपनी शुरूआत की अवस्था में था, और यद्यपि वैज्ञानिक इसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते थे, तथापि ऐसे भी थे जो सोचते थे कि यह यंत्र इतनी पूर्णता तो कभी पायेगा नहीं कि उसे किसी व्यवहारिक उपयोग में लाया जा सके। किन्तु यंत्र के बारे में सोचा और उसे इजाद किया इतनी छोटी-सी शुरूआत करके ही आराम से नहीं बैठ सकता था, और न उससे संतुष्ट ही रह सकता था। उसमें पांच वर्ष तक धीरज पूर्वक कार्य किया और परिश्रम करता रहा, और कई असफलताओं के बाद आखिर उसने सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त की। उसने एक ऐसा उपकरण बना डाला जो शुरू के यंत्र से कहीं बेहतर था और हर मनुष्य को लेकर यह दर्शाया कि मस्तिष्क में विचार की क्रिया क्या है और जो केवल दस अंश तक घूमने के बाजय एक बार में पूरे 360 अंश तक घूम सकता था। उस समय से मेरे मित्रने अपना सारा ध्यान सुई द्वारा ग्रहण किये निरीक्षणों पर लगा दिया जो

उन्हें अलग-अलग भावनाओं और स्वभाव की विभिन्न विशिष्टताओं वाले व्यक्तियों से प्राप्त होते रहें।

सामान्य साधनों से असाध्य माने जाने वाले रोगों की चिकित्सा के लिए उन्होंने अपना जो विद्युत चिकित्सा अस्पताल बनाया, उसमें उन्हें इस एक यंत्र पर विभिन्न स्वभावों और रोगों के प्रभावों की जांच करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ। उनके कार्य का परिणाम उन्हें 'मामलों की निरीक्षण करके' इस योग्य बनाने के रूप में हुआ कि वे कुछ नियम मार्ग दर्शक के रूप में बना सके जो इस यंत्र के संकेतों को जानने में सहायक हुए।

फलतः मुझे भी सौभाग्य मिला कि मैं इस उपकरण से संबंधित अनेक प्रयोगों में प्रोफेसर द' ओदियर्दी की सहायता करूं। अंततः हर तरह के चार्ट तैयार करने और लोगों की दशाओं का लेखा-जोखा रखने के लिए उन्होंने इस यंत्र के उपयोग में अपना साथी बनने को कहा ताकि वे अपने निरीक्षणों का क्षेत्र और दायरा बढ़ा सकें।

सैकड़ों प्रयोगों से जो नोट्स तैयार हुए उन्हें संभाल मैं उस यंत्र को बाण्ड स्ट्रीट स्थित अपने कार्यालय में ले आया। मेरे पास आने वाले विविध प्रकार के लोगों से संबंधित मामलों में एक दिन में तीस-चालीस से भी अधिक बार उस यंत्र का उपयोग किया।

प्रोफेसर साहब ने इस बात का प्रमाण, कि यह यंत्र की सुई मस्तिष्क से विकसीत होने वाली शक्ति से प्रभावित होती थी, उन लोगों के साथ अपने प्रयोगों से दिया जो मस्तिष्क को हानि पहुंचाने और उसे मंद करने वाली औषधियों के प्रभाव से इस यंत्र के पास ले जाए जाते थे। यह इस तरह भी प्रमाणित हुआ कि सारा शरीर भले ही पक्षाघात के अधीन हो, जब तक मस्तिष्क सक्रिय है, यंत्र की सुई पहले ही की तरह कार्य करेगी। उन्होंने यह भी दर्शाया कि जो लोग स्नायु-पेशी औषधियों के नशों के अभ्यस्त हो चुके हैं जो औषधियां वास्तव में रीढ़ की प्रविक्षेपण क्षमता को कम करती हैं—जैस क्लोरोफार्म, पोटाशियम ब्रोमाइड आदि, वे मंत्र की ओर देखकर विक्षेप अथवा अनुक्रमण के रूप में सुई में कम प्रतिक्रिया उत्पन्न कर पाये, और इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि बाह्य विकीरण से प्रकट होने वाली मस्तिष्क शक्ति में ऐसी औषधियों के सेवन से व्याघात उत्पन्न हुआ था इसलिए विचार शक्ति द्वारा उत्पन्न विकीरण के अभाव से पता कि विचार की उत्पत्ति और उसकी गहनता उन औषधियों के सेवन और प्रभाव से क्षरित हो गई थी। केवल नशीली दवाइयों से ही ऐसा प्रभाव उत्पन्न नहीं हुआ, बल्कि किसी भी नशे से यही हुआ, अर्थात पेय अथवा खाद्य के रूप में स्फुरण देने वाले किसी भी पदार्थ की अधिकता से। इस प्रभाव-ग्रहक उपकरण से इस प्रकार मदिरा सेवन और नशे का मति गन्दकारी प्रभाव वैज्ञानिक ढंग से प्रभावित हुआ।

व्यक्ति में विक्षेपक शक्ति में यही कमी जो सुई ने पदर्शित की, क्रोध, हिंसा (दौरे के बाद) और ईर्ष्या, स्पृहा, घृणा (दौरे के दौरान) आदि से भी आयी। जब किसी व्यक्ति की

परीक्षा उसे नापसंद या उसकी घृणा के साथ व्यक्ति की मौजूदगी में की गई तो उपकरण ने स्तर में कमी दर्शायी, जबकि उसके प्रिय या पसंद के व्यक्ति की मौजूदगी में परीक्षा होने पर सुई ने जो स्तर प्रकट किया, वह पहले से अधिक हो गया।

प्रोफेसर ने यह भी दर्शाया कि किसी मूढ़ में उपकरण की सूई में विक्षेप लाने की कोई क्षमता नहीं थी, जबकि मस्तिष्क शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति की दो या बीस फुट की दूरी से फेंकी एक नजर ही उपकरण में गति अथवा विक्षेप लाने को पर्याप्त थी।

यंत्र के आविष्कर्ता और मैंने मिलकर जो अनेक दिलचस्प प्रयोग किये, उनमें से एक का वर्णन एक पत्रिका के लेख 'विश्व का सबसे अद्भुत यंत्र' में किया गया था। यह कुछ इस तरह था कि एक बार सज्जन यंत्र के सामने खड़े उसकी क्रिया की आलोचना कर रहे थे और उसकी शक्ति को समझने-समझाने की चेष्टा कर रहे थे। लगभग उसी क्षण कुछ अन्य लोग कमरे में प्रविष्ट हुए और सरकारी बातचीत में उनमें से किसी ने दक्षिण अफ्रीका की कम्पनी के शेयर भाव अचानक गिरने की सूचना दी। किसी को यह मालूम नहीं था कि उस यंत्र को निहारने वाले उन महाशय ने हजारों पौंड मूल्य के शेयर उस कम्पनी के खरीद रखे थे, लेकिन जिस घड़ी शेयर भाव गिरने का तथ्य बताया गया, उस सज्जन के मानसिक और भाव जगत ने उस यंत्र की सुई को तेजी से घुमा दिया और उस दिन इस यंत्र द्वारा रिकार्ड किए तथ्यों में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये गए।

एक विचित्र प्रयोग यह था जिससे पता लगाया जा सकता था कि दो व्यक्तियों में से अधिक प्रेम किसके मन में है। इस मामले में दोनों व्यक्तियों पर अलग-अलग परीक्षा की गई और यंत्र ने जो गति दर्शायी उससे चार्ट तैयार किए गए। उनकी दोबार परीक्षा करने के पूर्व उन दोनों को आधे घंटे के लिए एक साथ रखा गया। दोनों में जिसका प्रेम अधिक सबल था, उसने यंत्र पर अधिक प्रभाव प्रदर्शित किया, जबकि दूसरे की शक्ति में सुई पर प्रभाव के रूप में कुछ कमी आ गयी थी, जो थोड़ी बहुत व्यक्ति की उपस्थिति से उत्पन्न प्रभाव के रूप में प्रदर्शित हुई।

उस यंत्र की सबसे अद्भुत बात यह थी कि किसी भी प्रकार का शारीरिक सम्पर्क बिल्कुल आवश्यक नहीं था। प्रयोग की नियमित पद्धति में परीक्षा के अधीन आने वाले व्यक्ति को यंत्र के एक या दो फुट के दायरे में खड़ा-भर होना था, और यदि वातावरण पूरी तरह साफ और शुष्क हो तो अधिक प्रबल इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति दस या बीस फुट की दूरी से भी सुई पर प्रभाव डाल सकता है।

यंत्र चालक किसी प्रकार के चुम्बक काम में नहीं लाता था, न ही सुई से किसी प्रकार का विद्युतीय संपर्क था, एक अज्ञात शक्ति को छोड़कर—चाहे उसे योगमाया शक्ति कहा जाए, चाहे चुम्बकीयता या फिर मस्तिष्क द्वारा शरीर के माध्यम से विकीरत होने वाली कोई और भी सूक्ष्म शक्ति जो वातावरण से होकर यंत्र तक जा पहुंचती थी। लोगों ने इसकी

हर संभव तरीके से परीक्षा कर डाली। घोर अविश्वासियों ने यह साबित करने की हरचंद कोशिश की कि सुई किसी अन्य साधन से चलती थी, किन्तु अन्त में सभी ने यह स्वीकार किया कि सुई कि क्रिया परीक्षाधीन व्यक्ति से निःसृत शक्ति के कारण ही थी।

इंग्लैंड चर्च के प्रमुख पादरी ने इस यंत्र की अनेक विध परीक्षाओं को देखकर कहा, "इस तरह का यंत्र न केवल पदार्थ पर मन के प्रभाव का विश्वास दिलाएगा, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण यह है कि मन के मन पर प्रभाव का भरोसा करायेगा, क्योंकि यदि हमारे विचारों का विकीरण धातु की इस सुई को प्रभावित कर सकता है तो इससे कहीं अधिक क्या हम अपने इर्द-गिर्द के विचारों, सोच और जीवन को प्रभावित नहीं कर सकते ?"

निष्कर्ष, रूप में यह कहा जा सकता है कि क्या जिस शक्ति ने इस सुई को घुमाया, वही वह शक्ति नहीं है जो अपनी निरन्तर क्रिया में हमें घेरने वाले स्नायुओं के माध्यम से हाथों पर चिन्ह अंकित करती है ? हम नहीं जानते, और शायद कभी भी न पायें कि यह अदृष्ट शक्ति अतीत के कृत्यों और भविष्य के स्वप्नों का लेखन कैसे कर लेती है। तथापि इस कारा का बन्दी अपने चारों ओर की शिलाओं पर अपना नाम और अपनी गाथा लिखता रहेगा, कोई पढ़े या न पढ़े, स्थिति जो भी हो। तब क्या शरीर की कारा में जकड़ी आत्मा अपनी बन्दीगृह की मांस से बनी दीवारों पर अपने व्यतीत अनुभवों, भावी आशाओं और किसी दिन सत्य हो जाने वाले कार्यों को न लिखे ? क्योंकि यदि आत्मा कहीं है तो एक भाव होने की बदौलत वह सभी चीजों की साक्षी है—बीती खुशियों की वर्तमान के दुःखों की, भविष्य की—भविष्य जो भी हो।

पांचवा खण्ड

1. कुछ दिलचस्प हाथ

महामहिषी इन्फैंटा यूलैलिया का हाथ

स्पेन की महामहिषी इन्फैंटा यूलैलिया का जो हाथ चित्र-1 में दिखाया गया है वह एक अद्‌भुत हाथ है, यदि केवल हाथ में अंकित रेखाओं की संख्या की दृष्टि से देखें, तब भी इनमें से अधिकांश तो अपने अर्थ में परस्पर विरोधी हैं, जैसाकि उस महिला का अपना स्वभाव ही था और जो इस रेखाचित्र का विषय है।

इन्फैंटा यूलैलिया एक अन्तन्त चुतर, प्रतिभावान् महिला थी जो लगभग कोई भी कार्य कर सकती थी, किन्तु जिसने कुछ भी अपवाद रूप में भी ठीक से नहीं किया।

स्पेन के भूतपूर्व सम्राट् ऐल्फोन्सी तेरह की चाची येलैलिया की स्थिति यूरोप की सर्वाधिक महत्वपूर्ण दरबार में बहुत ऊंची थी। तथापि उसने अपने को प्राप्त अनेक महान् अवसरों से दर-किनार कर लिया, अपने अनेक दुःसाहसी कार्यों से अपनी हैसियत को अवमानित किया, विवाह को असफल बनाया और अपनी सम्पत्ति का अधिकांश भाग गंवा दिया।

वह अत्यन्त सुन्दर चित्र बनाती थी, लेखिका और संगीतकार के रूप में पर्याप्त प्रतिभाशालिनी थी, बन्दूक चला सकती थी, शिकारी कुत्तों के पीछे घोड़े पर दोड़ सकती थी; जैसा कि कम महिलाएं कर सकती हैं, फिर उसने व्यावहारिक अर्थों में कोई भी उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल नहीं की।

मैंने इस हाथ को सूर्य रेखा के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है जो कि आरम्भ में तो सुविकसित रूप से अंकित है, फिर आधी हथेली के बाद पार जा रही है और शनि के पर्वत पर समाप्त हो रही है, जो किसी भी हाथ पर एक अत्यन्त प्रतिकूल चिन्ह है, विशेषतः यदि भाग्य रेखा समाप्ति के पहले ही विखर जाने और अपनी शक्ति गंवा देने को प्रकट हो रही हो।

अध्येता को ध्यान देने हेतु अन्य बिन्दुओं में से हैं—अपने आरम्भ के साथ ही हृदय रेखा की निम्नगामी वक्रता जो एक सिरे पर है और गुरु के पर्वत के नीचे है. स्वयं हृदय रेखा की



प्लेट—1
हर हाइनेस इन्फेन्टा ईयूलालिया का हाथ



प्लेट—2
जनरल सरबुलर का दाहिना हाथ

सामान्य आकृति, अनियमित और टूटा हुआ शुक्र वलय, अनामिका के आधार पर नीचे को गिरती विवाह रेखाएं। विशिष्ट रूप से अंकित मस्तिष्क रेखा भी देखें जिसके मध्य में एक द्वीप है जिसका एक सिरा नक्षत्र के साथ समाप्त हो रहा है और सो भी मगंल के दूसरे पर्वत पर जो कि मानसिक प्रतिभा का द्योतक चिन्ह तो है, किन्तु वह प्रतिभा सिलसिलेवार नहीं है।

इन्फैंटा यूलैलिया का व्यक्तित्व अद्भुत रूप से चुम्बकीय आकर्षण लिए था, वह अतिथि सत्कार में प्रसन्न मुद्रा अपनाये रहती थी, यूरोप की हर भाषा धारा प्रवाह बोल सकती थी, आये लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सकती थी, फिर भी असंख्या शत्रु बनाये हुए थी (मंगल के पर्वत से गुरु के नीचे काटती हुई रेखाएं देखिए।)

इस हाथ का निरीक्षण करते हुए ध्यान में रखने की बात यह है कि ऐसी रेखाओं की संख्या बहुत अधिक है जिनमें विरोधी अथवा अर्थ को समाप्त कर देने की प्रवृत्ति है। इससे यह नियम पुष्ट होता है कि व्यक्ति उस स्थिति में अधिक सफल निकलते हैं, जब प्रमुख रेखाएं स्पष्ट और स्वच्छ रूप से अंकित होती हैं और बहुसंख्या छोटे-मोटे चिन्ह काटते हुए उन्हें निष्क्रिया नहीं कर रहे होते।

जनरल सर रेडवर्स बुलर विक्टोरिया क्रास, का हाथ

एक ही हाथ पर दो मस्तिष्क रेखाओं की उपस्थिति का अनूठा उदाहरण है जनरल सर रेडवर्स बुलर का हाथ, (चित्र-2)।

एक तो उस सीधी मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा में है जो हथेली के आर-पार गई है। दूसरी ऊपर गुरु पर है।

जीवन रेखा से आने वाली रेखाएं जो तर्जनी के आधार पर हैं, वे भी दिलचस्पी जगाने वाली हैं।

अपने-आप में हाथ लम्बा है, मानसिक कोटि का है, और अंगूठा साफ और स्पष्ट अलग दिखाई दे रहा है जो इच्छाशक्ति और संकल्प का साकार रूप है।

चौथी उंगली यानी कनिष्ठा इस हाथ का एक मात्र भाग है जो ठीक से विकसित नहीं, लेकिन सर रेडवर्स बुलर भाषा पर विशेष अधिकार वाले अथवा वाक्कला संपन्न व्यक्ति भी तो नहीं थे। इसी कारण जब कभी ऐसा क्षण आता कि वाणी एक मूल्यवान निधि सिद्ध होकर अपनी रक्षा कर पाती तो अपने को बचा भी नहीं सकते थे। कनिष्ठा जिन बातों का सूचक है, मैंने उनके बारे में खंड 1 के अध्याय 6 में लिखा भी है।

भाग्य और सूर्य रेखाएं भी उस बिन्दु तक बहुत अच्छी हैं जहां एक रेखा सूर्य रेखा को काटकर शनि की ओर जाती दिखाई दे रही है। यह किसी भी हाथ पर कोई अच्छा लक्षण नहीं है, क्योंकि यह लगभग उस समय जब यह चिन्ह सूर्य रेखा को काट रहा, भाग्य के

विपरीत होने का सूचक है।

जनरल सर रेडवर्स बुलर की अपनी सेनाओं को संगठित करने, उन पर अधिकार जमाये रखने की शक्ति अद्‌भुत थी और जब भी कभी उन्हें संगठित करने की अपनी प्रतिभा का वे उपयोग करते थे तो गुरु से अपनी मस्तिष्क रेखा द्वारा प्रदत्त उनका अधिकार दिखाई पड़ता था।

उन व्यक्तियों में कुछ परस्पर विरोधी, यहां तक कि दुर्भाग्यपूर्ण भी होता है जिनके हाथ में हथेली को पार करने वाली हृदय और मस्तिष्क रेखाएं सम्मिलत होती हैं। इन लोगों में एक प्रकार का 'एकलीक' वाला मस्तिष्क होता है कि वे दूसरों की नहीं न किसी अन्य की राय मानने को तैयार होते हैं, अपनी ही कहते-सुनते हैं। किसी एक विषय पर ध्यान एकाग्र करने की अपनी अत्यधिक शक्ति के कारण वे अत्यन्त महत्वपूर्ण सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु ऐसा तभी तक है जब तक उसकी सूर्य रेखा पर कोई चिन्ह शनि के पर्वत की ओर झुकता या मुड़ता हुआ नहीं दीखता। यदि ऐसा हो तो उनकी योजनाएं अचानक गलत साबित होती हैं और उन्हें आमतौर पर किसी बड़े संकट का सामना करना पड़ जाता है।

मैंनि तब सर रेडवर्स बुलर को यह बताया कि उन के आगामी जीवन में एक और अभियान नियत है जो उन्हें निंदा और आलोचना का भागी बनायेगा, तो उन्होंनें अविश्वास व्यक्त किया।

ऐसा तब सचमुच घट गया तब बोअर युद्ध के मुख्य सेना नायक के रूप में 'स्फीअन कौप' दुर्घटना और मौडर नदी की तबाही ही सामने आयी और युद्ध कार्यालय में उन्हें वापिस बुलाया गया तथा परिनिन्दित किया गया।

सर आर्थर सलिवान का हाथ

सर आर्थर सलिवान ने जो मौलिक और मधुर संगीत रचनाएं 'गिल्बर्ट और सलिवान संगीतिकाओं' के लिए कीं उनके लिए उन्हें सदा याद रखा जाएगा। चित्र-3 में उनके दायें हाथ का अंकन मस्तिष्क रेखा को जीवन रेखा से अलग होता हुआ, लम्बा और धीरे से चन्द्र पर्वत के मध्य को मुड़ता हुआ दिखा रहा है। मस्तिष्क और जीवन रेखाओं के बीच की जगह उनकी रचनाओं के नाटकीय गुण की सूचक है, जबकि चन्द्र पर्वत में मुड़कर जाती मस्तिष्क रेखा उनकी महान कल्पना-शक्ति और मौलिकता की सूचना दे रही है।

शुक्र पर्वत के इतना निकट स्थित भाग्य रेखा उनके आरंभिक जीवन की कठिनाइयों को एकदम ठीक-ठीक दर्शा रही है जब उन्होंने अपने परिवार व संबंधियों की सहायता करने की खातिर उनके बलिदान किये। दूसरी या भीतरी भाग्य रेखा जो जीवन रेखा के की ओर से आरंभ हो रही है और ऊपर उठकर गुरु पर्वत में जा रही है अपने-आप में



प्लेट—3
सर आर्थर सलीवन का दाहिना हाथ

सफल आकांक्षा का वचन दे रही है, जिसका अनुगमन बाद में मुख्य भाग्य रेखा भी कर रही है और गुरु पर्वत की ही ओर मुड़ रही है।

उनके कार्य को जनता से मिली मान्यता के बावजूद इस हाथ पर सूर्य रेखाएं मुश्किल से ही नजर आ रही हैं, लेकिन यह याद रखने की बात है कि यह महान संगीतकार स्वभाव से प्रसन्न प्रफुल्ल व्यक्ति नहीं था। उन्हें अपनी ख्याति या महिमा की तो कोई चिन्ता नहीं थी, न उनके कार्य से उन्हें कोई बड़ी धनराशि या सांसारिक संपत्ति आदि ही प्राप्त हुई।

विलियम ह्वाइटले का हाथ

विलियम व्हाइटले इंग्लैंड के महान व्यापारियों में से एक थे जिन्हें 'विश्व-पूर्तिकर्त्ता' कहा जाता था क्योंकि उनकी कंपनी में सुई से लेकर लड़ाई के जहाज तक सब कुछ उपलब्ध था। उनका हाथ चित्र-4, ऐसा हाथ है जो 'व्यपारी हाथ' का बहुत अच्छा उदाहरण है।

यह वर्गाकार प्रकार का हाथ है, जिसकी उंगलियां काफी लम्बी हैं और बहुत दिमाग वाली मस्तिष्क रेखा है, जो जीवन रेखा से निकट से जुड़ी है। विलियम व्हाइटले के व्यक्तित्व की 'बनावट' में कुछ भी विवेकहीन या आवेगयुक्त नहीं था, वे अपनी सावधानी के लिए जाने जाते थे, और साथ ही साथ किसी भी आपत्काल के लिए सदैव तैयार रहते थे।

इस हाथ पर सूर्य और भाग्य रेखाएं बहुत अच्छी तरह अंकित हैं। भाग्य रेखा के केन्द्र से उठती हुई एक बहुत विचित्र रेखा है जो गुरु के पर्वत के आधार की ओर जा रही है लेकिन लगता है जिसे मंगल से सूर्य की ओर जा रही एक रेखा आरपार काट रही है। ऐसा उस समय हुआ है जब वे उस आयु में पहुंच गए कि उनके कथित अवैध पुत्र ने उनके कार्यालय में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

जब मैंने उनके हाथ की छाप ली तो उन्हें हिंसापूर्ण मृत्यु के खतरे से आगाह किया था।

उन्होंने बड़ी शान्ति से पूछा था, "यह खतरा किसनी दूर है ?"

मैंने उत्तर दिया था, "अब से लगभग तेरह वर्ष बाद।"

और तेरह वर्ष बाद जब वे अपने पूरी तरह से सफल व्यावसायिक जीवन के शिखर पर थे तो गोली मार कर उनकी हत्या की गई।

जोसेफ चैम्बरलेन और ऑस्टिन चैम्बरलेन का हाथ

चित्र 5 और चित्र 6 में सुरक्षित में दो दायें हाथ हथेलियों द्वारा बतायी जाने वाली पैतृक विरासत के अच्छे उदाहरण हैं। यह देखा जा सकता है कि हाथ का आकार पिता और पुत्र में एक-सा है जबकि रेखाएं भी बहुत कुछ समान हैं!



प्लेट—4
विलियम व्हिटले का दाहिना हाथ



प्लेट—5
जोसेफ चैम्बरलेन, एम० पी०



प्लेट—6
सर अस्टिन चैम्बरलेन

लोकसभा के श्री चैम्बरलेन के निजी कक्ष में मैंने ये दोनों छाप ली थीं। श्री चैम्बरलेन मेरी इस भविष्यवाणी में गहरी रुचि ले रहे थे के उनका पुत्र ऑस्टिन की नियति में उनके जैसा राजनीतिक जीवन ही निबद्ध है जैसा कि आगे चलकर हुआ भी।

यह सभी को ज्ञात है कि जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, ऑस्टिन चैम्बरलैन भी सरकारी सेवा में एक-एक करके उन्हीं पदों पर आसीन होते रहे जिन पर उनके पिता रहे थे। उसी आयु में वे भी संसद में गए और उसी तरह पोस्टमास्टर जनरल, राजकोष के चांसलर लोकसभा के अध्यक्ष के पदों पर रहे और अन्ततः युद्धोपरान्त लोकार्नो शान्ति सभा के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाओं के लिए शाही सम्मान प्राप्त किया।

इससे बढ़कर उन्हें भी उसी रोग का सामना करना पड़ा, जिससे उनके समान्य पिता ग्रस्त हो चुके थे, सो भी जीवन के उन्हीं चरणों में, यहां तक की गम्भीर रूस से नर्वस ब्रेकडाउन भी हुआ जिसके कारण लोकजीवन से उन्हें संन्यास लेना पड़ा। (जीवन रेखा पर आक्रमण करती स्वास्थ्य रेखा देखें), जिससे उनके पिता को तिरसठ और पैंसठ वर्ष की आयु में पक्षाघात हुआ।

स्वयं कीरो का हाथ

चित्र- 7 में मैंने 'दोहरी मस्तिष्क रेखा' के नाम से जाने जाते चिन्ह के उदाहरण के रूप में स्वयं अपने हाथ की छाप प्रस्तुत की।

इस पुस्तक के पिछले पृष्ठों (अध्याय-7) में कह आया हूं कि 'दोहरी मस्तिष्क रेखा' बहुत कम देखने में आती है। जो स्वभाव ये दोनों मस्तिष्क रेखाएं प्रकट करती हैं, यह एक का दूसरी से स्पष्ट विरोधाभास है। उदाहरण के लिए, नीचेवाली रेखा, जो जीवन रेखा से निकट जुड़ी है अत्यन्त संवेदनशील, कलात्मक और कल्पनाशील मानसिकता की परिचायक है।

ऊपर वाली रेखा इसके विपरीत विशेषताओं का निदर्शन करती है। उदाहरणार्थ शुक्र के पर्वत पर उठती हुई और लगभग पूरी हथेली पार करके बढ़ती हुई यह रेखा आत्मविश्वास, आकांक्षा, दूसरों पर छा जाने की क्षमता और सधे दिमाग वाली व्यवहारिक जीवन दृष्टि की सूचक है।

एक ही व्यक्ति में इस प्रकार की मानसिक विरोधाभास होने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, लेकिन मेरे अपने हाथ की छाप इन कथनों का अच्छा उदाहरण है।

मेरे बायें हाथ पर ऊपर वाली मस्तिष्क रेखा का कोई नामोनिशान नहीं है—केवल नीचे वाली रेखा दिखाई देती है, और यह एक विचित्र तथ्य है कि ऊपर वाली मस्तिष्क रेखा मेरे दायें हाथ पर दीख पड़ने योग्य हुई जब मैं लगभग तीस वर्ष का था।

अपने जीवन के इस काल में परिस्थितियां मुझे विश्व के सम्मुख एक अध्यापक और व्याख्याता के रूप में ले आयीं। इससे मैं इस बात के लिए विवश हुआ कि नीचे वाली



प्लेट—7
कीरो का हाथ (CHEIRO)



प्लेट—8
शिशु का हाथ

मस्तिष्क रेखा से प्रदर्शित अपनी अत्यन्त संवेदनशीलता पर नियंत्रण के लिए बड़ा प्रयत्न करुं, जिसके परिणाम स्वरूप ऊपर वाली रेखा विकसित होनी शुरू हुई और कुछ ही वर्षों में मेरे दायें हाथ पर आधिकारिक रेखा बन गयी।

मैं ऐसा भी कह आया हूं कि किन-किन मामलों में 'दोहरी मस्तिष्क रेखा' देखने को मिलती है, उनमें ऐसी रेखाओं के हाथ वाले व्यक्ति 'दोहरा जीवन' जीने की प्रवृत्ति रखते हैं, जो एक या किसी दूसरे रूप में सामने आता है।

मेरे खुद के मामले में यह बात अद्भुत रूप से सत्य सिद्ध हुई, क्योंकि तीस वर्ष से अधिक से लोगों का एक वर्ग मेरे उपनाम 'कीरो' से ही जानता है जबकि एक अन्य वर्ग मुझे मेरे वास्तविक नाम से जानता है।

मैं यहां यह भी कहूंगा कि मेरे स्वभाव के अधिक संवेदनशील पक्ष के प्रभाव के कारण मैं अपनी भावनाओं को धार्मिक और भावनापरक दोनों तरह की कविता लिखकर व्यक्त करता रहा हूँ, जबकि इसके साथ ही साथ दूसरा पक्ष व्याख्यानकर्त्ता के रूप में जनता के सामने मंच पर उपस्थित होने में व्यस्त रहा है, पहले युद्ध संवाददाता के तौर पर, बाद में लंदन और पेरिस में समाचार पत्र के सम्पादक के रूप में।

ये 'दोहरी मस्तिष्क रेखाएं' मेरे दायें हाथ की इस पुस्तक में प्रस्तुत छाप के चित्र में बहुत स्पष्ट देखी जा सकती है।

चौबीस घंटे की आयुवाले बच्चे का हाथ

इस बच्चे के जन्म के चौबीस घंटे बाद ही मैंने उसके दायें हाथ की छाप ली थी। बहुत छोटे बच्चों के हाथों की छाप लेना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, क्योंकि त्वचा बहुत कोमल और लचीली होती है, और छोटे बच्चे स्थिर भी नहीं रह सकते।

इस मामले में चित्र-8 को लेकर मैं बहुत सफल रहा, और रेखाएं भी काफी साफतौर पर दिखाई दे रही हैं। मैंने यह छाप बहुत वर्ष पूर्व ली थी, और वह बालक अब तो युवक हो चुका है। यह व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत सफल हुआ है (शायद ऊपरवाली मस्तिष्क रेखा के कारण जो हथेली के पार सीधी चली गयी है।

मदाम सारा बर्नहर्ट का हाथ

इस छाप (चित्र-9) के बारे में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि भाग्य और सूर्य रेखाएं जो जीवन में काफी शुरू में आरंभ हो रही हैं, लगभग कलाई से शुरू हो रही है, जीवन के बाद के वर्षों में भी एक दूसरी के समानान्तर ही चलती चली गई है।

'सारा महान' ने अपना नाटकीय जीवन सोलह वर्ष की आयु में आरंभ किया था। अपनी अद्भुत प्रतिमा के बावजूद उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, और यह दौर तब तक चला जब लगभग उसके छब्बीसवें वर्ष में दो भाग्य रेखाएं उसके हाथ पर साथ-साथ आनी नजर आने लगीं हैं। इस तिथि से आगे उसकी ख्याति और नाम दुनिया भर में फैल गया।



प्लेट—9
मैडम सारा बर्न हार्ट

मस्तिष्क रेखा पूरी तरह स्पष्ट है, मानो पैमाना रखकर खींची गई हो, और इसके तथा जीवन रेखा के बीच खुली जगह उसकी नाटकीय क्षमता और मनोवेगपूर्ण प्रकृति की द्योतक है, जिसकी ओर मैंने दूसरे खंड के अध्याय 7 में ध्यान आकर्षित किया था।

यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि छोटी रेखाओं की अधिक संख्या है जो जीवन रेखा से ऊपर की दिशा में प्रक्षेपित की गई जैसी लग रही है। इन क्षणों में यह उस विशेषता की ओर इंगित कर रही है। जिसे 'ऊर्जा स्फुरण' कहा जा सकता है।

ये उस स्थिति में अच्छा लक्षण नहीं है जब गहन रूप से अंकित स्वास्थ्य रेखा बुध के पर्वत से जीवन पर आक्रमण कर रही हो। मदाम बर्नहार्ट के मामले में स्वास्थ्य रेखा तो है ही नहीं, वह तो ऐसे लग रही है कि उसके आरंभिक वर्षों के बाद मानों वह रुक गयी है या धुंधला गई है। जैसा कि सर्वविदित है, इस महान अभिनेत्री का शारीरिक स्वास्थ्य उसकी मध्य आयु बीत जाने के बाद अत्यन्त मजबूत था, जो उसके जीवन के अन्तिम वर्षों तक उसी प्रकार चला।

मदाम बर्नहार्ट का जन्म पेरिस में 22 अक्तूबर, 1845 को हुआ था और मृत्यु भी पेरिस में ही 26 मार्च, 1923 को अठहत्तर वर्ष की आयु में हुई।

प्रसिद्ध आस्ट्रेलियाई गायिका डेम मेल्बा का दायां हाथ

यह देखा जा सकता है कि मस्तिष्क रेखा (चित्र 10) और जीवन रेखा अलग-अलग हैं और दोनों के बीच रिक्त स्थान है, लगभग सारा बर्नहार्ट के हाथ के समान यह गुरु के पर्वत के आधार पर भी उठ रही है। जिससे महान अकांक्षा की विशेषताएं प्राप्त होती हैं।

खंड-2 के अध्याय 5 में, जीवन रेखा का विश्लेषण करते हुए मैंने लिखा था—"जब जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच मद्धिम फासला हो तो व्यक्ति अपनी योजनाओं और विचारों को क्रियान्वित करने के लिए अधिक स्वतंत्र होता है। इससे ऊर्जा और आगे बढ़ने की भावना का परिचय भी मिलता है।" मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा के बीच रिक्त स्थान देखा जा सकता है जो अधिक चौड़ा न होने की स्थिति में लाभकारी है, जब मद्धिम हो तो यह अद्‌भुत ऊर्जा और आत्मविश्वास का सूचक है और वकीलों, अभिनेताओं तथा व्याखयाताओं आदि के लिए उपयोगी चिन्ह है।"

जनजीवन जीने की अपनी हैसियत में डेम मेल्बा में वे सभी गुण थे जो उसके लिए अनुकूल थे। उसके हाथ में दोनों ही रेखाएं—सूर्य और भाग्य रेखाएं भी तीव्र रूप से अंकित हैं, विशेषतः जैसा कि स्पष्ट है कि सूर्य रेखा अपने पर्वत के आधार पर त्रिकोण के रूप में बनकर आ रही है।

किसी व्यक्ति की अंतिम रूप से सफलता का अनुमान लगाने के लिए हमेशा समझदारी



प्लेट—10
डेम मेल्बा (आस्ट्रेलिया की प्रसिद्ध गायिका)

इसी में है कि देखा जाए कि भाग्य रेखा और सूर्य रेखा एक-दूसरे के बराबर प्रकट हो रही है या नहीं।

लगभग हाथ के मध्य में नजर आने वाली 'दोहरी जीवन रेखा' से डेम मेल्बा को अत्यधिक शक्ति प्राप्त हुई और इसके यात्रा रेखा की ओर बाहर जाने से जो चन्द्र की ओर गति कर रही है, लगभग निरन्तर लम्बी यात्राओं का निर्णय हुआ जो विश्व के एक कोने से दूसरे तक थीं, जो कि इस अद्‌भुत महिला के जीवन का बड़ा हिस्सा थीं।

डेम मेल्बा ने न्यूयार्क में मुझसे परामर्श किया था और मेरी विजिटर बुक में लिखा था, 'कीरो, आप अद्‌भुत हैं, इससे अधिक मैं और क्या कहूं ? नेली मेल्बा।"

लार्ड लिटन का हाथ

सर फ्रेडरिक लिटन, जो बाद में लार्ड लिटन बने, उस समय रायल अकादमी के अध्यक्ष चुने ही गए थे, जब उन्होंने मुझे अपने हाथ की छाप दी जो चित्र-11 में प्रदर्शित है।

एक पुरुष के हाथ के रूप में यह लगभग एक पूर्णता लिए उच्च कोटि का उदाहरण है, जिसे 'शकुं आकार या कलात्मक' हाथ कहा जाता है जिसका वर्णन मैंने खंड 1 के अध्याय-6 में किया है। किन्तु लार्ड लिटन के मामले में उनके हाथ दृढ़ और लचकीले हैं, जो उन्हें आराम और समृद्धि के जीवन के प्रति अपने सहज प्रेम को नियंत्रण में रखने की इच्छाशक्ति और क्षमता देते थे। इस प्रकार की प्रमुख विशेषता उनका कलात्मक स्वभाव, उनके सुन्दर स्टूडियो और घर में देखा जा सकता था, जहां वे एक अंग्रेज की बजाय एक महल में फारस देश के शहजादे की तरह अधिक रहते नजर आते थे।

कलाई से लेकर अनामिका तक सूर्य रेखा बहुत बढ़िया है। इससे उन्हें अपने जीवन के आरंभ से ही महिमा और ख्याति मिली जो आसानी से ही उन्हें प्राप्त हो गई।

लार्ड लिटन अपनी कला के दृष्टिकोण से हाथों का अध्ययन करते थे और अपने सभी चित्रों में उन्होंने उनके आकारों और अभिव्यक्तियों पर पर्याप्त बल दिया है।

मार्क ट्वेल का हाथ

मार्क ट्वेल का हाथ, चित्र-12, उतना स्पष्ट नहीं छपा है, जितना कि स्वागत योग्य होता। यह छाप धूम्रपत्र के माध्यम से ली गई थी, जिस पद्धति को मैंने अपने आरंभिक जीवन में अपनाया था, बाद में मैंने एक अन्य पद्धति को चुना जिसका वर्णन मैं आगे के पृष्ठों में करुंगा।

अमेरिका के इस महान हास्य लेखक के दायें हाथ की छाप में देखने योग्य सबसे अद्‌भुत बात यह है कि मस्तिष्क रेखा हथेली के आरपार लगभग सधी हुई अंकित है। यह विशेषता उन लोगों के हाथों में मिलती है जो उनमें अपने लिए रुचि जगा लें।



प्लेट—11
लार्ड लिटन



प्लेट—12
लेखक मार्कट्वेन

ये विशेष हुनर मार्क ट्वेन में बहुत स्पष्ट रूप से था, जो कि उनकी रचनाओं में अत्यन्त मुखर होकर आया है। किसी भी अर्थ में वे 'तत्वदर्शी' तो नहीं थे। वे कुछ थे तो कट्टर संदेहशील व्यक्ति थे, और उन्हें अपने विचारों और दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए निश्चित रूप से तथ्यों की आवश्यकता रहती थी।

जब वे मुझसे मिलने आये तो मुझे नहीं पता था, वे कौन हैं।

जब उनके हाथों की छाप ले रहा था तो वे बोले, "अतीत अपना चिन्ह छोड़ जाए, यह स्वीकार करता हूं, और यह भी कि व्यक्ति का चरित्र अपने छोटे से छोटे व्यक्त रंग में भी वर्णन किया जा सके।

"मैं कुल इतने पर ही विश्वास कर सकता हूं; लेकिन जो बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती वह यह है कि भविष्य का पूर्वाभास तक भी कैसे हो सकता है ?"

उनके तर्क का उत्तर देने के लिए मैंने पैतृक विरासत का प्रश्न उठाया। मैंने उन्हें एक महिला के बायें और दायें हाथ और उसके पांच बच्चों के हाथ की छाप दिखाई और तब हम उनमें से एक बच्चे पर आये जिसके दायें हाथ पर अंकित चिन्ह काफी कुछ मां के दायें हाथ की रेखाओं से मिलते-जुलते थे।

मैंने कहा, "इस मामले में आप स्वयं ही देख सकते हैं और निगरानी रख सकते हैं कि इस बच्चे के जीवन के हर भाग में तिथियां तक पूरी तरह मां के जीवन की घटनाओं की भांति दोहरायी जाएंगी, जबकि दोनों की आयु में बीस वर्ष का अन्तराल है।"

मैंने अपनी बात इस प्रकार समाप्त की, "अब देखिए, जिस व्यक्ति को मां के जीवन की घटनाओं की जानकारी हो और वह देखता है, वही चिन्ह बच्ची के हाथ पर अंकित हुए हैं तो वह उसकी छः वर्ष की ही आयु में उस बच्ची के भाग्य में जो घटनाएं घटनी हैं, उनकी भविष्यवाणी कर सकता है।"

इससे मेरे पास आये मार्क ट्वेन की रुचि जागी और उन्होंने विभिन्न हाथों की छापों को लेकर टिप्पणियां तैयार कीं। उन्हें यह तथ्य विशेष रूप से बांध गया कि मां और बेटी की अंगूठों की पोरों की त्वचा में अंकित वृत्त तक बहुत कुछ समान थे।

जब वे जाने लगे तो उन्होंने बताया कि वे हैं कौन, और कहां इस स्थिति में हास्यजनक बात यह है कि जब मैं यहां आया था तो मुझे लगता था कि मैं अपनी मूर्खता में कुछ पैसे गंवाने जा रहा हूं, लेकिन मुझे एक कहानी के लिए विषय मिल गया है, जिसके बारे में मुझे पक्का विश्वास है कि वह बहुत लोकप्रिय होगी।"

कुछ समय बाद उन्होंने 'पद्द' न हेड विल्सन' नामक रचना प्रकाशित की जो अंगूठों के चिन्हों के विषय पर थी और जिसने भारी सफलता प्राप्त की।

जाने के पहले उन्होंने निम्नलिखित पंक्तियां मेरी विजिटर बुक में लिखीं:

"कीरो ने मेरे सामने मेरा चरित्र इतने सटीक ढंग से उद्घाटित किया है कि मैं लज्जित हुआ हूं। मुझे उनके इतना सही होने की स्वीकारोक्ति तो नहीं करनी चाहिए, किन्तु ऐसा

करने को मैं विवश अनुभव कर रहा हूँ।"–मार्क ट्वेन।

हत्या के अभियुक्त का हाथ

डा० मेयर के हाथ की छाप मैंने निम्नलिखित शर्तों पर प्राप्त की। मेरी प्रथम न्यूयार्क यात्रा के अवसर पर 'न्यूयार्क वर्ल्ड' नामक पत्र के कुछ प्रतिनिधि मेरे पास आये और कहने लगे कि वे मेरी शक्तियों को परखना चाहते हैं बशर्ते कि मैं किसी भी व्यक्ति का नाम और स्थिति जाने बिना उसके हाथों की छाप को पढ़कर बताऊं। किसी तरह की न-नुच किये बिना मैंने यह परीक्षा स्वीकार कर ली और तुरन्त हम कार्यरत हो गए।

मैंने लगभग दर्जन-भर इन परीक्षा मामलों के हाथों की छाप देखकर व्यक्तियों के स्वभाव और भविष्य का वर्णन किया। तभी मेरे सम्मुख एक विचित्र से दीखने वाले हाथों की जोड़ी की छाप ला रखी गयी। तुरन्त इस तथ्य पर मेरा ध्यान गया कि बायें हाथ की ओर रेखाएं तो हर तरह से सामान्य थीं जबकि दायें की रेखाएं जितनी हो सकती थीं, उतनी असामान्य थीं। मैंने विशेष रूप से यह गौर किया कि मस्तिष्क रेखा बायें हाथ पर बीचो-बीच सीधी और स्पष्ट अंकित थी, जब कि दायें पर उसे देखकर लगता था मानों वह अपने स्थान से हटकर मुड़ गयी थी और अनामिका के आधार पर हृदय रेखा के निकट आ रही थी।

अपने सामने रखी इन छापों को देखकर मैंने निम्नलिखित बात कहकर बात समाप्त की, "इन हाथों को देखकर इसमें संदेह नही कि इस व्यक्ति ने अपना जीवन पूरी तरह सामान्य रूप में आरम्भ किया। यह अपने आरंभिक जीवन में एक धार्मिक व्यक्ति भी रह चुका हो सकता है।" मैंने सोचा, यह संभव था कि उसने अपना जीवन चर्च के रविवार के उपदेशक के रूप में शुरू किया हो और बाद में विज्ञान अथवा ओषधि में उसकी रुचि हो गई हो।

मैं उसके आगे वर्णन करता चला गया कि कैसे धीरे-धीरे उस व्यक्ति की प्रवृत्ति पूरी तरह इस इच्छा के दबाव में बदलती चली गई कि किसी भी कीमत पर धन अर्जित करने को तैयार हो गया।

संवाददाताओं ने मेरी टिप्पणियों को जिस प्रकार लिखा, वह इस तरह है, "इस व्यक्ति ने एक अपराध किया या बीस, प्रश्न यह नहीं है। वह जब अपने चवालीसवें वर्ष में प्रवेश करेगा तो उसे ढूंढ निकाला जाएगा, उस पर अभियोग चलेगा और मृत्युदण्ड मिलेगा। तब यह सिद्ध होगा कि वर्षों से वह अपनी मानसिकता और जिस किसी भी व्यवसाय में वह था, उसका उपयोग अपराध के द्वारा धन प्राप्ति में करता आ रहा है और अपने चवालीसवें वर्ष में यह व्यक्ति किसी सनसनीखेज मुकदमें से गुजरेगा, उसे मृत्युदंड दिया जाएगा और, तथापि हाथ यह बताते है कि वह अपनी इस नियति से भी बच निकलेगा और वर्षों तक जीवित रहेगा—किन्तु रहेगा कारावास में।"



प्लेट—13
दोषी-निर्णित हत्यारे का हाथ

जब अगली सुबह 'न्यूयार्क वर्ल्ड' में मेरी भेंटवार्ता प्रकाशित हुई तो उस पत्र ने यह रहस्योद्घाटन किया कि जिन हाथों की छाप का मैंने निरीक्षण किया था, वे शिकागो के डा॰ मेयर के थे। उन्हें उसी सप्ताह इस संदेह पर गिरफ्तार किया गया था कि उन्होंने जिन अमीर लोगों के भारी रकम के बीमे क़रवाये थे, उन्होंने विष देकर उनकी हत्या की थी।

जैसा कि अपेक्षित ही था, यह मुकद्दमा काफी सनसनी खेज था लेकिन अच्छे-से-अच्छे वकीलों के प्रयत्नों के बावजूद डा॰ मेयर को बिजली की कुर्सी के द्वारा प्राणदंड दिया गया। इस फैसले के विरुद्ध अपील दायर की गई। इसके बाद तीन सुनवाई हुई, और तीसरी के बाद उन्हें फिर प्राणदण्ड दिया गया और उनके बचाव की कोई उम्मीद न रही।

अपनी फांसी एक सप्ताह पूर्व उन्होंने प्रार्थना की कि मुझे उनसे मिलने की इजाजत दी जाए। मुझे सिंग-सिंग जेल की उनकी कोठरी में ले जाया गया। मैं उस भेंट को अजीवन भूल नहीं सकता।

उस पूरी तरह टूटे व्यक्ति ने हांफते हुए कहा—"कोरो, जो इण्टरव्यू आपने संवाददाताओं को दिया था, उसमें जो आपने आरंभिक जीवन के बारे में कहा था; वह सही था। लेकिन आपने यह भी कहा था कि यद्यपि मुझे फांसी की सजा होगी, फिर भी मैं वर्षों तक जीवित रहूंगा, किन्तु रहूंगा जेल में।

"मैं अपनी अपील में से तीसरी और अंतिम सुनवाई में भी हार गया हूं—कुछ ही दिनों में मेरे प्राण लिए जाएंगे। भगवान के लिए मुझे बताएं कि क्या आप अब भी अपनी बात पर डटे हैं—कि मैं फांसी से बच जाऊंगा ?"

यदि मैंने डा॰ मेयर के हाथ पर चवालीसवें वर्ष के आगे भी जीवन रेखा को स्पष्ट व साफ-साफ अंकित न भी देखा होता, तो भी मुझे भरोसा है कि मैंने उन्हें आशा बंधाने का प्रयत्न किया होता। मेरे लिए तो यह देखना भी यातना थी कि वह बदनसीब व्यक्ति मेरे सामने था, उसके हाथ मेरे हाथों को छू रहे थे और उसकी खोखली आंखों में भरोसे के बोल की भूख थी।

यद्यपि मैंने जो देखा उस पर विश्वास करना कठिन था, तथापि मैंने उनका ध्यान दिलाया कि उनके हाथ में जीवन रेखा कहीं भी टूटने का संकेत तक नहीं कर रही और उन्हें यह भरोसा दिलाकर कि अब भी कोई चमत्कार हो सकता है जिससे वे भयावह फांसी से बच जाएं, मैं वहां से चला आया।

दिन पर दिन बीते और तनाव कम करने की कोई खबर नहीं। मानसिक रूप से मैं भी कारावास के उस बंदी की ही तरह यातना सह रहा था। सांयकालीन समाचार पत्र भी आ गये, जिनमें अगली सुबह की फांसी के विवरण पूरी उत्सुकता के साथ छपे थे। मैंने भी एक अखबार खरीदा और एक-एक पंक्ति पढ़ डाली।

आधी रात आयी। अचानक 'विशेष संस्करण' की आवाजें लगाते अखबार बेचने वाले



प्लेट–14
आत्महत्या करने वाली महिला का हाथ

छोकरे गलियों में दौड़-भाग करने लगे। मैंने मुख-पृष्ठ ही पढ़ा, "मेयर को फांसी नहीं। उच्चतम न्यायालय को दण्ड व्यवस्था में कमी नजर आयी।" चमत्कार हो गया। दण्ड फांसी से बदलकर आजीवन कारावास में कर दिया गया। मेयर पन्द्रह वर्ष जीवित रहे। जब उनका अन्त आया तो वे जेल के अस्पताल में शान्तिपूर्ण मरे।

यदि अध्येता इस हाथ का निरीक्षण करें तो वे पायेंगे कि मस्तिष्क रेखा के विवरण मैंने दिये हैं, उस मस्तिष्क रेखा के जो पहले से देख-भाल की गई हत्या की प्रवृत्ति बतलाती है, उनसे इस हाथ के संकेत बहुत ज्यादा मिलते-जुलते हैं। अध्येताओं को इस ऊपर उठती मस्तिष्क रेखा जो हृदय रेखा के निकट जा रही है और एक सीधी मिली हुई मस्तिष्क व हृदय रेखा के बीच भ्रम नहीं होना चाहिए, जो आगे दी गई छापों में भी देखा जाएगा।

आत्महत्या दर्शाता हाथ

चित्र 14 उस स्त्री का हाथ दिखा रहा है जो आत्महत्या की घोर इच्छा से भरी हुई थी। इस मामले में मस्तिष्क रेखा तेजी से नीचे की ढलवां होती कलाई की ओर चन्द्र पर्वत के नीचे जाती देखी जा सकती है।

इस युवा स्त्री में आत्महत्या की यह वृत्ति अठारह साल की उम्र में पैदा हुई, हालांकि उसका घरबार अच्छा-भला था। उसने चार विभिन्न अवसरों पर अपनी इहलीला समाप्त करने की चेष्टा की, और अन्ततः अट्ठाईसवें वर्ष में प्रवेश करने पर वह अपने उद्देश्य में सफल हो ही गई। यह देखा जाए कि उसका हाथ लम्बा, संकरा, मनोवैज्ञानिक है जो खंड-1 अध्याय 7 में मेरे द्वारा दिये गए मनोवैज्ञानिक हाथ के मेरे विवरण के मुताबिक हैं।

यह ध्यान देने योग्य दिलचस्प बात है कि इस युवा स्त्री के हाथ में मध्यमा के आधार पर शनि मुद्रिका है जिसमें से एक रेखा निकलकर लगभग अट्ठाइस वर्ष की आयु में जीवन रेखा को काट रही है और लगभग इसी तिथि में सूर्य रेखा पर एक 'द्वीप' की भी शुरूआत हो रही है।

मस्तिष्क रेखा जब चन्द्र पर्वत के आधार के नीचे ढलुवां हो तो आत्महत्या की तीव्र इच्छा का यह अधिक पक्का प्रमाण चिन्ह है, न कि जब मस्तिष्क रेखा नीचे को चन्द्र पर्वत के सामने वक्र हो रही हो। बाद वाले मामले में व्यक्ति का सहज स्वभाव निराशा-भरा होता है जिसे केवल भाग्य के एक अधिक धक्के या निराशा की जरूरत है, जिसे अत्यधिक कल्पनाशील स्वभाव (चन्द्र पर ढलुवां मस्तिष्क रेखा) बढ़ा देता है और घातक कृत्य घट जाता है।

2. हाथों की स्पष्ट छाप कैसे लें

हाथ की अच्छी छाप लेने के जो साधन मैंने देखे हैं, उनमें सबसे अच्छी मुद्रणालय की स्याही, विशेष रूप से उसका वह प्रकार जो सब शहरों में उंगलियों की छाप लेने के लिए पुलिस द्वारा प्रयोग किया जाता है।

पाठक इस प्रकार की स्याही किसी भी उस प्रतिष्ठान से खरीद सकते हैं जो मुद्रणालय सामग्री बेचते हैं।

उसी प्रतिष्ठान से एक छोटा जिले टीन रोलर भी खरीदें, जो आमतौर पर एक धातु के फ्रेम में जड़ा होता है, जिसका हत्था लकड़ी का होता है।

इसके बाद, कुछ दस्ता सफेद कागज लें जिसका आकार सामान्य टंकन-पत्र का ही हो। मैं खासतौर से पुते या चिकने कागज की सिफारिश कर रहा हूं, क्योंकि बढ़िया छाप ऐसे ग्लेज्ड कागज पर ही आती है। जब आपके पास यह आवश्यक सामग्री जुट जाए तो किसी भी लोहे की दुकान पर जाएं और एक रबर-पोश भी खरीदें जो तकरीवन चौड़ाई या आधा इंच मोटा हो, जिसे 'नीलिंग मैट' (लचकदार पोश) कहते हैं, वह सबसे बेहतर रहेगा। यह सब लचकदार गद्दा जैसा बनाने के लिए जरूरी है ताकि महीन रेखाएं भी स्पष्ट अंकित हो सकें।

इस रबर पोश के ऊपर सफेद चिकने कागज का पन्ना रखें। कांच के एक टुकड़े पर स्याही लगाकर—उस पर जिलेटीन रोलर घुमायें ताकि स्याही रोलर पर अच्छी तरह लग जाए।

जब सब तैयार हो जाए तो रोलर को व्यक्ति के दोनों हाथों पर अच्छी तरह फिरायें, फिर दोनों हाथों को मजबूती से कागज पर दबा दें, हाथों को पलटकर ठलटा रखें, अंगूठे का सामने का हिस्सा धीरे-धीरे कलाई और हथेली के खोखल में दबाएं, कागज को उंगलियों से शुरू करके हाथों से उतार लें, हाथ की सभी रेखाओं की स्पष्ट छाप प्राप्त हो जाएगी।

शुरू में आपको उन लोगों के साथ कुछ दिक्कत आ सकती है जिनकी त्वचा खुश्क और अम्लीय है जिसके कारण बहुत बार छाप धब्बों से भरी हो सकती है। उन हाथों को पहले गर्म पानी से धुलवा लें, फिर उन्हें पूरी तरह खुश्क कर लें और फिर उन पर थोड़ा टेल्कम पाउडर छिड़क दें। यदि पाउडर न हो तो थोड़ा आटा या चूना भी चल जाएगा।

जब एक बार पुते हुए कागज पर मुद्रणालय स्याही से छाप तैयार हो गई, तो वह जल्दी

ही सूख जाएगी और व्यावहारिक रूप से तो हर तरह हमेशा के लिए बन जाएगी।

मैं यह अवश्य परामर्श दूंगा कि हाथों पर हस्ताक्षर भी हों और तिथि भी लिखी जाए ताकि वे कभी पहचानी जा सकें। मैं यह भी सुझाव दूंगा कि छाप वाले कागज के पीछे व्यक्ति की जन्म तिथि और जन्म स्थान भी लिख लिया जाए और किसी एक उंगली का रेखाचित्र भी बना लिया जाए, जिस पर नाखून भी दर्शाया गया हो और यह नोट कर लिया जाए कि नाखून का कटाव छोटा है या बड़ा।

कार्यालयों में फाइलें रखने के लिए अक्षर-क्रम से जो पद्धति है, संभालकर रख ली गई छापों को जल्दी ढूंढ निकालने में मदद के लिए वह भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

एक अन्य पद्धति भी है, किन्तु उसमें अधिक साधन व समय चाहिए। छाप को बहुत स्पष्ट बनाने की पद्धति है कि कागज को तेल में तर कर लें (इस स्थिति में कागज का पुता हुआ या चिकना ग्लेज्ड होना आवश्यक नहीं है) और हाथ पर मुद्रणालय स्याही लगाकर उस पर दबायें और पहले बताये गए तरीके से सब काम पूरा करें।

यह पद्धति उस स्थिति में अधिक उपयोगी है जब हाथ अत्यधिक शुष्क हों और छाप लेना अत्यधिक अम्लीय त्वचा के कारण कठिन सिद्ध हो रहा हो।

OOO

Narinder

डायमण्ड के चर्चित प्रकाशन

धार्मिक सीरीज

वाल्मीकि रामायण	10.00
रामायण	10.00
महाभारत	10.00
जैकारा शेरांवाली का	10.00
प्रभु मिलन का मार्ग	10.00
व्रत, पर्व और त्योहार	6.00
गरुड़ पुराण	10.00
ब्रह्मवैवर्त पुराण	10.00
ब्रह्माण्ड पुराण	10.00
अग्नि पुराण	10.00
स्कन्द पुराण	10.00
नारद पुराण	10.00
भविष्य पुराण	10.00
कूर्म पुराण	10.00
कल्कि पुराण	10.00
पद्म पुराण	10.00
वायु पुराण	10.00
हरिवंश पुराण	10.00
वराह पुराण	10.00
लिंग पुराण	10.00
ब्रह्म पुराण	10.00
श्री विष्णु पुराण	10.00
श्रीमद् भागवत पुराण	10.00
श्री देवी भागवत पुराण	10.00
श्री शिव पुराण	10.00
भविष्यपुराण	10.00
मार्कण्डेय पुराण	10.00
ब्रह्म पुराण	10.00
मत्स्य पुराण	10.00
मनुस्मृति	10.00
ऋग्वेद	10.00
सामवेद	10.00
यजुर्वेद	10.00
अथर्ववेद	10.00
श्रीमद् भगवद् गीता	12.00
शिरडी के साईं बाबा	5.00
भर्तृहरि शतक	10.00
चाणक्य सूत्र	10.00
कौटिल्य अर्थशास्त्र	10.00
चाणक्य नीति	10.00
शिव उपासना	10.00
दुर्गा उपासना	10.00
विष्णु उपासना	10.00
गणेश उपासना	10.00
उपनिषद तीन खण्ड	30.00
सिखों के दस गुरु	20.00
भारत के प्रमुख तीर्थ	10.00
विदुर नीति	10.00
घाघ और भड्डरी की कहावतें	10.00

भगवान श्री रजनीश

कबीरवाणी	
गुरुगोविन्द दोउ खड़े	10.00
हीरा पायो गांठ गठियाओ	10.00
मीरावाणी	
राम नाम रस पीजै	10.00
मेरो तो गिरिधर गोपाल	10.00

स्वास्थ्य

मधुमेह : कारण और इलाज	6.00
कैंसर : कारण और इलाज	6.00
ब्लड प्रैशर : कारण और इलाज	6.00
हृदय रोग (हार्ट अटैक)	6.00
मोटापा घटाएं, कद लम्बा करें	6.00
प्राकृतिक चिकित्सा	6.00
होम्योपैथिक गाइड	10.00
बेबी हैल्थ गाइड	6.00
घरेलू इलाज	10.00

राधाकृष्ण श्रीमाली

दशाफल दर्पण	10.00
नक्षत्र विज्ञान	10.00
प्रश्न ज्योतिष	10.00
यंत्र शक्ति	6.00
भारतीय ज्योतिष	6.00
ज्योतिष और रत्न	10.00
ज्योतिष सीखिये	6.00
अंक ज्योतिष	6 00
स्वप्न ज्योतिष	10.00
रमल विज्ञान	10.00
ग्रहगोचर	6.00
वृहद हस्त रेखा	10.00
साधना और सैक्स	6.00
मंत्र शक्ति से कामना सिद्धि	10.00
भृगु संहिता	20.00
तंत्र रहस्य	6.00
स्तोत्र शक्ति	6.00
मंत्र शक्ति से रोग निवारण	6.00
मंत्र शक्ति	10.00
तंत्र शक्ति	10.00

तकनीकी

डायमंड हिन्दी लर्निंग कोर्स	12.00
टेलीविजन सर्विसिंग गाइड	10.00
केलकुलेटर कम्पयूटर गाइड	10.00
कम्पयूटर सर्विसिंग	12.00
ट्रांजिस्टर सर्विसिंग	10.00
रिकार्ड प्लेयर सर्विसिंग	10.00
एयर कण्डीशन सर्विसिंग	10.00
कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग कोर्स	12.00
डायमण्ड कम्पलीट फोटोग्राफी	6.00
रेफ्रीजरेशन गाइड	10.00
टेपरिकार्डर सर्विसिंग	10.00
वीडियो सर्विसिंग	10.00
रेडियो सर्विसिंग	10.00
कार ड्राईविंग	10.00
स्कूटर/मोटर साइकल ड्राईविंग	10.00

जीवनोपयोगी

पहेलियां ही पहेलियां	10.00
इंदिरा जी ने कहा था	12.00
डायमंड नालिज गाइड	10.00
डायमंड ब्यूटी गाइड	12.00
सार्थक व सुखी बुढ़ापे की ओर	10.00
घरेलू बागवानी	6.00
सुमन संचय	10.00
फस्ट एड	6.00
पंचतंत्र	10.00
हितोपदेश	10.00
मजेदार व्यंजन	6.00
क्रोध और अहंकार से कैसे बचें	10.00

हिप्नोटिज्म 6.00
शराब, सिगरेट और बीड़ी कैसे छोड़ें 10.00
स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज 20.00
आपका व्यक्तित्व-ऋषि गौड़ 5.00
नामकोश-ऋषिगौड 6.00

स्वेट माडंन

चिन्ता छोड़ो सुख से जियो 6.00
हंसते-हंसते कैसे ज़ियें 6.00
आप क्या नहीं कर सकते 6.00
सफलता का रहस्य 5.00

जीवनी माला

राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी 6.00
वीर सावरकर 10.00
छत्रपति शिवाजी 10.00
भारत के अमर क्रान्तिकारी 10.00
भगतसिंह 10.00
चन्द्रशेखर आजाद 10.00
रामप्रसाद बिस्मिल 10.00

सतीश गोयल

यौन रोग कारण, निवारण 10.00
मैडिकल सैक्स गाइड 10.00
वृहद् वात्सायन काम सूत्र 10.00
सैक्स और पति पत्नी 10.00
सैक्स शक्ति कैसे बढ़ायें 10.00
सैक्स और स्त्री पुरुष 10.00

हास्य कविता सीरीज

1984 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं 6.00
1985 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं 6.00
1986 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं 10.00
1987 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग रचनाएं 10.00

फक्कड़ मुरादाबादी

फक्कड़ की फलझड़ियां 5.00

अशोक चक्रधर

भोले भाले 6.00

काका हाथरसी

काका की फुलझड़ियां 6.00
काका की चौपाल 6.00
काका काकी की नोक झोंक 6.00
मीठी-मीठी हँसाइयाँ 6.00
काका के चुटकले 5.00
काका की विशिष्ट रचनायें 6.00
काका के कारतूस 5.00
काका का दरबार 6.00
हसंत बसंत 5.00
जय बोलो बेईमान की 4.00
काका की फिलमी पैरोडियां 2.00

हुल्लड़ मुरादाबादी

हुल्लड़ के कहकहे 5.00
हुल्लड़ के जोक्स 5.00
हुल्लड़ मुरादाबादी की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं 5.00

प्रेम किशोर पटाखा

पटाखे ही पटाखे 5.00

जोक्स सीरीज

चुटकुले ही चुटकले 10.00
पति-पत्नी नोक-झोंक 4.00
हुल्लड़ के जोक्स 5.00
टॉप जोक्स 6.00
माडर्न जोक्स 6.00
फिल्मी जोक्स 6.00



डायमंड पाकेट बुक्स

विश्व विख्यात
भविष्य वक्ता

-कीरो-

हस्तरेखाएँ